

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186155

UNIVERSAL
LIBRARY

Call No. H 392 / S 25 V Accession No. H 2,586

Author सन्तति सेवा समिति !

Title आनन्द निकेतन के लिए आपत्ती कुञ्जी

This book should be returned on or before the date last marked below.

U. P. Government Awards Prize

संयुक्त शिक्षा संचालक उत्तर प्रदेश पत्रांक जी ३८४।१५।२५।५३-५९-६०

दिनांक १४-४-५९

‘ सुन्दरता जीवन का अधिकार है ’

स्वास्थ्य और सौन्दर्य

सच्चा सौन्दर्य अच्छे स्वास्थ्य में ही है। बिना उत्तम स्वास्थ्य के अच्छे नख शिख की ब्रियें भी कुरूप मालूम होती हैं। इस सत्य को पाश्चात्य महिलाओं ने भली भांति ग्रहण कर लिया है और वह अपने स्वास्थ्य को उत्तम एवं उन्नत करने के लिए भांति भांतिसे प्रयत्न व्यायाम और नियमित भोजन आदि से करती रहती हैं। भारतीय महिलाओं को भी उनके मार्गदर्शन करने के लिए

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा की भू० पू० आचार्या कुमारी
सुशीला आत्मारामजी पण्डित

ने एक सुन्दर उत्कृष्ट रचना

नैसर्गिक नारी सौन्दर्य

के रूपमें प्रकाशित की है जिसकी प्रस्तावना संसद सदस्य श्रीमती डाक्टर सुशीला नयर ने लिखी है। वह लिखती हैं “ मैंने दो शब्द लिखने के लिए पुस्तक के पन्ने उलटनेका विचार किया था, मगर पुस्तक इतनी रोचक लगी कि सब पढ़ गयी और एक अनुभवी डाक्टर होते हुए भी, मुझे उसमें से उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई मुझे विश्वास है कि भारत की पढ़ी लिखी ब्रियां तो इससे लाभ उठावेंगीही-मगर वे अनपढ़ बहिनों तक भी इस पुस्तकका संदेश पहुंचायेगीं। स्वतन्त्र भारत सुन्दर और सुखी भारत बने तभी हमारी स्वतन्त्रता संपूर्ण बनेगी ” यू. पी. गवर्नमेन्ट द्वारा यह पुरस्कृत की गई है। संयुक्त शिक्षा संचालय उत्तर प्रदेश लिखते हैं कि “ इस प्रकारकी पुस्तकें हिन्दी में कम उपलब्ध हैं और जो अंग्रेजी में प्राप्त भी हैं उनको छात्राएं अच्छी तरह समझ नहीं पाती हैं अतः यह पुस्तकको रिफेरन्स बुक Reference Book के रूप में प्रयोग करने तथा पुस्तकालय के लिए खरीदी जा सकती है। ” पुस्तक का मूल्य रु. ३-५० न.पैसे है। डाक व्ययादि १) पृथक्

प्राप्ति स्थान :— जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा.

विषयसूची	पृष्ठ	CONTENTS	PAGE
सन्तति सेवा में आधुनिक विकास	१	Recent developments in Family Service	1
प्रथम उत्पन्न पुत्रको कैसे रखना है	२६	How to Have a First-born Son for Health	26
बच्चों के स्वस्थ के लिए उचित प्रसार	३१	Proper Spacing of Children	31
उत्तम मातापिता समाज	५०	Good Parents Group	50
जनसंख्या निबन्ध प्रतियोगिता		Population Essay Contest	
पारिवारिक परामर्श दाताओं	५६	Directory of Family Consultants	66
तथा		And	
आरोग्य केन्द्रोंकी निर्देशिका	६६	Health Centres	66
आरोग्य केन्द्र	६८	Health Centres	68
उत्तम मातापिता समाज	६९	Good Parents Group	69
प्रतियोगिता के विजयी	७०	Winners of Contest	70

Checked 1969 —

Sanctioned for Purchase for the COLLEGE LIBRARIES

Director of Public Instruction

Chandigarh,

Memo No. 52-3/ 142-5 of Bc 2645 Dated 23-1-59

Director of Education Bombay State Poona

Circular No. S 102/563-H dated 20-4-59

Curator of Libraries Bombay States

Circular No. B 14-1-330 : 704 of 59-60 Dated 30-4-1959

"The Publication "NAISARGIK NARI SAUNDARYA " i. e. (NATURAL FEMININE BEAUTY) is recommended for the College Libraries in the State The publication is profusely illustrated with Photo Blocks explains the ways and means of preserving and improving health grace and poise by everybody especially women It deals with different aspects of health and beauty and tenders practical and simple advice in this regard "

"The book deals with the subject Natural Physical Beauty of a Woman and how to keep it. Suitable Yogic exercises and Asanas are explained and illustrated and allied topics such as food clothing, sleep etc fully dealt with. The book is brought to the notice of Secondary Schools, Colleges, Training Institutions and Gymnasias in the State "

" The book gives 32 illustration photos of the simple exercises and Yoga Asanas and also deals with various subjects such as food, clothes motherhood, family planning mental health, sleep fine arts and scouting. "

Price Rs. 3-50 Postage + Regn Re. 1-0 to be had of

JAIDEVA BROS.; BARODA.

YOUR KEYS TO A HAPPY HOME



आनन्द निकेतन के लिए आपकी कुञ्जी



सन्तति सेवा में आधुनिक विकास

दरिद्रता दीनता को बढ़ाती है... तृतीय और चतुर्थ वंश तक दरिद्रता दीनता को बढ़ाती है। यह निन्दाशील भाग्यपरायण पूर्व की अपेक्षा पश्चिम में उत्पन्न होती है। यह एक प्रसिद्ध पाश्चात्य देश के उच्च कर्मचारियों के अन्तिम अनुमान की चर्चा करती है। उन्होंने आधुनिक अन्वेषणों और पूरी सामग्री के मध्य में दरिद्रता की समस्या को हल करने के प्रयत्न में दूसरी सम्पत्ति व्यय की। उनका अनुमान है कि दरिद्रता दीनता को बढ़ाती है— दुराचारी भौतिकवाद द्वारा एक शक्तिशाली देश के नाश किए हुए हिस्से की धार्मिक और नैतिक उपेक्षा की साक्षी हैं।

दरिद्रता दीनता को बढ़ाती है। ऐसे सब पदार्थों में बुराई देखने के सिद्धान्त का भाग्यपरायण पापी है। जब इसे संस्कृति सत्य बनाती है तब दरिद्रता दीनता को केवल बढ़ाती है। मातृत्व-पितृत्व की शिक्षा की उपेक्षा की जाती है। अभी विद्यालयों में धर्म, सदाचार के सिद्धान्त, आचार शास्त्र की श्रेणियाँ कदाचित् ही पायी जाती हैं। वास्तव में चरित्र-सुधार और प्रौढ़ जीवन की श्रेणियाँ कदाचित् ही हैं।

अनुत्तरदायित्व सहज क्षमा किया जाता है। अयोग्य माता पिताओं को स्थान दिया जाता है। अपराध, व्यभिचार, विवाह विच्छेद बिना विचार के माने जाते हैं तब दरिद्रता दीनता की वृद्धि करती है।

RECENT DEVELOPMENTS IN

FAMILY SERVICE

POVERTY BEGETS POVERTY...

Poverty begets poverty begets poverty unto the third and fourth generation. This cynical fatalism is born in the West rather than the East. It represents the final conclusion of the high officials of a leading Western nation. They spent another fortune recently investigating and trying to solve the problem of poverty in the midst of plenty. Their conclusion—that poverty begets poverty... is evidence of spiritual and moral indifference on the part of a powerful nation spoiled by vicious materialism.

Poverty begets poverty... such pessimistic fatalism is sinful : **Poverty begets poverty only when the Culture makes it true.** Education for parenthood is neglected. Even courses in the virtues, courses in principles of morality, and courses in ethics are seldom found in the schools. Courses in character development and mature living are rare indeed.

Irresponsibility is let off easy. Illegitimate parents are accommodated. Delinquency, adultery, and divorce are regarded lightly. Then poverty begets poverty.

बच्चों के स्वास्थ्य के लिए उचितस्थान सङ्कुचित है ।
पैत्रिक कमियाँ धीरे से व्यवहार की जाती हैं । मदिरा,
उन्माद का प्रचार विस्तारपूर्वक फैला है तब दरिद्रता दीनता
की वृद्धि करती है ।

सन्तति विरोध का माता-पिता की शक्ति के अनुसार
उपेक्षा के साथ व्यवहार किया जाता है । प्रसिद्ध नागरिक
बृहत् प्रजा वृद्धि के अपने कर्तव्य से भागते हैं । दरिद्र व्यक्ति
दूसरे वंश की वृद्धि के बोझ के विस्तार से भारयुक्त हैं । उनके
यह भारी कष्टमय हैं । अप्रवीणता को धनरूप में सहायता
प्रदान की जाती है इसलिए दरिद्रता दीनता की वृद्धि करती है ।

सन्तति सेवा में आधुनिक विकास की यह परीक्षा
दरिद्रता के दुष्टवृत्त को नाश करने की क्षमता की कुछ समस्या
को प्रदर्शित करती है । यह अध्ययन भी जीवन के समभाव
वृद्धि का सफलपथ, धार्मिक, मदाचार और स्वस्थ, आर्थिक
का भी वर्णन करता है ।

भौतिकवादने बीसवीं शताब्दी में एक आश्चर्यजनक
विस्तार के साथ उन्नति किया है । हमलोगों का भौतिक हित
और अपने चरित्र और आत्माको उत्साहित करने के लिए
कृतज्ञ होना चाहिए । हमलोग मानव-विशेषता की ओर
अपना ध्यान बढ़ावें जो सबसे अधिक उत्तम माता-पिता,
एक मातृत्व-पितृत्व का उच्च स्तर, शिष्ट बच्चे, एक उत्तम
परिवार का यश, और एक गृहजीवन के दृष्टान्त योग्य स्पष्ट
आवश्यक है ।

मातृ-पितृत्वके लिए शिक्षा

कुछ आधुनिक देश विद्यालयों में मातृत्व-पितृत्वकी
थोड़ी शिक्षा आवश्यक शिक्षा कालके अन्त में नियुक्त किए
हैं । यह तरुण लोगों को उचित तथ्यों की प्राप्ति के लिए
दूसरा अवसर प्रदान करता है । बच्चे अपने माता-पिता,
अपने गृहजीवन, और अन्य मार्गों से मातृत्व-पितृत्व को सीधे
सीख लेते हैं । अब कुछ लोग विद्यालयों में शालीय
विषय-स्तर के साथ अपने ज्ञान की जाँच के लिए
सौभाग्यशाली हैं ।

Proper spacing of children for health is limited. Hereditary defects are dealt with slowly. Advertising of intoxicating liquors is widespread. Then poverty begets poverty.

Family planning according to the ability of parents is treated with indifference. Leading citizens shirk their duty of raising large families. The poor are loaded with the bulk of the burden of raising the next generation. Their homes are taxed heavily. Incompetence is subsidized. Then for sure poverty begets poverty.

This examination of recent developments in family service shows some of the problems that must be faced to break the vicious circle of poverty. The study also describes successful ways to raise the level of living, spiritual, ethical, and healthful as well as economic.

MATERIALISM has developed to a marvelous extent in the twentieth century. Let us be thankful for material well-being and use it to strengthen our character and spirit. Let us increase our attention to human values that matter most... good parents, a high standard of parenthood, well bred children, a fine family reputation, and an exemplary level of home life.

Education for parenthood

Some modern nations provide a little education for parenthood in the schools toward the end of the compulsory education period. This gives young people a second chance to get the facts right. Children learn early about parenthood from their parents, their homelife, and in other ways. Now some are fortunate enough to test their knowledge with academic standards in the schools.

बहुत बच्चे मातृत्व-पितृत्व की उचित शिक्षा से वञ्चित हो जाते हैं। कभी कभी माता-पिता उपेक्षा करते हैं अथवा मौलिक सिद्धान्तों का मिथ्या वर्णन करते हैं। द्वितीय सूचना का आदि कारण प्रायः अशुद्ध और हानियुक्त हैं। इन अशुद्ध विचारों की हानि दृढ़ रहती है और विवाह को नष्ट करदेती है।

मौलिक शिक्षा को देना ठीक है, यह तर्क लोगों की मातृत्व-पितृत्व के एक उच्च स्तर के लिए तैयार करता है। अन्यथा यह कोई दूसरा वरन् मौलिक वस्तु है।

सन्तति-निरोध

मानवता की कष्टमय ध्वनि माता-पिता की योग्यता के अनुसार सन्तति-निरोध है। कष्ट में जन्मे-हुए भी वे नहीं जन्मे हुए दोनों लक्ष्यों में विस्तार करता है। माता-पिता उत्तम स्वास्थ्य, ज्ञान, चरित्र व उत्पादन शक्ति के साथ बृहद्सन्तति की वृद्धि के अपने कर्तव्य से बारंबार भागते हैं। दूतों के पास जैसे वे अच्छी तरह व्यय को बढ़ा सकते हैं, बहुत बच्चे हैं तब वे बच्चे के बाद बच्चे रखने का अधिकार रखते हैं। इन दोनों में से एक घटना का यह परिणाम होता है कि सन्तति निरोध उत्तम माता-पिता के लिए वृद्धि-प्रलोभन के द्वारा आगे बढ़ती जायगी जहाँ वे बृहत् सन्ततिके व्ययको सहन करनेके लिए इच्छुक होंगे।

उत्तम माता-पिता केवल अर्द्ध समस्या है। द्वितीय अर्द्ध माता-पिता को संकुचित योग्यता के साथ सहायतार्थ प्रयोजन है जिससे वे अपने कर्तव्य और गृहजीवन के एक दृष्टान्त योग्य सुगम विजय की उन्नति करते हैं।

आधुनिक काल में सन्तति-निरोध के लिए औषधि-चिकित्साकी निष्कलता पर विजय प्राप्त करनेके लिए एक महान् सहायता है। द्वितीय औषधिसम्बन्धी व्यवहारकी उन्नति है जहाँ सम्भवतः बच्चोंका जन्म शल्यक्रिया द्वारा कराया जाता है।

Too many children still miss out on proper education for parenthood. Sometimes parents neglect or misrepresent fundamental principles. Other early sources of information often are wrong and harmful. The harm of these wrong ideas may persist and spoil a marriage.

Basic Education is all right provided it prepares young people for a high standard of parenthood. Otherwise it is anything else but basic.

Family Planning

The crying need of humanity is family planning according to the ability of parents. The need extends in both directions to the unborn as well as the born. Parents with good health, intelligence, and character as well as earning power frequently shirk their duty of raising a large family. Others have as many children as they can afford to raise well and then keep right on having child after child. In either case it follows that family planning will be advanced by increasing incentives for the best parents to where they will be willing and able to afford large families.

The best parents are only half of the problem. The other half is the need for helping parents with limited ability so that they improve their performance and achieve an exemplary level of home life.

One great contribution to family planning in modern times is the overcoming of sterility by medical treatment. Another is the advancement of medical practice to where repeated Caesarean operations are possible.

उत्तम माता-पिता सर्वत्र इतिहास में अपने बच्चों के लिए योजना बनाते और तैयारी करते हैं। जनसंख्या में ऐसे माता पिता की अनुरूपता सुगम जीवन पर एक अधिक अनुकूल प्रभाव डालती है। आदर्शों के साथ तर्जुन माता-पिता को ढाढ़स देने व सहायता के द्वारा शीघ्र उन्नति की जासकती है-सन्ततिसेवा के लिए एक महान् अवसर है।

परिवार की आकृति

एक परिवारमें कमसे कम चार बच्चे आवश्यक हैं और प्रत्येक बच्चेको एक भाई और एक बहिन हो। परिवार सीमाकी रक्षा इस तथ्य का सामना करती है। आगे चारमें एक अवसरहै कि प्रथम तीन बच्चे उसी जाति के चाहे सभी बच्चे अथवा लड़कियाँ होनी चाहिएं। उस समय तो पाँच अथवा अधिक बच्चे प्रत्येक बच्चेके लिए एक भाई और एक बहिन हो, आवश्यक है।

आधुनिक वर्षों में छोटे परिवारोंकी संख्या बढ रही हैं। न भाई अथवा न बहिन की समस्या बच्चों अथवा उनके माता-पिताके द्वारा प्रायः सामना करनी चाहिए। इस समस्या की विशेषता एक विश्वसनीय और साधारण मार्ग के चुनाव द्वारा एक पुत्र का होना है।

परिवार की आकृति और ऐसे आशीर्वाद जैसे स्वास्थ्य, ज्ञान, और कुशल अल्पव्ययीके परस्पर सम्बन्धके बीच में अध्ययन की आवश्यकता है। अध्ययन सूचित करता है कि परिवार की आकृति का मौलिक अभिप्राय है।

प्रथम उत्पन्न पुत्र

चुनाव द्वारा प्रथम पुत्रोत्पन्नका होना एक विश्वसनीय और साधारण मार्गके आविष्कार मानवताके लिए महान् आशीर्वाद सिद्ध करेगा। मातृत्व-पितृत्वका स्तर बढ़ेगा, जनसंख्याके साधनकी भ्रान्तिका क्रम बिगड़ेगा और सुगमजीवन सर्वत्र भूमण्डल में उन्नति करेगा।

'The best parents have planned and provided for their children throughout all history. The proportion of such parents in the population has a most favorable influence on the level of living. Rapid progress can be made by encouraging and helping young parents with ideals... a great opportunity for family service.'

Family size

A minimum of at least four children is necessary in a family for each child to have a brother and a sister. Advocates of family limitation should face this fact. Furthermore there is one chance in four that the first three children will be the same sex, either all boys or all girls. Then five or more children are necessary for each child to have a brother and a sister.

The number of small families has been increasing in recent years. The problem of no brother or no sister must often be faced by children and their parents. This problem accentuates the value of a reliable and simple way to have a son by choice.

Studies are needed of the correlation between family size and such blessings as health, intelligence, and economic well-being. Studies made so far indicate that family size has fundamental significance.

First-born son

The discovery of a reliable and simple way to have a first-born son by choice will prove one of the greatest blessings to humanity. The standard of parenthood will rise, population-resources fallacies will be shattered, and the level of living will improve throughout the world.

यह पछतावा करने योग्य है कि इतने कम धन और युक्तिसे प्रथम पुत्रोत्पन्नको कैसे रखा जाय, के अन्वेषणके लिए लवलीन हैं। कृत्रिम गर्भनिरोधके अन्वेषणमें जो बड़ी राशिव्यय होती है उसका समानता में व्यय कम है। जो महान् आविष्कार लाया है उस एकाग्रता के साथ उत्साह की अपेक्षा प्रथम उत्पन्न पुत्र के विचार के साथ वैज्ञानिक अधिकांश कीड़ा करते हुए जान पड़ते हैं।

प्रथम उत्पन्न पुत्रको कैसे रखा जाय के बारे में अन्वेषणकी ओर आधुनिक स्थिति परिवार सेवाकी परिमित करतूतको लम्बे मार्गमें व्याख्या करता है। हमलोग इस स्थिति की उन्नति की आशा करें।

बच्चों के स्वास्थ्यके लिए उचित प्रसार

बच्चों के स्वास्थ्य के लिए उचित प्रसार कृत्रिम गर्भ निरोधपर कभी नहीं निर्भरथा। बच्चोंके स्वास्थ्यके लिए प्राकृतिक रीतिके स्थान समझे जाते हैं और सर्वत्र इतिहासमें दशलाख उत्तम माता-पिता द्वारा व्यवहार होते हैं। कुछ प्राकृतिक रीतियाँ ऐसी स्पष्ट और साधारण हैं कि बहुत माता-पिता उनको स्वेच्छाचारिता पूर्वक प्रकट करते हैं। इसपर भी एक आदर्श कृत्रिम गर्भ-निरोधका अन्वेषणके साथ पूर्वाधिकारका होना प्रकट होता है यथा मानव जाति पतित हो गयी है जहाँ स्वाभाविक पद्धति प्रश्न के बाहर है।

आधुनिक जन प्रायः कृत्रिम गर्भ-निरोध के लिए स्वाभाविक पद्धतियोंका बहुत कम ध्यान देते हैं। नए कृत्रिम गर्भ निरोधके अन्वेषणके लिए पहिलेसे लम्बी सूचीमें बढ़ानेके लिए धन व्यय किया जा रहा है। इस द्रव्य में अधिक और अन्वेषण-कौशल एक विश्वसनीय और साधारण मार्ग चुनाव द्वारा बच्चेको रखनेके लिए लगाया जाना चाहिए। यह अन्वेषण परिवारका ध्यान,

It is regrettable that so little money and skill are being devoted to research on how to have a first-born son. Expenditures are small in contrast with the large sums spent on research in contraceptives. Scientists seem almost to be toying with the idea of a first-born son rather than concentrating with the zeal that has brought great discoveries.

The modern attitude toward discovering how to have a first-born son goes a long way in explaining the limited achievements of family service. Let us hope this attitude will improve.

Proper spacing of children for health

Proper spacing of children for health never was dependent on contraceptives. Natural methods of spacing children for health have been understood and practiced by millions of good parents throughout all history. Some natural methods are so obvious and simple that many parents discover them independently. Yet today there seems to be a preoccupation with discovering an ideal contraceptive as though humanity had degenerated to where natural methods are out of the question.

Modernists too often minimize natural methods in concentrating on contraceptives. Fortunes are being spent on research to discover new contraceptives to add to an already long list. Much of this money and research skill might well be devoted to discovering a reliable and simple

जीवनकी उन्नति, शेष जनसंख्या और कृत्रिम गर्भ-निरोध की अपेक्षा अधिक तेजीसे द्रव्यसाधनमें वृद्धि करेगा ।

अधिकारी वर्ग कृत्रिम गर्भ-निरोधके विरुद्धमें भारीदण्ड और कारावासके साथ विधान बनाते हैं । बहुत से ऐसे विधान, विधान-ग्रन्थमें रह जाते हैं । संघटन जो गर्भ-निरोधका विरोध करताहै महान् शक्ति और प्रभावका प्रबन्ध करताहै । उत्तम माता-पिताको सौजन्यता के लिए धन्यवाद है जो अपने बच्चोंके स्वास्थ्य और उनक सुखके लिए प्रसारको चालू रखते हैं । आधुनिक गर्भ निरोध के आविष्कार होनेके शताब्दी पूर्व ही उन्होंने सदैव ऐसा किया ।

प्रथम स्थानमें बच्चोंकी समस्या रजोविरतिके बाद किमीकी नहीं होता है । द्वितीय जो स्वाभाविक उर्वरा नहींहैं उन माता-पिताके लिए यह कभी नहीं होताहै; किन्तु उनकी समस्या बांझपन को प्रभावामिमूत करती है । तृतीय, जिनके अच्छे उर्वरापन के कारण स्वाभाविक परिणाम है, उन माता-पिताको कभी नहीं होती है ।

स्वास्थ्यके लिए बच्चोंके प्रसारकी समस्या बच्चक जन्मके बाद प्रकट होताहै । उससमय बहुतसे माता-पिता सन्तोषजनक स्वाभाविक पद्धतियाँ पातेहैं, यथा नैतिक निग्रह परिमित संयम, स्वास्थ्य, व्यवस्थापन । दूसरे जो कृत्रिम गर्भ-निरोध में विश्वास करतहैं सामान्यतः स्वीकार योग्य आधुनिक कृत्रिम गर्भ-निरोध में पाते हैं ।

प्रत्येक माता-पिता को जीवन में विभिन्न काल में स्वास्थ्य के लिए बच्चेके प्रसारकी पद्धतियोंपर विचार करना होताहै । इसिलिए सभी सन्तोषजनक पद्धतियोंकी जानकारी की आवश्यकता है । परिस्थितियोंके साथ इतने अधिक उचित विविध प्रसारके लिए वर्षोंकी संख्या जो विशेष परिवार के विचारार्थ निर्देश के साथ अच्छी तरह निर्णय

way to have a son by choice. This discovery will increase attention to family service, raise the level of living, and balance population and resources much faster than contraceptives.

Authoritarians enact laws with heavy fines and imprisonment against contraceptives. Many such laws remain on the statute books. Organizations that oppose contraceptives wield great power and influence. Thank goodness the best parents continue to space their children properly for health and provide for their well-being. They always did centuries before modern contraceptives were invented.

In the first place the problem of spacing children does not exist for anybody after menopause. Second, it never exists for parents that are naturally infertile. Rather their problem is the overcoming of fertility. Third, it never exists for parents for whom proper spacing is the natural result of their well balanced fertility.

The problem of spacing children for health occurs only after childbirth. At that time many parents find natural methods satisfactory, such as moral restraint, limited abstinence, hygiene, and rhythmic regulation. Others that believe in contraceptives usually find modern contraceptives acceptable.

Various methods of spacing children for health become advisable at different times in the life of every parent. Therefore knowledge is needed of all satisfactory methods. The number of years for proper spacing varies so much with circum-

किया जा सकता है। साधारणतः अच्छे माता पिताको एक बच्चे के परिवार की स स्या और योग्यताको सिद्ध करनेके लिए प्रथम और द्वितीय बच्चेके बीचमें कुछ वर्षोंका अन्तर लगाना चाहिए।

बच्चोंका उचित रीति से प्रसार को असफलता स्वास्थ्य के लिए संभावित कष्ट को प्रकट करता है। असफलता स्पष्ट और प्रायः गंभीर कष्ट है जो परिवार सेवाके लिए एक अधिक बहुमूल्य पथ प्रदर्शन है।

बच्चेके प्रसारकी योग्य और प्रचलित लाभदायक प्राकृतिक पद्धतियाँ जगत् की नैतिक और न्यायपूर्ण उदाहरण हैं। परिवार सेवा की इस तथ्य पर जोर देने और गृहमें सीखने की आवश्यकता है। स्वास्थ्यके लिए उचित बच्चोंका प्रसार सम्पूर्ण मानवजातिमें प्रबल हो सकता है और पारिवारिक जीवन में अधिक उन्नति लाता है।

वर्णसङ्करता

उत्तम माता-पिता को एक बच्चे का होना सब से महान् आशीर्वाद है। वर्णसङ्कर माता-पिताका स्थान, आधुनिक जातियोंमें दश लाखकी संख्या तक जाता है, एक शोकजनक पाप है।

वर्णसङ्करता कम की जा सकती है। प्रथम, महत्वहीन, आचारनीति, व्यभिचार, परस्त्रीगमन, के बीच में भेद बतलाओ। जोर दो कि व्यभिचार और परस्त्री गमन पाप हैं। द्वितीय, यह निर्देश करो कि प्रायः बीस असफलताओं में सर्वोत्तम कृत्रिम गर्भ निरोध एक अवसर है। तृतीय, उत्तरदायी माता-पिता की वर्णसङ्करता उनके बुरे आचरण के लिए रोको और उनपर प्रतिबन्ध रखो।

tances that each interval can best be decided with reference to the particular family being considered. In general only a few years should be spaced between the first child and the second child to prove ability as good parents and avoid risks of one child-family problems.

Failure to space children properly for health indicates potential trouble. The failure is so obvious and so often precedes serious trouble that it is a most valuable guide for family service.

The adequacy and universal availability of natural methods of spacing children for health is an example of morality and justice in creation. Family service needs to emphasize this fact and get it home. Proper spacing of children for health can prevail in all humanity and bring great improvements in family life.

Illegitimacy

Good parents are the greatest blessing a child can have. The accommodation of illegitimate parents, so that their numbers run into the millions in some modern nations, is correspondingly a tragic evil.

Illegitimacy can be reduced. First, teach the differences between ethical petting, fornication, and adultery. Emphasize that fornication and adultery are sin. Second, point out that even the best contraceptives have one chance in twenty of failure. Third, hold illegitimate parents accountable for their misbehavior and put them on probation.

लघु आचारनीति महिलाओं के लिए वश करना कठिन है क्योंकि वे कभी कभी चित्तवृत्तिके साथ मूर्छित हो जाती हैं। पुरुषों के लिए भी नैतिक उत्तरदायित्वका पतन होता है और वह शायद वर्णसङ्करता, विशेषतया जहाँ संस्कृति सुगमतासे छोड़देती है, की ओर असावधान हो सकता है। मूर्छाकी सम्भावना स्वीकारकी जाती है, तथापि वर्णसङ्करताकी निर्बलता पर जोर दी जा सकती है। विवाह के उद्देश्य अथवा कर के लिए एक व्यक्ति के वर्णसङ्कर गर्भ को रोकने का सुगम मार्ग है। वर्णसङ्करता मानव संस्कृति के प्रचलित नमूनेका एक हिस्सा है। मातृत्व-पितृत्व उच्चस्तरके लिए जनसंख्या और वर्णसङ्करता को दबाने के हेतु प्रबल उद्योग की सुविधा दी जाती है।

उच्च परिमाणकी लज्जाजनक वर्णसङ्करता मातृत्व-पितृत्वकी उचित शिक्षाकी उपेक्षासे अधिक है; लघुनैतिकता, परस्त्रीगमन, व्यभिचारके भेद का अपर्याप्त स्पष्टीकरण; एक वर्णसङ्कर सन्तानका होना सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण पाप पर जोर देनेकी असफलता; और एक मातृत्व पितृत्व की उच्च स्तरके लिए प्रतिष्ठा को न्यून करता है।

ज्यों ही मानववर्ग उपयोगी कार्यवाही करनेका निर्णय करें तो वर्णसङ्कर सन्तानोंकी संख्याका भय कम हो जायगा। प्रथम, तरुण लोगोंको उत्तम माता-पिताके महान् गुण और मातृत्व-पितृत्वकी शिक्षाके लिए उचित आचरणके गुणकी उन्नति हो। द्वितीय, वर्णसङ्कर माता-पिताके लिए जहाँ तक सम्भव हो और उनके बच्चोंकी रक्षाका उत्तरदायित्व वैधानिक रूपसे घोषित हो। तृतीय, प्रत्येक वर्णसङ्करके लिए कुछ दण्ड होना चाहिए। अनाथालयोंके सहायतार्थ संचित धनका कमसे कम एक छोटा आभूषण चाहिए। चौथा, दो वर्णसङ्कर गर्भोंके लिए दोषी व्यक्तियोंको कठोर दण्ड देना चाहिए। जब वे पूर्णत्याग

Ethical petting is difficult for females to control because they sometimes faint with emotion. The moral responsibility falls on the male and he may be careless about illegitimacy, especially where the Culture lets him off easy. The possibility of fainting is admitted; still the fainting explanation of illegitimacy may perhaps be overemphasized. Illegitimate pregnancy is a common way to catch a person for purposes of marriage or blackmail. Illegitimacy is part of a familiar pattern of human Culture: the struggle for population overwhelms considerations of a high standard of parenthood and illegitimacy is accommodated.

Disgracefully high rates of illegitimacy may be due largely to neglect of proper education for parenthood; inadequate explanation of the differences between ethical petting, fornication, and adultery; failure to emphasize the most tragic misfortunes of being a bastard; and lack of reverence for a high standard of parenthood.

The appalling number of bastards will be reduced as soon as humanity decides to take effective action. First, improve education for parenthood to give young people a deep appreciation of right behavior and the supreme value of good parents. Second, have illegitimate parents declared legally married where possible and hold them responsible for the care of their children. Third, provide some punishment for every illegitimate parent. There should at least be

धारण करें तो ऐसे मामलोंमें अस्थायी बन्धत्व होनी चाहिये ।

विवाहोच्छेद

विवाहोच्छेद कुछ आधुनिक जातियोंमें अधिक अपमान माना जाता है । परन्तु पुनरुक्ति करनेवालोंके कारणसे सत्य रूप मिथ्या कथन करता है । एक पुरुष विवाह और अनेकों बार विवाहोच्छेद कर सकता है । ऐसे पुनरुक्ति करनेवाले प्रत्येक छः विवाहों के लिए एक विवाहोच्छेद का अपवाद समझा जाता है । सत्य रूप विवाहोंके बहुमतको दबानेवाली तथ्यताके साथ सामना करता है ।

विवाहोच्छेदका परिमाण मातृत्व-पितृत्वकी शिक्षा द्वारा कम किया जा सकता है । विरोधी लिङ्गभेदके मानसिक ध्यान और शारीरिक आकर्षण को समझनेकी आवश्यकता है । विवाहमें भेदके सुधारकी आवश्यकता विवाहके पूर्व अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये । व्यक्तित्व परीक्षा सहायक हो सकती है । विवाहोच्छेद का भय उचित साधुके चुनाव द्वारा कम करना है । विवाह के पश्चात् विवाहोच्छेदका अवसर विवाहको आनन्दमय बनानेकी समझके द्वारा आगे कम किया जा सकता है । परिवार सेवा विवाहित शान्ति और परिवारमें एक साथ रहनेके कार्य को उत्साहित करनेके लिए आश्चर्यजनक अवसर है ।

सन्तति समस्या

आधे से अधिक अपराध एक चौथाई से कम जनसंख्यासे होता है । अध्ययन प्रदर्शित करता है कि शासित औद्योगिक क्षेत्र उच्च अपराधी जिले हैं और देहाती क्षेत्र कम अपराधी जिले हैं । ऐसी सामान्यता गहनकी जा सकती है । हमलोग यथार्थताका सामना करें। यह सत्य है कि कुछ पड़ोसियोंमें उच्च अपराध का

a small garnishment of future earnings to help support foundling homes. Fourth, apply serious penalties to persons guilty of two bastard pregnancies. Temporary sterilization might even be applied to such cases when they include abandonment.

Divorce

Divorce rates are disgracefully high in some modern nations. But the figures misrepresent the true picture because of repeaters. One person may be married and divorced several times. Such repeaters account for the scandal of one divorce for every six marriages and the like. The true picture deals with the facts of the overwhelming majority of marriages that last.

Divorce rates can be reduced by education for parenthood. The mental attitude of the opposite sex needs to be understood as well as the physical attractiveness. The necessity for adjustment of differences in marriage should be fully appreciated before marriage. Personality testing can be helpful. The risk of divorce is minimized by choice of the right mate. Then after marriage the chance of divorce can be further reduced by understanding how to build married happiness. Family service has wonderful opportunities to encourage marriage harmony and family solidarity.

Multiproblem families

More than half of delinquency comes from less than a fourth of the population. Studies show that as a rule industrial areas are high delinquency districts and rural areas are low delinquency districts. Such generalizations may be obscurantist. Let us face

परिमाण है। परन्तु जब इन पड़ोसियोंकी जाँचकी जाती है तो दस परिवारों में से नौ अपराधरहित पाए जाते हैं। कुछ परिवारों में तुलनासे अधिकांश अपराध एकत्रित होता है जो पारिवारिक समस्याके नाम से जाना जाता है।

सन्तति समस्या अधिक रूपसे अध्ययन और बहस की जाती है पर उनका सुधार बहुत ही कम किया जाता है। हमलोग इस की सामना करें और देखें कि हमलोग क्या कर सकते हैं।

सन्तति समस्या की विशेषता सुगमता से जानी जाती है। प्रायः वे विवाहोच्छेद पृथक्त्व अथवा माता-पिताकी मृत्यु द्वारा तोड़ी जाती हैं। अन्य मामलों में परिवारके सदस्योंके मध्यमें मजबूत झगड़े द्वारा उनका तोड़फोड़ होता है। एकत्र रहने की कमी प्रायः सदैव है, एक परिवार में एकसाथ ऐसा होना असफल है।

एक सन्तति समस्यामें, उदाहरणतः, एक शराबी पिता, एक दुर्बल मस्तिष्ककी माता, एक दोषी पुत्र और एक चरित्रहीना लड़की को सम्मिलित हैं। दूसरे बच्चे इन के विरोध में जिनके अच्छे अभिलेख होते हैं।

दक्ष व्यक्ति कहते हैं कि अधिकांश अपराध धार्मिक सेवाओंमें नहीं होते हैं। आगे अधिक अपराधों की कमी को अंशकालीन अथवा पूर्णकालीन नौकरी सम्भाले रहता है।

एक दर्जन से अधिक विभिन्न दान और जन कल्याण के साधनोंको एकही समय में उसी पारिवारिक समस्या के साथ सम्मिलित किया जा सकता है। अध्ययन प्रदर्शित

realities. It is true that some neighbourhoods have high delinquency rates. But when these neighborhoods are examined it is found that nine out of ten families are without delinquency. Most of the delinquency is concentrated in a comparatively few families known as multiproblem families.

The multiproblem families are studied and discussed at great length but too little is done to prevent their development. Let's face it and see what can be done.

Multiproblem families have easily recognized characteristics. Often they are broken by divorce, separation, or death of a parent. In other cases they are fractured by strong disagreements between members of the family. There is nearly always a lack of solidarity or togetherness, a failure to do things together as a family.

A multiproblem family may, for example, include an alcoholic father, a feeble-minded mother, a criminal son, and a delinquent daughter. There may be other children that in contrast have good records.

Experts say a large proportion of delinquents do not attend religious services. Furthermore many delinquents lack steady employment, either part time or full time.

More than a dozen different charities and public welfare agencies may be involved with the same multiproblem family at one time studies show

करता है कि पड़ोस के तीन प्रतिशत परिवार पापचरित और अपराध के साथ प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करसकता है।

महान् सन्तति समस्याकी परिस्थिति को रोकने के लिये अधिक विलम्ब के बाद प्रायः शक्तिशाली कार्यवाही करनी चाहिए। उदाहरणतः पूर्वदशा के वारतायुक्त प्रयत्न परिवार की अन्य सेवा के व्यय के लिए अधिक दान की माँग करता है। परिवार सेवा को कार्यकुशलता संभावित कष्ट के साथ सकलता द्वारा अत्यधिक बढ़ाया जा सकता है।

गंभीर कष्ट प्रारम्भ होने के पूर्व पारिवारिक समस्या के विस्तार के अनुसन्धानमार्ग के लिए विशेष ध्यान की आवश्यकता है तब प्रयत्नशालि उत्थान पापचारेत्, अपराध और टूटे गृहों के निषेध की महान् आशा के साथ किया जा सकता है।

शोध रोग निदान ऑफिसर, पुलिस, अभि-योग कार्यकर्त्ता और दान प्रतिनिधियों के उत्तम निर्णय के प्रमाण द्वारा संभव है। उनमें उत्कृष्ट गुण एक महान् पारिवारिक समस्या के विस्तार को जानने के लिए उन्नत करते हैं।

महान् सन्तति-समस्या के विस्तार के प्रथम संकेतों में एक उचित रीति से स्वास्थ्य के लिए बच्चे का प्रसार असफल है। उन व्यक्तियों को परिस्थिति के समीप उचित अन्तर और जो परिवार में समस्याएँ हैं उनको जानने और निर्णय के लिए शोध कार्यवाही करनी चाहिए। प्रायः सभी पारिवारिक समस्याएँ समय पर जान लेनेपर उनको हल की जा सकती हैं। सन्तति सेवा के प्रतिनिधि प्रायः परिवार के सदस्यों ने जो जाँच किया है, उन समस्याओं के समाधान का देख सकते हैं। पारस्वारिक समझ, व आदर-सत्कार प्रोत्साहित किए जा सकते हैं। शान्ति और एकता को प्रायः स्थापित किया जा सकता है।

that three per cent of the families in a neighbourhood may represent as much as sixty per cent of the delinquency and crime.

Often vigorous action is taken only after it is too late to prevent a multiproblem situation. As a result heroic efforts at rehabilitation make major demands on charities at the expense of other services to families. The efficiency of family service can be greatly increased by dealing effectively in advance with probable trouble.

Increased attention is needed to ways of detecting potential multiproblem families before serious trouble starts. Then uplift efforts can be applied with great hope of preventing delinquency, crime, and broken homes.

Early diagnosis is possible by the good judgment of probation officers, police, case workers, and charity representatives. Many of them develop remarkable ability to recognize a potential multiproblem family.

One of the first signs of a potential multiproblem family is failure to space children properly for health. Persons close to the situation should act promptly to discuss proper spacing and learn whether there are problems in the family. Nearly all family problems can be solved when recognized in time.

कल्पित वस्तु अत्यन्त भयङ्कर है जो उत्तम वंश परम्पराके गुण की सन्तान में निर्माण की जाती हैं और कुछ सन्तानों में नष्ट नहीं की जा सकती है। दूषित सन्तानों का भण्डार पहिले से अधिक भयङ्कर हैं जो उनकी संख्या में कोई वृद्धि संयोगसे बढ़ती है जो दो दूषित सन्तानोंको पुनः उत्पन्न करने में परस्पर मिलती है।

आधुनिक सभ्यता सभी प्रकार की कमियों में वृद्धि के साथ व्यक्तियों के लिए संभाव्य बनाती है। परिणामों का सामना करना चाहिए और आगे की हानि होने के पूर्व ही उचित सीमा प्रहण करना चाहिए।

उत्तम माता-पिता एक बच्चेको महान् आशीर्वाद देने से दूर है। वे बच्चोंके वंश परम्परा प्राप्त गुण और प्रसिद्ध संग का पहिले से प्रबन्ध करते हैं। प्रोत्साहक उत्तम माता-पिता द्वारा सभ्यता से नाश, पतन, गिरावट बचाया जा सकता है। उत्तम स्वास्थ्य, ज्ञान और चरित्र के लिए माता-पिता के साथ लम्बे परिवारों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

वन्ध्यत्व

प्रसिद्ध पाश्चात्य देश में सद्वृत्तोंसे अधिक अशुभों और दूषणों का वन्ध्यत्व प्रति वर्ष निर्माण होता है। परन्तु एक दुःखान्त विच्छेद दूषणों के विचार में प्रकट होता है। प्रत्येक दूषणोंको निष्कल किया जाता है, वहाँ एक दर्जन सीमावद्ध दूषण हैं जो वन्ध्यत्व को बचाता है। महान् परिवारों को स्वस्थ रखने के लिए प्रायः निरोध की रचना चलती है। परिवारों की महान् समस्या का लगातार परिणाम है। सन्तति-निरोध शब्द के अनुसार ऐसे व्यक्तियों को कभी कभी बलपूर्वक किया जाता है। मातृत्व-पितृत्व के उच्चस्तर के निर्माण के लिए कारण है और वन्ध्यत्वसे छुटकाराके लिए उनकी परिस्थिति है।

The assumption is very dangerous that good heredity is built into the genes and cannot be destroyed in a few generations. The reservoir of defective genes is dangerously large already. Any increase in their number adds to the chance that two defective genes will join together in reproduction.

Modern civilization makes it possible for persons with all sorts of defects to multiply. The consequences should be faced and corrective measure taken before farther damage is done.

Good parents are far and away the greatest blessing a child can have. They provide the heredity and important early environment of children. Civilizations can only avoid decay, decline, and fall by encouraging good parents. Parents with the best health, intelligence, and character should be encouraged to have the largest families.

Sterilization

More than a thousand sterilizations of criminals and defectives are made every year in a leading Western nation. But then a tragic hiatus occurs in thinking about defectives. For every defective sterilized there are a dozen borderline defectives that escape sterilization. Those often proceed as a reaction formation to have the largest families. Multiproblem families frequently result. Family planning according to ability is seldom put forcefully to such persons. There is reason for making a high standard of parenthood a condition for their continued exemption from sterilization.

सन्तति की सेवाकरनेवाले प्रतिनिधिवर्ग दुषणों और दोषियोंकी परीक्षाको सम्मति और पथ-प्रदर्शन और अन्य मार्गों द्वारा सहायता कर सकते हैं। अपराधियोंको उनकी योग्यताके अनुसार सन्तति-निरोध द्वारा मातृत्व-पितृत्वके उच्चस्तरकी मर्यादा और गृहजीवनके एक अनुकरणीय नियमके प्रयात्नके लिए उत्साहितकी जा सकती है। परिणाम, मानव आनन्दके लिए एक सुन्दर अंश है।

सन्ततिका स्वास्थ्य

परिवारमें आश्चर्यजनक विषमताके साथ औषधीय व्यय होता है। शहरमें परिवारोंकी एक छोटी समानुपातमें औषधीय व्यय अधिक पड़ सकता है। यह कभी कभी संसर्गशील बनानेकी औषधिकी दलील जैसी व्यवहारकी जाती है। यहाँ वहीं भय जो वंश-विनाशके दृश्यमें है, छिपा रहता है। रोग की ओर वंश परम्पराप्राप्त गुणकी प्रवृत्तिके गुणनको सहायता दी जा सकती है। सन्तति-निरोध माता-पिताकी योग्यताके अनुसार उपेक्षाकी जा सकती है। काल्पनिक भावुक अज्ञानतासे विनाशका बीज बो सकते हैं।

मानवजाति से प्रेम करने वालों को निर्माण-सम्बन्ध के लिए यथार्थवादी होना चाहिए। मानव जाति अत्यन्त मिश्रित है। उनके कष्टों का कारण सीमित है जो शारीरिक उत्तमता और मानसिक योग्यता अधिक सन्तानों को इन गुणों के चुनाव द्वारा निर्माण की गई है। अधिक मूल्य दिया गया है और परिणाम सम्मान योग्य होता है जबतक उत्तम पद्धति की परीक्षा नहीं होती है तबतक उसी पद्धति का सत्कार करना चाहिए।

निःशुल्क सहायकी औषधीय योजना औषधीय व्यय की समस्या की सामनाका मार्ग है। परन्तु, निःसन्देह रूप से माता-पिता की शक्ति के अनुसार सन्तति निरोध स्थिर करनी चाहिए। मानव जातिसे प्रेम करनेवालोंको

Family service representatives can help defectives and also delinquents on probation with advice and guidance and in other ways. Delinquents can be encouraged to measure up to a high standard of parenthood by planning their family according to their ability and striving for an exemplary level of home life. The result is a beautiful contribution to human happiness.

Family health

Medical expense falls on families with surprising unevenness. A small proportion of the families in a town may incur most of the medical expenses. This is sometimes used as an argument for socialized medicine. Here the same danger lurks that is seen in gene erosion. Multiplication of hereditary tendencies to illness may be subsidized. Family planning according to the ability of parents may be neglected. Romantic sentimentalists may unwittingly sow seeds of decay.

Humanitarians should be realistic to be constructive. Human beings are immensely complex. The reason their troubles are limited is that physical fitness and mental aptitude have been built in by many generations of selection of these qualities. A high price has been paid and the result merits respect. The system should be honored until a better system is proved.

Voluntary cooperative medical plans are a practical way of meeting the problem of medical expense. But even so there must still be family planning according to the ability of

अपनी परम्परागत का सत्कार करना चाहिए और अपनी अभिभावकता के समय तक इसके सुधार को चालू रखने के लिए प्रयत्न करना चाहिए ।

बच्चों की मृत्यु

बच्चों की मृत्यु का अनुपात संसार के लिए अत्यन्त दुःखमय औसत है । लगभग ७०० लाख बच्चे प्रत्येक वर्ष संसार में जन्म लेते हैं । उनमें ९० लाख बचपन में ही मरते हैं । बच्चों की मृत्यु का अनुपात १३० प्रति सहस्र जन्म का है जब कि ४० अथवा कम हो सकती है । साठ लाख से अधिक प्रति अनावश्यक प्रतिवर्ष मरते हैं । लड़क कर चलनेवाले दस लाख बच्चोंसे अधिक और अनवश्यक बच्चे मरते हैं ।

मानवता कहाँ है ? मानवजीवनके नाशके विषयमें कहनेके लिए समाजके नेतागण क्या करते हैं ? कितना किया गया है ? पथभ्रष्टके सुधारपर व्यर्थ हुए व्यय हो रहे हैं ।

‘बच्चे, लड़ककर चलनेवाले बच्चोंकी अधिकांश मृत्यु रोकने योग्य हैं । बच्चोंके जीवनको बचानेके लिए जो कुछ कियाजासकता है वह स्वीडन और स्विट्जरलैण्ड सदृश देशोंने कर दिखला दिया है ।

शायद बच्चोंकी मृत्युके उच्च अनुपात और युक्ति-युक्त बचावके साथ देश गुजरते हैं । प्रश्न अत्यन्त गंभीर शंकाके साथ उठों का त्यों रहता है या इन मृत्युमें से प्रत्येक बचानेके योग्य हैं । बच्चकी मृत्यु मानवके चरित्रके विरुद्ध समझा जाता है जब मानवताकी इस परीक्षा द्वारा विचार किया जाना है तब अभाव पाया जाता है । जैसे हमलोग अनावश्यक बच्चोंकी मरणशीलताकी वास्तविकता का सामना करते हैं हमलोग मानवताके विरुद्ध दोष और दण्ड का पृथक् निर्णयके लिए मूलाधार देखते हैं ।

parents. Humanitarians should honor their heritage and try to continue its improvement during their time of guardianship.

Child mortality

The average child mortality rate for the world is tragically high. Around seventy million babies are born into the world every year. Nine million of them die in infancy. The average infant mortality rate is 130 per thousand births when it can be 40 or less. **More than six million babies die needlessly every year.** Many more millions of toddlers and children die needlessly.

Where is humanity ? What have the leaders of society to say about this waste of human life ? How much is being done ? Fantastic sums are being spent on development of guided missiles.

Most of the deaths of infants, toddlers, and children are from causes proved preventable. Nations like Sweden and Switzerland have demonstrated what can be done to save the lives of children.

Nations with high rates of child mortality of course come up with plausible excuses. The question remains with very grave doubt whether every one of the deaths is excusable. Then the death of a child has to be weighed against the character of mankind. Humanity when weighed by this test is found lacking. As we face the realities of needless child mortality we see the basis for a severe judgment of guilt and punishment against mankind.

चित्तवृत्तियोंका मूलधार भय, घृणा, लोभ हैं। उन्हें ईमानदारीसे सामना करना चाहिए अथवा मानवता संस्थानोंपर प्रभाव डालनेवाला होती है। हमलोग कैसे प्रभावित हैं और हमलोगोंको कैसे व्यवहार करना चाहिए यह सिद्ध करना चाहिए।

दसलाखसे अधिक बच्चे हमलोगोंके समयमें मारे गए हैं, हमलोगोंकी समवेदना कठोर हुई। हमलोग इस भयानक अपराधको स्वीकार करें।

मानवता, आधुनिक सभ्य मनुष्यजाति भौतिकविज्ञान, अनात्मवाद पर एकत्रित है। हमलोगोंके लिए उच्च चरित्र को वर्णन करनेके लिए अत्रपर है कि दस लाख बच्चोंकी उपेक्षा की जाती है और वे मरते हैं। भय, घृणा, और लोभ निष्फल प्रेमके लिए प्रचलित रखते हैं।

परिवार सेवा श्रेष्ठ अवसर और भयङ्कर उत्तरदायित्व दोनों है। दस लाख बच्चों के जीवन लुढ़कनेवाले बच्चे, प्रत्येक वर्ष रक्षा की स्तर पद्धति, आरोग्य शास्त्र, रोगोंकी रुकावट से बचाये जा सकते हैं।

पारिवारिक भत्ता (अधिदेय)

बच्चोंकी संख्यापर आधारित पारिवारिक भत्ता अनेक सरकारों द्वारा दी जाती है। एक परिवार के बढ़ते हुए आर्थिक बोझ से सुख के लिए लक्ष्य है। वृद्ध परिवारका भत्ता संभवतः जनसंख्या की वृद्धि में सहायता देता है।

पारिवारिक भत्ता उपयोगी होने में कठिन है इसलिए वे वंश परम्परा प्राप्त गुण की चौकसी करते हैं और जीवन के लिए ऋणग्राम्य हैं। उनका विपरीत लक्ष्य कठिन है। पारिवारिक भत्ता.....अपराधी, कर्तव्यच्युत, कामपर लगाये जाने के अयोग्य की वृद्धि में सहायता देगा जो भयङ्कर है।

व्यवहारिकरूप में थोड़ा पारिवारिक भत्ता माध्यमिक आयवाले परिवार के लिए अधिक तात्पर्य रखता है। इन माध्यमिक आयवाले परिवार बहुतसे सर्वोत्तम माता-पिताको

The basic emotions are fear, hate, and lust. They must be faced honestly or humanity becomes neurotic. We must realize how we are influenced and how we should behave.

So many million children have been killed

Within our time,
Our sympathy grew calloused.....
Let's admit this awful crime :

Humanity, modern civilized mankind, is concentrating on physical science, materialism. Millions of infants, the opportunity for us to express the highest character, are neglected and die. Fear, hate, and lust continue to frustrate love.

Family service has both a glorious opportunity and tremendous responsibility. For millions of lives of infants, toddlers, and children can be saved every year by standard methods of care, sanitation, and disease prevention.

Family allowances

Family allowances based on the number of children are paid by many governments. The intention is to ease the economic burden of raising a family. Large family allowances probably help to increase population.

Family allowances are difficult to apply so that they tend to improve heredity as does the struggle for existence. Their opposite tendency is serious. The danger is that family allowances will subsidize multiplication by morons, delinquents, derelicts, and unemployables.

In practice family allowances seldom mean much to middle income families. These middle income families

संयुक्त करते हैं और एक देशका प्रधान सहाय निर्माण करते हैं। पारिवारिक भत्ताके भतिरिक्त करका बोझ बृहत् परिवारकी की रक्षासे प्रसिद्ध नागरिकों को प्रायः निरुत्साहित कर सकते हैं।

राजस्व की शक्ति नाश की शक्ति है। गुण के अपने मान हैं परन्तु उसी क्षण गुण विनाश भी होसकता है। एकबृहत् आय-कर बेईमानी को उत्साहित करता है और कठोरकार्य प्रारम्भिक, और पराक्रम को दण्ड योग्य करता है। महुँगा कर हितकर प्रयत्न और ईमानदारी को निरुत्साहित करता है। कर त्याज्य के लिए पारितोषिक, कर-वदना, कर का धोखा बड़ा होता है। प्रभोमन का प्राचीन बाजार, काला-बाजार, गुलगपाड़ा, और दूसरी उद्योगिता प्रायः अनिवार्य विधान के बाधर होता है। जब कर-मुद्रा अवुत्तरदायी, उपेक्षित और अयोग्यको सौंपा जाता है तब नैतिक स्तरको कम करने का दबाव बढ़ जाता है। कुछ उत्तम विलक्षण व्यक्तित्व से राष्ट्रीय कमी के सहायतार्थ वास्तव में स्थिति के बाहर कर लगाया जा सकता है। ध्वंस मार्ग आकांक्षा के साथ ठीक किया जा सकता है।

पारिवारिक भत्ता के लिए साहसपूर्ण मूल्य-निरूपणकी आवश्यकता है। पारिवारिक भत्ता की दर्जाल का अच्छे उत्तरों में से एक निःशुल्क शिक्षा, विद्यालय का जलपान, और छात्रों के दाँतों की सावधानीको सम्मिलित करता है।

सन्तति सेवा-साहित्य

पारिवारिक सेवा-साहित्यकी गणना अत्यधिक है। विभिन्न सैकड़ों समान छोटी पुस्तिकाएँ बहुत देशों में प्रकाशित हुई हैं। इस बृहत् प्रचार का बहुत कम लोग आनन्द उठाते हैं। जबतक जीवन है तब तक आशा है कि प्रसिद्ध लेखक अपन सञ्चित ज्ञानसे लाभ उठावेंगे और नवीन बहुमूल्य सन्तति सेवा की छोटी पुस्तिकाएँ निर्माण करेंगे जिनका दसलाख प्रतियाँ वर्ष पश्चात् वर्ष बिक जायेंगी।

include many of the best parents and form the backbone of a nation. The additional tax burden of family allowances may even discourage leading citizens from having large families.

The power to tax is the power to destroy. Virtue may be its own reward but even virtue can be destroyed. A high income tax encourages dishonesty and penalizes hard work, initiative, and achievement. High taxes in general discourage productive efforts and integrity. The rewards for tax avoidance, tax evasion, and tax dodging become great. Temptations of gray markets, black markets, racketeering, and other activities outside the law become well-nigh irresistible. The pressure to relax moral standards is increased when the tax money is handed out to the irresponsible, negligent and incompetent. Some of the finest personal traits may be taxed virtually, out of existence to subsidize national decadence. The road to ruin can be paved with good intentions of cradle-to-the-grave security.

Family allowances need courageous appraisal. One of the best answers to arguments for family allowances includes free education, school lunches, and dental care for students.

Family service literature

The amount of family service literature is overwhelming. Hundreds of different yet similar pamphlets are published in many nations. Too few enjoy a large circulation. While there's life there's hope that leading authors will benefit from accumulated knowledge and produce new excellent

एक छोटी पुस्तिकासे अधिक, एक निर्देश पुस्तक, शिशु और बाल बालिकाओंकी रक्षा, लिखनेके कारण डॉ॰ बेनजामिन स्पोकको धन्यवाद है जिसकी दस लाख प्रतियाँ पहिलेभी विक्रय हो चुकी हैं ।

सन्तति सेवाका संघटित कार्य

पारिवारिक सेवाके संघटित कार्य दर्जनों हैं, कुछकी सैकड़ों शाखाएँ हैं । प्रसिद्ध पाश्चात्य देशका पारिवारिक सेवा विभाग एक उदाहरण है । उनके समस्त देशमें बहुत शाखाओंके साथ निजी दातव्य है । वे अपनी सेवाएँ परिवारोंको निःशुल्क प्रदान करते हैं, जैसे माताके रूग्णा होने पर बच्चोंकी रक्षाका परामर्श देना और अन्य पारिवारिक कष्टोंमें सहायता देना ।

बृहत् राजधानी सम्बन्धी क्षेत्रमें बच्चोंकी सहायक समिति प्रतिवर्ष पचास सहस्र बच्चोंसे अधिककी अच्छी तरह सेवा करता है । यह एक शताब्दि पूर्वसे अधिक एक निजी दातव्य प्रारम्भ किया गया ।

दावा है कि बहुतसे देहाती और नागरिक क्षेत्रोंमें अभीतक बहुत कम सन्तति सेवा है । जो कुछ कम सेवा है वहाँ पड़ोसियोंके आश्रित और नियम बन्धनोंसे मुक्त हो सकता है । यह जैसा आगे बढता है आश्चर्यजनक है । परन्तु इसे स्वाधीन संघटित कार्यसे उत्साहित होनेकी आवश्यकता है जो कि धात्रय और स्थानीय क्रियाशीलता से पारस्परिक सहायताविहान है । इस तरहसे पारिवारिक सेवा सर्वोत्तम रूप में सभी मानवजाति के लिए लाभदायक बनायी जा सकती है ।

कभी कभी यह प्रतीत होता है कि दिनपर दिन सहायक क्रियाशीलता व द्रव्य का बड़ा और अनुचित योग और पारिवारिक सेवा दातव्यसे प्रगटन नष्ट हो जाता है । रचनात्मक उन्नतिकी गतिविधि और कष्ट कम करने की गतिविधियोंपर अधिक ध्यान देना चाहिए । परन्तु ये

family service pamphlets that will sell millions of copies year after year.

Congratulations are due Dr. Benjamin Spock for producing more than a pamphlet a reference book, **Baby and Child Care**, that has sold millions of copies already. This shows what can be done.

Family service organizations

There are dozens of family service organizations, some with hundreds of branches. The Family Service Bureaus of a leading western nation are an example. They are a private charity with many branches throughout the nation. They give their services free to families, such as counselling, child care during illness of the mother, and aid in other family emergencies.

The children's Aid Society in a large metropolitan area serves well over fifty thousand children every year. It is a private charity started more than a century ago.

The challenge is that many rural and urban areas still have very little family service. What little service there is may be informal and dependent on neighbors. This is wonderful as far as it goes. But it needs to be encouraged through voluntary organizations that foster mutual helpfulness and local activities. In this way the best in family service can be made available to all humanity.

Sometimes it seems that day-to-day relief activities consume the lion's share of money and effort from family service charities. Increased attention might be given to constructive-uplift activities and even trouble-

अन्तर व्यवहारमें पहिचानने में कठिन है। अभातक जो प्रतीत होता है उसमें दिनपर दिन आपत्-सहाय-कार्य की गतिविधि का उत्थान किया जा सकता है। कष्ट जो निवारण किया जाता है अनगिनत है।

यह अनुभव प्राकृतिक आर प्रशंसनीय है कि वहाँ परिवार सेवा में सुधार और उन्नति के लिए स्थान है। इस अभ्युदय के उत्साह को बलपूर्वक तबतक सहायता देनी चाहिए जबतक सर्वत्र संसार में शिशु और बच्चों की मरणशीलता की अनुपात कम होती है। तब अन्य कठिन मानव जातिकी समस्याओं यथा समस्त मानव समाजको बढ़िया भोजन देनेकी ओर विशेष ध्यान दी जा सकती है।

दरिद्रता की दृढ़ता

दरिद्रता की दृढ़ता की सामना करने की आवश्यकता है। १९ वीं सदी के मध्य में जिन्होंने कष्ट सहन किया उनकी अपेक्षा २० वीं सदीके मध्य में अधिक व्यक्ति शक्तिवर्द्धक भोज्य की कमीसे कष्ट भोग रहे हैं। पुरुष, महिला और बच्चोंकी संख्या: जो २० वीं सदी के प्रथम अर्द्ध में भूखसे मरे करोड़की सोमा को पार करती है।

जो कुछ आज है संसारके केवल एक भागकी जनसंख्या महुँगाई की सत्यता के विषय में अधिक व्यक्ति शिकायत कर रहे थे। परन्तु अधिक कष्टदायी महुँगाई जैसी आरत, यथार्थमें अच्छे सामग्री एकत्र करनेवालों को महुँगाई थी। मानवजाति प्रकृतिकी सुन्दरता और विचित्रताको देखरहाथी और अपनी स्थितिके लिए प्रकृति पर दोषारोपण कर-रहीथी। उन्होंने दर्पणमें देखा और अपनेको दोष दिया।

preventing activities. But these differences are difficult to distinguish in practice. What seems like day-to-day relief may be working constructive uplift. Trouble that is prevented is incalculable.

The feeling is natural and commendable that there is room for improvement and progress in family service. This spirit of advancement should be pushed vigorously until infant mortality rates and child mortality rates are reduced throughout the world. Then increased attention can be concentrated on other serious problem of mankind such as providing well balanced meals for all humanity.

Persistence of poverty.

The persistence of poverty needs to be faced. More persons are suffering from malnutrition in the middle of the twentieth century than suffered this fate in the middle of the nineteenth century. The number of human beings, men, women, and children, that starved to death in the first half of the twentieth century exceeds a hundred million!

Many people were complaining about the scarcity of means of subsistence when the population of the world was only a fraction of what it is today. But the most tragic scarcity then as now was in reality a scarcity of good providers. Mankind was looking at the beauties and wonders of Nature and blaming Nature for his condition. He should have looked in a mirror and blamed HIMSELF.

आजकल संसारके पूर्ण अन्न उत्पादन दो शताब्दियों पूर्व की जनसंख्या की अपेक्षा अधिक है। अभी आजकल संसारमें जो पूर्ण अन्न उत्पादन है वह आज मानववर्ग के लिए कमसे कम पोषण मात्रा पर्याप्त नहीं है। अन्न उत्पादन दुगुनेसे अधिक, सबको बढ़िया भोजनके प्रबन्धकरणके लिए होना चाहिए। वे व्यक्ति जो अपनेको सभ्य कहते हैं वे लज्जासे अपने सिर झुका सकते हैं।

इस दरिद्रता की दृढ़ता का क्या कारण है? इसका उत्तर अत्यन्त सुगम है कि जिनकी अच्छी तरह उन्नति कर सकत हैं उनकी अपेक्षा कुछ माता-पिताके पास अधिक बच्चे हैं। प्रथम समस्या की सामना करनी आवश्यक चाहिए क्योंकि यह सभी दृश्य साक्षियों की पराजित कर सकता है प्रथम समस्या अर्द्धचेतन है।

एक सिद्धान्त मुद्रा की रक्षा के लिए अर्द्धचेतन है। आत्मरक्षा प्रकृतिका प्रथम विधान है। सत्यानाश का भय प्राकृतिक है। वर्ष में जनसंख्या की केवल थोड़ी वृद्धि अर्द्धचेतन को प्रभावित करती है जैसे रक्षा की भयङ्करता। कोई विचार जो संभवतः उर्वरता की कमी करता हो वह रक्षा के कोर के लिए एक तापके सदृश प्रतीत होता है। अर्द्धचेतन, भयके साथ विचार, क्रोधोन्मत्त भय, धर्मोन्मत्त सम्बन्धी घृणा अभिप्राय रखता है। ये अर्द्धचेतन अनुभव निन्दा, नष्ट और संहार जैसे विचार को प्रमाणसहित सिद्ध करते हैं जबकि वे यथार्थ में लाभदायक हैं।

उर्वरता को उत्साहित करनेवाले विचारों का स्वागत है। साधारणतया गरीबों की अधिक बच्चों की अपेक्षा जितने की भली भाँति उन्नति करने का खर्च कर सकते हैं उतने का

The total food production of the world today is more than enough for the population of two centuries ago. Yet the total food production in the world today is not enough to provide even the minimum adequate calories for humanity now. Food production would have to be more than doubled to provide well balanced meals for all people that call themselves civilized may well bow their heads in shame.

What are the reasons for this persistence of poverty? It is too easy to answer that some parents have more children than they can raise well. The first problem that must be faced because it may dominate all visible evidence... the first problem is the subconscious.

One theory is the subconscious drive for preservation of the species. Self preservation is the first law of nature. Fear of annihilation is innate. An increase of only a few per cent a year in population impresses the subconscious as a dangerously narrow margin of safety. Any idea that might possibly reduce fertility seems like a threat to the margin of safety. The subconscious views such ideas with horror, frantic fear, fanatical hate. These subconscious feelings become rationalized into devastating condemnation and destruction of such ideas even when in reality they are beneficial.

Ideas that encourage fertility are welcome. As a rule it is easy to persuade the poor to have more children than they can afford to raise

अधिकारी होनेके लिए समझाना बुझाना आसान है; उनकी मातृत्व पितृत्वके स्तरकी उन्नतिके लिए समझाना-बुझाना कठिन है। सहज प्रवेश प्रायः अभ्यास करना है और परिणामतः दरिद्रता लगी रहती है।

बृहत् संख्यामें सुरक्षाका होना प्रतीत होता है। विभिन्न संस्कृतियोंमें यह भावुकता पायी जाती है और जब निःसन्देह रूपसे अनेक घृणित दरिद्रतासे कष्ट पाते हैं तब बृहत् परिवारोंकी ओर उपकारी ढङ्गका पथ-दर्शन करता है।

बृहत् परिवारोंके लिए एक शक्तिशाली प्रभाव प्रायः धर्मकी समस्त शाखाओंमें व्याप्त करता है जो दस लाखसे अधिक सदस्योंका अधिकार रखता है। फलशर और वृद्धेका होना एक आध्यात्मिक कर्तव्य-भार बन जाता है। बृहत् परिवारोंको श्रद्धामें लाना धर्मपरिवर्तन पर विजयप्राप्तके प्रयत्नके साथ तुलनात्मक अग्रगण्य शाक्तका एक साधारण स्रोत है। दरिद्रता और निर्दोषता आध्यात्मिक जीवनका चिन्ह है। बृहत् परिवार-दरिद्रता-निर्दोषता-बृहत् परिवार-दरिद्रता-निर्दोषता-बृहत् परिवारका रूप एक अविच्छिन्नता का आवर्त है जो उन्नतिके लिए कठिन है।

जन संख्या का कष्ट राजनीति में एक प्रचण्ड प्रभाव लाता है। एक बृहत् जनसंख्या राजनैतिक शक्ति की प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए प्रतीत होती है। बड़े देश कभी कभी अपनी जनसंख्या की वृद्धि के लिए विधान बनाते और रुपये की सहायता करते हैं जहाँ जीवन-स्तर भयसूचक है। देशके अन्तर्गत राजनैतिक जिले सदस्यों की वृद्धि से अधिकार वृद्धि में उठा सकते हैं। राजनैतिक नेता एक बड़े निम्नाङ्कित लाभ का खोज करने हैं। जनसंख्या का प्रबल उद्योग को उत्साहित किया जा सकता है जब कि जीवन का सम्भव कम हो और दरिद्रता दृढ़ रहती है।

well; it is difficult to persuade them to improve their standard of parenthood. The easy approach often is practiced and as a result poverty persists.

There seems to be safety in large numbers. This sentiment is found in various Cultures and leads to favorable attitudes toward large families even when many suffer abject poverty

A powerful influence for large families pervades nearly all of the branches of religion that hold authority over many millions of members. To be fruitful and multiply becomes a spiritual obligation. Large families brought up in the faith are a simple source of numerical strength compared with trying to win converts. Poverty and innocence are symbols of spiritual life. Large families poverty inn cence large families poverty...innocence.....large families form a long spiral of continuity that is hard to improve.

The struggle for population exerts a strong influence in politics. A large population seems to hold promise of political power. Great nations use laws and subsidies and other means to increase their populations sometimes to where even the standard of living is threatened. Within a nation political districts may benefit from increasing influence with increasing numbers. Political leaders seek the advantages of a large following. The struggle for population may be encouraged even though the level of living is low and poverty persists.

जन संख्या की वृद्धि के लिए आर्थिक दबाव व भोजन की कमी बनी रहती है—मौलिक आर्थिक आवश्यकता सीमावद्ध आड़तिया है। वहाँ निश्चित नहीं है, धनी धनी को प्राप्त करते हैं और और दरिद्र बच्चों को प्राप्त करते हैं जैसे एक-तिहाई के अधिक अंश जन संख्या की वृद्धि करते हैं। भूमिपति जमीन के मूल्य में वृद्धि से लाभ उठाते हैं और मालगुमारी यथारीति अपने पड़ोसियों की जनसंख्या की वृद्धि से आती है। मालिक अधिक भूमिक चाहता है जिसमेंसे सर्वोत्तम कार्यकर्ताओं का चुनाव करता है। जनसंख्या की वृद्धि का तात्पर्य उग्र दरिद्रता की दृढ़ता के बदले में भोजन और वस्त्र की नयी माँग है। स्थिर आर्थिक लाभ की बढ़ती होती है और बड़े हुए बाजार को पनपाता है यद्यपि दरिद्रता उसी प्रकार दृढ़ रहती है।

दूसरे कुल की वृद्धि के अधिक बोझ के उत्तर-दायित्व के भार को रखते हुए एक तिहाई व्यक्तिकी प्रायः इच्छा है जो बहुत संस्कृतियों का तत्त्व प्रकट करता है। इस संस्कृतिका सार्वजनिक आदर्श बच्चों के मरने के लिए सम्बन्धियों के पक्षपात का व्यवहार और ऊँचा चढ़ने के तत्त्व की सहायता करता है। दलित वर्ग भयानक कमीने बड़े परिवार के कष्ट के माता-पिता के पाठ द्वारा पहिले से वशीभूत होकर कष्ट पाते हैं। इस बीच में उनके अपने लाभ के निमित्त आकांक्षा और प्रभाव की स्थिति में तत्त्व है। कष्टदायक दरिद्रता विशेषाधिकार का एक भयङ्कर बाधा है जो उनके सुख के साथ आनन्दप्रद स्थिति को रखने के लिए तत्त्व को शक्तिमान करता है। जब तक तत्त्व इसके ऊपर शेष रहता है तब तक दिन पर दिन दारिद्र्य की समस्या दबाने वाला है। इस संस्कृतिकी परिस्थिति वंशपरम्परा तक स्थिर रहती है और इसके साथ दरिद्रता दृढ़ रहती है।

Economic pressures for increasing population remain great even where a shortage of food...the fundamental economic necessity is the limiting factor. There's nothing surer, the rich get rich and the poor get children as long as the submerged one-third make the largest contribution to increasing the population. Landlords benefit from the rises in land values and rents that usually come with increasing population in their neighborhoods. Employers like a plentiful supply of labor from which to select the best workers. Increasing population means new demands for food and clothing in spite of the persistence of desperate poverty. Vested economic interests promote and thrive on growing markets even though poverty persists.

The Elite in many Cultures seem almost willing to have the submerged one-third of the people saddled with the bulk of the burden of raising the next generation. This common pattern of Culture helps the Elite to ride high and practice nepotism for children of Elite. The depressed become preoccupied with the struggle for existence and weighed down by parental tasks of large families suffering from dire want. Meantime the Elite are in position to design and use influence for their own advantage. Distressing poverty is a tremendous handicap of the underprivileged that enables the Elite to hold their comfortable position with ease. Day-to-day problems overwhelm the poor

दुःखान्त दरिद्रताकी दृढ़ताकी सामना करनी चाहिए। यह यथार्थ है। यह यहाँ है। यह अभी है। यह बहुतों के लिए कष्टप्रद है। बहुत से बच्चे स्थायी हानि अथवा मृत्यु से कष्ट पाते हैं।

माता-पिता-जितने बच्चोंकी भली भाँति उन्नति कर सकते हैं करें इसके द्वारा उन्हें उत्साहित करते हुए परिवार सेवा को अत्यन्त ब.प्र. दायिनी दरिद्रता रोकੀ जा सकती है।

मातृत्व-पितृत्वका स्तर

जनसाधारण सम्बन्धी अधिकारियोंने हूँड निकाला है कि दरिद्रतामें आर्थिक तत्वकी अपेक्षा अधिक कुछ है। संयुक्त राष्ट्रोंमें उन्नतिका अध्ययन निर्देश करना है कि सामाजिक विवेचन आर्थिक विवेचनके साथ एक दूसरेके हाथमें जाता है जैसे दरिद्रतापर संयुक्त प्रभाव।

समस्त इतिहास में सर्वत्र समस्त देशोंमें उत्तम माता-पिता रहते थे यह उत्तम सत्य है। परिवारों की समानता जो उनके बच्चों को जीवित रखता है वह जीवन के समभाव को एक साधारण अनुक्रमणिका है। जहाँ कुछ प्राकृतिक उपाय हैं वहाँ यह समानता अच्छी हो सकती है। जहाँ पर्याप्त उपाय हैं वहाँ यह तर्ग के योग्य हो सकती है जीवनकी समानता गृहमें अच्छी और दरिद्र ठीक दूसरे द्वार पर हो सकती है। यह अविकसित स्थानमें अच्छी और कलावत् स्वयंगतीशीलके मध्यमे तरसके योग्य हो सकती है। मातृत्व-पितृत्वका स्तर यथार्थमें महत्वपूर्ण है। अन्य विवेचन केवल सेवा के लिए है। सौभाग्यवश परिवारोंकी समानता जो उनके बच्चोंको सजीव रख सकती है बहुत देशोंमें उन्नतिपर है।

while the Elite remain above it all. This status quo of the Culture continues from generation to generation and with it poverty persists.

The persistence of tragic poverty should be faced. It is real. It is here. It is now. It is tragic for many, many children that suffer permanent injury or death.

Family service can prevent much tragic poverty by encouraging parents to have as many children as they can raise well.

Standard of parenthood

Public officials have discovered that there is something more than an economic element in poverty. Studies of developments in the United Nations point out that social considerations go hand-in hand with economic considerations as Joint influences on poverty.

The glorious truth is that good parents have lived in all nations throughout all history. The proportion of families that keep all of their children alive is a simple index of the level of living of a nation. This level can be good where there are few natural resources. It can be poor where there are abundant resources. The level of living can be good in a home and poor right next door. It can be good in an undeveloped land and poor in the midst of technocratic automation. The standard of parenthood is what really matters. The other considerations are merely to serve. Fortunately the proportion of families that keep all of their children alive is increasing in many nations.

अर्थ प्रदानके द्वारा बड़ी हानि की जा सकती है जो मातृत्व-पितृत्वका स्तर आर्थिक विकासपर निर्भर है। सर्वोत्तम माता-पिता सम्पूर्ण इतिहासोंमें सर्वत्र सब देशोंमें अपने बच्चोंके लिए योजना बनाए और आवश्यक सामग्री एकत्र किए हैं। उनका इतिहास मानवताको पूर्ण करनेका प्राकृतिक मार्ग प्रदर्शित करता है। आर्थिक विकासकी प्रतीक्षा किसोंके लिए तरसके योग्य क्षम्य है। अब समय है और तात्पर्य यहाँ है। पञ्चवर्षीय योजनाका कम मानव उपयोगिताकी शीघ्रताके साथ अक्रियशील तुलना कष्टप्रद दृष्टिगोचर होता है वह विषय सबसे अधिक सर्वोत्तम माता-पिता, मातृत्व-पितृत्वका एक उच्च स्तर, भलीभाँति शिक्षित बच्चे, एक उत्तम परिवारकी प्रतिष्ठा, गृहजीवनकी एक अनुकरणीय समानता है।

मातृत्व-पितृत्वका उच्चस्तर सर्वदा प्राप्य है और यहाँ ठीक तैयार है और अभी किसी माता-पिताके लिए जो अधिक भाग्यवान हैं इस सत्यके प्रकाशको देखसकते हैं। वहाँ प्रकाश होनेदो परिवार सेवाकी पुकार है, इसे आकाशसे पृथ्वीतक गूँजेनदो।

उत्तम माता-पिताका होना एक बच्चेका महान् आशीर्वाद है। यहाँ आनन्दके लिए कारण है। उत्तम माता-पिताकी वृद्धि आर्थिक विकासके आगे दूरतक जासकती है। अब आशावाद जन्माहुआ सनातन है। उत्तम माता-पिता सभी मानववर्गके जीवनके उत्थानका मार्ग प्रदर्शित करता है।

जब हमलोग जीवनकी समानता, आध्यात्मिक, नैतिक, स्वस्थपूर्ण व आर्थिक उत्थानके लिए अपना कर्तव्य कर रहे हैं और उत्तम माता-पिताको उत्साहित कर रहे हैं। हमलोग यथार्थ विषयकी उपयोगिताकी ओर ध्यान दे रहे हैं। हमलोग मानवजातिके लिए अपना प्रेम, मानवजातिके पूर्ण विकासमें विश्वास, और सत्य व प्रेमकी अन्तिम प्रसन्नतामें विश्वास, प्रकट कर रहे हैं। हमलोग मेलमोल, और लक्ष्यपूर्ण जीवनके आनन्दमें हिस्सा ले रहे हैं

Great harm can be done by implying that the standard of parenthood is dependent on economic development. The best parents have planned and provided for their children in all nations throughout all history. Their record shows the natural way of perfecting humanity. Waiting for economic development is a poor excuse for anyone. The time is now and the means are here. A long series of five-year-plans looks painfully slow compared with the immediacy of human values that matter most...good parents, a high standard of parenthood well bred children, a fine family reputation, and an exemplary level of home life.

A high standard of parenthood has always been available and is ready right here and now for any parent that is lucky enough to see this light of truth. Let there be light. The call is for family service. Let it echo from heaven to earth.

Good parents are the greatest blessing a child can have. Here is reason for rejoicing. The increase of good parents can run far ahead of economic development. Now is optimism born eternal. For good parents show the way to raise up the life of all humanity.

When we are doing our part to raise the level of living...spiritual, ethical, and healthful as well as economic...and are encouraging good parents, we are devoting our attention to values that really matter. We are expressing our love for humanity, our belief in the perfectibility of mankind, and our faith in the ultimate triumph of truth and love. We are sharing in the fellowship and joy of meaningful life.

एक प्रथम उत्पन्न पुत्रको कैसे रखना है

प्रथम उत्पन्न पुत्र का लाभ महान् है। विश्वसनीय और साधारण मार्ग का अनुसन्धान है कि एक प्रथम उत्पन्न पुत्र सर्वत्र संसार में जीवन की समानता में उत्कृष्ट सुधार ला सकता है।

राष्ट्रीय लाभ

१. कुछ देश महाराजा की मृत्यु के बाद परम्परा द्वारा स्पष्ट उत्तराधिकारी का अपने राज्य में अविच्छिन्नता की रक्षा करते हैं। प्रथम उत्पन्न पुत्र इस पद्धति को दृढ़ करेगा यह एक विश्वसनीय मार्ग है। ऐसे देश इस पंक्ति के साथ वैज्ञानिक अन्वेषण को अच्छी तरह प्रचण्ड कर सकते हैं।

२. प्रसिद्ध देशों को राष्ट्रीय रक्षा के लिए प्रथम उत्पन्न पुत्र की अतिरिक्त मानवशक्ति के विश्वास के निमित्त खोज करने की आवश्यकता है। परवात् आकस्मिक घटनाओं से सैन्यबल नर कुल में बच्चे को बड़े सुडौलपन से पुनर्निर्माण कर सकता है। आगे उच्च आदेश प्रभावशाली कार्यवाही को विस्तृत कर सकता है और आगामी अतिरिक्त मानवशक्ति के विश्वास के साथ सीमित व्यय को बढ़ा सकता है। मानवशक्ति-समस्या इतनी गम्भीर है जो कनसे कम सुरक्षा आवश्यक का एक प्रतिशत का दसवाँ प्रथम उत्पन्न पुत्रको कैसे रखना है, के वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए अच्छी तरह दे देना चाहिए।

३. प्रथम उत्पन्न पुत्रको कस रखना है इसका एक विश्वसनीय और साधारण मार्ग का खोज देश के हितार्थ बृहत् परिवारों के पालनार्थ सहायता प्रदान करेगा। जनसंख्या के सहाराका मिथ्या हेतु कलई खोल देगा और स्पष्ट सत्य से बदनामी होगी जो जनसंख्या की अपेक्षा तेजीसे उत्पादन में वृद्धि हो रही है। मातृत्व-पितृत्व के स्तर में उन्नति जो प्रायः प्रथम उत्पन्न पुत्र के साथ होती है वह जीवन की समानता के सुधार में गति वृद्धि करेगा।

HOW TO HAVE A FIRST-BORN SON

The advantages of a first-born son are great. Discovery of a reliable and simple way to have a first-born son can bring remarkable improvement in the level of living throughout the world.

National advantages

1. Some nations maintain continuity in their government through succession by the heir apparent upon the death of the sovereign. A reliable way to have a first-born son will strengthen this system. Such nations may well intensify scientific research along this line.

2. Leading nations need to discover how to have a first-born son to assure extra manpower for national defense. Then armed forces depleted by casualties can be rebuilt from the large proportion of boys in the new generation. Furthermore the high command can expand effective actions and increase the allowable limits of expendables with assurance that additional manpower is forthcoming. The manpower problem is so serious that at least one tenth of one per cent of defense budgets might well be devoted to scientific research on how to have a first-born son.

3. Discovery of a reliable and simple way to have a first-born son will help to support large families for the benefit of a nation. Population resources fallacies will be exposed and discredited by the obvious fact that productivity is increasing even faster than the population. The rise in the standard of parenthood that often comes with first-born sons will also accelerate the improvement in the level of living.

पारिवारिक लाभ

१ प्रथम उत्पन्न पुत्र का जन्म परिवार के नामको बढ़ाने में सहायता करता है, पारिवारिक अवल सम्पत्तिको एक साथ रखने और पारिवारिक सम्पत्ति में सामाजिक समता के वाद के निर्माण के अवसर में उन्नति करता है ।

२ प्रथम उत्पन्न एक स्वाभाविक उत्पन्न नेता के पदको प्रदण करता है । नेतृत्वका गुण लड़की की अपेक्षा लड़के में सामान्यतः अधिक विद्यमान है । जब प्रथम उत्पन्न पुत्र है तब सबके लिए सर्वोत्तम है ।

३. पारिवारिक जीवन के स्वाभाविक मार्ग में माता बच्चोंको उत्पन्न करती है और पिता प्रतिदिन उपार्जन करता है । प्रथम उत्पन्न पुत्र भविष्य की रोट्टा में सहायक होता है और परिवार के कल्याण में उन्नति करता है ।

४. प्रथम उत्पन्न पुत्र का जन्म सन्तति-निरोधको अत्यन्त सरल करता है । संभवतः बन्ध्यापन की चिन्ता कम होती है । बच्चों के स्वास्थ्य का उचित प्रचार विश्वास के साथ व्यवहार किया जा सकता है । पुरुष सन्तानकी समस्या हो जाती है ।

५. प्रथम उत्पन्न पुत्र का जन्म-भ्राता-विहीन बच्चोंकी समस्याको हल करने में सहायता करता है । बहिन के बिना बच्चोंकी समस्या कम गंभीर है. यह पारवार के माप की उन्नति द्वारा हल की जा सकती है जो कमसे कम एक भविष्य में उपार्जन करनेवाला रखता है ।

६. प्रथम उत्पन्न पुत्र का जन्म एक बृहत् परिवारको संभवतः बनाने में सहायता करता है । एक बृहत् परिवार जो हार्दिक रूप से सभी लड़के हैं, वे एक शक्तिशाली परिवार के होने के योग्य हैं ।

आत्मिक प्रस्तुति

प्रथम उत्पन्न पुत्रके लिए आत्मिक उन्नति उचित मानसिक भावके सुधारमें हिस्सेदार होता है । पवित्र पुस्त-

Family advantages

1. The birth of a first-born son helps to carry on the family name, improves the chances for holding together the family estate, and builds family solidarity.

2. The first-born holds the position of a natural-born leader. Qualities of leadership are usually more important to a boy than a girl. It is all for the best when the first-born is a son.

3. In the natural way of family life the mother bears the children and the father earns the daily bread. A first-born son adds a future breadwinner and improves the chances for well-being of the family.

4. The birth of a first-born son greatly simplifies family planning. Anxiety over possible barrenness is relieved. Proper spacing of children for health may be practiced with confidence. The problem of a male issue is solved.

5 The birth of a first-born son helps to solve the problem of children without a brother. The problem of children without a sister is less serious. It can be solved by increasing the size of the family that already has at least one future breadwinner

6 The birth of a first-born son helps to make possible a large family. A large family that is nearly all boys is apt to be a strong family.

Spiritual preparation

Spiritual preparation for having a first-born son consists partly in development of the right mental

कोंका स्वाध्याय सहायक हो सकता है। प्रथम उत्पन्न पुत्रकी योग्यतामें दृढ़ विश्वास सफल साथी और उचित स्वभावके लिए श्रेष्ठ तैयारी है।

शिशु और बच्चेके ज्ञानकी रक्षा मौलिक है। यह जन्मसे पूर्व होनेवाली तैयारी, प्रसव, प्रसवोत्तर रक्षा और उसी प्रकार बच्चोंके स्वास्थ्यका उचित प्रसार सम्मिलित करता है।

स्वच्छता, धार्मिकताके निमित्त दूसरा है। गर्भाधानके पहिले सब समय इस महत्वपूर्ण व्यवस्थापर ध्यान देना चाहिए। जोड़ेंमेंसे एकके पूर्व सोडा पिघलाव (सोडियम बाइ कारबोनेट) से धोना पुत्रके जन्ममें सहायक हो सकता है (उत्तम माता-पिताकी सफलताकी कुञ्जी, जयदेव ब्रदर्स, बडौदा, १९५४, पृष्ठ २१ और २९)। सफलताकी कुञ्जी आत्मिक प्रस्तुतिके बड़े लम्बे वादविवादके लिए गतिशील होती है।

साधनसम्पन्न तैयारी

साधनसम्पन्न तैयारी अत्यावश्यक है। यह अनिरीक प्रयत्न के लिए निमन्त्रित करता है, इसका तात्पर्य कुछ आत्मत्याग हो सकता है परन्तु यह अत्यन्त प्रयत्न योग्य है। यह आशा सुरक्षित प्रसव, शिशु पहनाव, और अन्य आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति के लिए अनिवार्य है।

साधन सम्पन्न तैयारी सामान्यतः कुछ किरायती चाहता है। दोनों पति और पत्नी धनोपार्जन कर सकते हैं, पति के उपार्जन पर निर्वाह करना और पत्नी के उपार्जनको बचाना चाहिए। प्रथम उत्पन्न पुत्र सैकड़ों हजारों से भी अधिक प्रति वर्ष अनावश्यक रूपसे मरते हैं। जो व्यक्ति तैयारी में आवश्यक बलिदान के लिए इच्छुक नहीं है, वह प्रथम उत्पन्न पुत्र के रखने में अयोग्य है और कदाचित् बच्चेको नष्ट कर सकता है। ऐसी उत्तम प्रतिज्ञा के साथ एक महान् आशीर्वाद के दुःस्नानपर विचार करना है। निश्चय ही पर्याप्त तैयारी का लाभ प्रयत्न के योग्य है।

attitude. Reading sacred books may help. Firm belief in the ability to have a first-born son is excellent preparation for successful mating and the right spirit.

Knowledge of baby and child care is fundamental. This includes prenatal preparation, delivery, postnatal care and even proper spacing of children for health.

Cleanliness is next to righteousness. Important at all times this canon should be observed starting before conception. Washing with soda solution (sodium bicarbonate) before mating may favor the birth of a son. (Good Parents **Keys to Success**, ¶ Jaideva Brothers, Baroda, 1954, pages 21 and 29) **Keys to Success** goes to considerable length in discussing spiritual preparation.

Resourceful preparation

Resourceful preparation is vital. It calls for extra effort, it may mean some self denial, but it is very worth while. The hope chest may well include the necessities for safe delivery, baby clothes, and other supplies.

Resourceful preparation usually requires some saving. Both husband and wife may be gainfully employed, live on the earnings of the husband, and save the earnings of the wife. More than a hundred thousand first-born sons die needlessly every year. Persons that are unwilling to make the necessary sacrifice in preparation are unworthy to have a first-born

son and are likely to lose the child. Think of this tragic end to so great a blessing with such glorious promise. Surely the benefits of adequate preparation are worth the effort.

सम्बन्धी जनोका समय

प्रथम उत्पन्न पुत्रके जोड़ेके लिए आदर्श समय स्त्रियोंके अण्ड-रज-के बादके दिन हैं। यह परिणाम सत्यपर आधारित है कि कृत्रिम गर्भाधानसे उत्पन्न शिशु ६० प्रतिशत लड़के होते हैं। कृत्रिम गर्भाधान सामान्यतः स्त्रियोंके अण्ड-रजके पश्चात् शीघ्रही स्थान लेता है।

Timing of relations

The day after ovulation is the ideal time for mating to have a first-born son. This conclusion is based on the fact that sixty per cent (60%) of the babies born from artificial insemination are boys. Artificial insemination usually takes place shortly after ovulation.

निम्नलिखित पट्टी प्रथम उत्पन्न पुत्रके संगर्भके लिए आदर्श समयकी समीपता प्रदान करता है :—

मासिक धर्ममें दिनकी संख्या.

प्रथम उत्पन्न पुत्रके
जोड़ेके लिए दिन

२४ दिन

१२ वें दिन

२५ „

१३ „

२६ „

१४ „

२७ „

१५ „

२८ „

१६ „

२९ „

१७ „

३० „

१८ „

३१ „

१९ „

३२ „

२० „

The following table gives an approximation of the ideal time for mating to have a first-born son :
NUMBER OF DAY FOR MATING
DAYS IN TO HAVE A
MONTHLY COURSE FIRST-BORN SON

24 days 12th day

25 days 13th day

26 days 14th day

27 days 15th day

28 days 16th day

29 days 17th day

30 days 18th day

31 days 19th day

32 days 20th day

ऋतुसावका प्रथम दिन मासिक धर्मका प्रथम दिन जैसा गिना जाता है। कमसे कम दस दिनोंका संयम जोड़ेके लिए पूर्ववर्ती होना चाहिए।

The first day of menstruation is counted as the first day of the monthly course. At least ten days of abstinence should precede the mating.

दम्पतीको गर्भधारण के लिए प्रथम प्रयत्न में असफल होनेपर निरुत्साहिताकी उशेक्षा करनी चाहिए। कभी कभी बहुत महीने आवश्यक हैं। आशावादका उचित उत्साह प्रथम उत्पन्न पुत्र के गर्भधारण के लिए सहायक है।

Married couples should avoid discouragement over failure to conceive at the first try. Many months are sometimes necessary. The right spirit of optimism is helpful to conceive a first-born son.

स्त्रियोंके अण्डरज के पहिले संयम का विवरण और स्त्रियोंके अण्डरज के समय में धारितकी एक विशेष पद्धति 'उत्तम माता-पिताकी सफलताकी कुञ्जी' (जयदेव ब्रदर्स, बड़ौदा, १९५४) पृष्ठ २३ से २७ में विवृत किया गया है ।

वैज्ञानिक अन्वेषण की आवश्यकता

प्रथम उत्पन्न पुत्रको कैसे रखना है इस के उचित प्रसार का वैज्ञानिक अन्वेषण के द्वारा लाभ प्राप्त करना चाहिए । वैज्ञानिकोंने बहुत क्षेत्रों में ऐसा उत्तम खोज किया है जो आशावाद का अच्छा कारण है । लड़केको उत्पन्न करनेवाला वीर्य अधिक लम्बा होता है जो अनुवीक्षण यन्त्र से देखा जा सकता है । गर्भाशान के पूर्व उनकी वृद्धि के प्रतिशत का ध्यान निकट भविष्यमें संभाव्य प्रतीत होता है । यह प्रथम उत्पन्न पुत्रके लिए बहुत वैज्ञानिक प्रवेशोंमेंसे केवल एक है ।

प्रथम उत्पन्न पुत्रके लिए विश्वसनीय और साधारण मार्गकी खोज मानवताके लिए उत्तम उन्नति करेगा । मातृत्व-पितृत्वका स्तर और इसके साथ जीवनकी समानता शीघ्रतासे उन्नति करेगी । इस खोजपर विश्वासके लिए कारण है वह बीसवीं शताब्दीमें मानवताके निमित्त महान् आशीर्वादोंमेंसे एक होगा ।

The details of abstinence before ovulation and a special method of determining the time of ovulation are discussed in Good Parents **Keys to Success** (Jaideva Brothers, Baroda, 1954) pages 23 to 27.

Need of scientific research

The advantages to be gained warrant expansion of scientific research on how to have a first-born son. Scientists have made such remarkable discoveries in many fields that there is good reason for optimism. The boy-producing spermatozoa are large enough to be observed with a microscope. Means of increasing their percentage concentration before insemination seem probable in the near future. This is only one of many scientific approaches to a first-born son.

Discovery of a reliable and simple way to have a first-born son will bring remarkable progress to humanity. The standard of parenthood will rise rapidly and with it the level of living. There is reason to believe this discovery will be one of the greatest blessings to humanity in the twentieth century.

बच्चोंके स्वास्थ्यके लिए उचित प्रसार

धर्म, पारिवारिक जीवनके लिए एक दृढ़ नींव निर्माण करता है। धर्मनिष्ठ और समर्पण किया हुआ उत्तम माता-पिता एक बच्चेको रखनेके लिए महान् आशीर्वाद हैं। वह आध्यात्मिक आशीर्वाद मातृत्व-पितृत्वके उच्च स्तरसे मानवताके द्वारा फैलता है।

जो माता-पिता हैं, उपरोक्त सभी अपने बच्चोंको निर्माण करते हैं। माता-पिता, वंश परम्परा प्राप्त गुण और बच्चोंको शीघ्रही आवश्यक साथ दोनोंही देते हैं। उत्तम माता-पिता, मातृत्व पितृत्व का एक उच्चस्तर, बच्चोंको अच्छी शिक्षा देना, एक उत्तम पारिवारिक प्रतिष्ठा, और गृह-जीवन की अनुकरणीय समानता, मानव का सबसे उपयोगी विषय है।

मूल शिक्षा उचित देनी चाहिए यह तरुण व्यक्तियोंको मातृत्व-पितृत्व का एक उच्चस्तर तैयार करता है। अन्यथा यह आधार सम्बन्ध के अतिरिक्त कुछ है। बच्चों के स्वास्थ्यका उचित प्रसार मौलिक है।

बच्चोंके स्वास्थ्य का उचित प्रसार पद्धति की अपेक्षा अधिक परिणाम है। कुछ माता-पिता ऐसे रूपसे साथी होते हैं कि उचित प्रसार उनके आशीर्वाद के साथ एक स्वाभाविक परिणाम होता है। परन्तु अन्य बन्ध्यापनपर विजय पाने के प्रयत्न में एक कठिन वैज्ञानिक समस्या का सामना करते हैं। उत्तम माता-पिता पद्धति की विवादे दूर रहते और परिणाम से लाभ उठाते हैं। विवाह विस्तार से एक झगडा है। विवाह के कुछ लम्बे बंधनोंको दम्पती द्वारा निषेध रूपसे गुप्त वितरण कर लिए जाते हैं। पूर्ण विवाह पवित्र और अबाधित है। निःसन्देह रूपसे अधिकृत पुरुषोंको इससे कष्ट है जा माता पिता अपनी इच्छा के विपरीत निश्चय करते हैं वही शान्त दृढ़ निश्चय है, जिसको वे मानते हैं, यद्यपि उनके सर्वोत्तम ज्ञान अस्वीकार न करने के कारण हैं। उत्तम माता पिता के

PROPER SPACING OF CHILDREN FOR HEALTH

Religion builds a firm foundation for family life. GOOD PARENTS, devout and dedicated, are the greatest blessing a child can have. That spiritual blessing spreads through humanity by a high standard of parenthood.

Parents above all make their children what they are. Parents provide both the heredity and the important early environment of children. The human values that matter most are good parents, a high standard of parenthood, well bred children, a fine family reputation, and an exemplary level of home life.

Basic Education is all right provided it prepares young people for a high standard of parenthood. Otherwise it is anything else but basic. Proper spacing of children for health is fundamental.

Proper spacing of children for health is a RESULT more than a METHOD. Some parents are so perfectly mated that proper spacing is a natural result with which they are blessed. But others face a serious scientific problem in trying to overcome sterility. Good parents will avoid controversy over method and attain the result. Marriage is largely a private affair. Some of the strongest ties of matrimony are the secrets shared exclusively by husband and wife. Perfect marriage is sacred and inviolate. Even authoritarians have trouble invading this sanctuary ...

पास योजनाएँ होती हैं और समस्त इतिहास में सर्वत्र अपने बच्चोंका कभी कभी अत्यावश्यक परिस्थितियों में प्रबन्ध कर लेते हैं ।

राष्ट्र में जलवायु, सम्पत्ति और सुधार विस्तृत रूप में बदल जाते हैं । संस्कृति असंख्य भागों में आवश्यक विभिन्नताएँ प्रकट करती हैं । बहुत बहुरूपदर्शक परिवर्तनों द्वारा जारहे हैं । यद्यपि विरोधात्मक रूपसे कुछ पुरानी प्रमाणिक संस्कृतियाँ उन्नति के साथ कुछ परिवर्तन का विरोध प्रकट करती हैं । तथ्य बना रहता है, उत्तम माता-पिता अपने बच्चोंको प्रसन्न रखते हैं और ये सभी परिस्थितियों में निरन्तर सत्य पाए जाते हैं ।

मातृत्व-पितृत्व का एक उच्च स्तर आर्थिक, नैतिक और स्वास्थ्य और आध्यात्मिक रूपसे मानवताको दृढ़ करता है । मातृत्व-पितृत्व का एक उच्च स्तर अनेक आर्थिक सिद्धान्तों के बाहर उषाकालको नष्ट कर देता है । जनसंख्या की युक्तियों भ्रान्तियों साधारण रूपसे बच्चों के जीवन की रक्षा की कलाई खोलती हैं । देश में रहने की समानता की सूची अपने बच्चों की प्रसन्नता के साथ परिवारों का समूह है जो देश बच्चों के स्वास्थ्य के उचित प्रसार के लिए उत्साहित करते हैं वे नागरिकों की शक्ति की उन्नतिके लिए योग्य बनाते हैं जो महत्वपूर्ण उन्नति करते और आर्थिक लाभ प्राप्त करते हैं ।

इसे नागरिक परिवर्तन में सम्पूर्ण संस्कृति को दृढ़ करते हैं और देश के लिए आर्थिक शक्ति का निर्माण करते हैं । आर्थिक उन्नति शान्तिपूर्ण उपपन्न द्वारा निजका उत्पादन और स्वास्थ्य संबन्धि के साथ समुचित विस्तार से होता है ।

parents that are convinced against their will are of the same conviction still, which they will adhere to, yet disown for reasons to themselves „best known. Good parents have always planned and provided for their children throughout all history, sometimes under extreme circumstances.

Nations vary widely in climate, resources, and development. Cultures reveal extreme differences in numerous ways. Many are going through kaleidoscopic changes. Yet paradoxically the stability of some long established cultures makes them seem to resist any change, including improvement. The fact remains : good parents that keep their children alive are found in all these environments as eternal verities.

A high standard of parenthood strengthens humanity economically, ethically, and healthfully as well as spiritually. A high standard of parenthood can blast the daylights out of many economic theories. Population-resources fallacies have been exposed by simply saving the lives of children. An index of the level of living in a nation is the percentage of families with all of their children for health are enabled to develop vigorous citizens that promote material progress and gain economic advantages. Such citizens in turn strengthen the entire culture and build up economic power for the nation. Economic advancement becomes largely self generating by peaceful means and cumulative with healthy growth.

पाँच प्रतिशत से कम शिशुओं की मरणशीलता के अनुपात के साथ किसी देशने प्रथमाक्रमण पर युद्ध नहीं किया है। वह तथ्य ऐसा पवित्र महत्वपूर्ण है कि पुनरुक्ति उत्पन्न करता है। पाँच प्रतिशत के कम शिशुओं की मरणशीलता के अनुपात के साथ किसी देशने प्रथमाक्रमण पर युद्ध नहीं किया है।

बच्चों के स्वास्थ्य के लिए उचित प्रसार उत्तम माता-पिता को प्राणाधार है। सौभाग्यवश प्राकृतिक पद्धतियाँ पर्याप्त हैं। प्राकृतिक पद्धतियों की सावभौमिक नींव सब के लिए स्वतन्त्र हैं। धनाढ्य पुरुष जैसे दरिद्र व्यक्ति भी लाभ उठाते हैं। प्राकृतिक पद्धतियाँ ताजी हवा और सूर्य प्रकाश के समान सार्वभौमिक आशीर्वाद हैं।

बच्चों के स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक पद्धतियों का प्रसार जगत में ईश्वरीय रक्षा और नैतिकता का उत्तम उदाहरण निर्माण करता है। प्राकृतिक पद्धतियाँ, धर्म द्वारा प्रमाणित सबके लिए उपलब्ध हैं और ऐसा स्पष्ट और साधारण है कि बहुत से माता-पिता उनके स्वतन्त्रतापूर्वक पता लगाते हैं। अधिकृत पुरुष गर्भ निरोध के विरुद्ध के भारी अर्थदण्ड और कारावास के साथ विधान बनाते हैं। सर्वोत्तम माता-पिता अपने बच्चों के लिए योजना और प्रबन्धको चालू रखते हैं। स्वभावतः ! सर्वोत्तम माता-पिताओंने कैसे रहना है, इसको प्रमाणित किया है। बच्चों के स्वास्थ्य के लिए उचित प्रसार उनका जन्मसिद्ध अधिकार, पवित्र और अविच्छेद्य है।

बच्चों के स्वास्थ्य के प्रसार की प्राकृतिक पद्धतियाँ वैयक्तिक बहुमूल्यता को सिद्ध करती हैं। जो देश प्राकृतिक पद्धतियों का व्यवहार करते हैं उनको अपने कष्टों के प्रबन्ध में समर्थ अकेला देश होना चाहिए। जो व्यक्ति इन पद्धतियों को काम में लाते हैं वे प्रकृति के अपने आधिपत्य में विश्वास और आत्म-सत्कार के साथ रहते हैं।

No nation with an infant mortality rate of less than five percent has ever fought an aggressive war. That fact is so spiritually significant it bears repeating: No nation with an infant mortality rate of less than five percent has ever fought an aggressive war.

Proper spacing of children for health is vital to good parents. Fortunately natural methods are adequate. The universal basis of natural methods is that they are free to all. Poorest persons can benefit as well as millionaires. Natural methods are universal blessings like fresh air and sunshine.

Natural methods of spacing children for health constitute an excellent example of providence and morality in creation. There are natural methods available to all, approved by religion, so obvious and simple that many parents discover them independently. Authoritarians enact laws with heavy fines and imprisonment against contraceptives. The best parents continue to plan and provide for their children. Naturally ! The best parents have always demonstrated how to live. Proper spacing of children for health is their birthright, sacred and inalienable.

Natural methods of spacing children for health confirm the preciousness of the individual. A nation that practices natural methods must be a nation of individuals capable of managing their confidence and self-respect in their mastery of nature.

आप अपने बच्चों के स्वास्थ्य को उचित रूपसे प्रसार करने में योग्यताके साथ प्रफुल्लित हैं। आप जिन किलोंकी प्राप्तिके स्वप्न देखते हैं उन्हें मनके लड्डू फोड़नेको कभी नहीं प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु आप सूर्य प्रकाशमें बहुत बच्चों को खेलते हुए अंगूर के बेलों से ढके हुए कुटीर के अधिकारी हो सकते हैं। आपकी सभी उचित आकांक्षाएँ प्राप्त हैं।

उचित प्रसारकी जो पद्धतियाँ सर्वोत्तम हैं, उनमेंसे आप सबसे बढ़िया अपने धार्मिक लाभ और आर्थिक स्थितिके साथ एकको चुनकर पसन्द कर सकते हैं। इसलिए यहाँ बहुतसी पद्धतियोंका वर्णन किया गया है जो आपकी इच्छाकी पूर्तिमें सहायक है।

कुछ माता-पिता बच्चोंके विस्तारकी अनेक पद्धतियोंके ज्ञानको व्यर्थ अनुभव कर सकते हैं। वे इनीगिनी पद्धतियोंको जानते और सन्तुष्ट हैं तथा वे आनन्दित हैं। वे अधिकको अच्छी तरह त्यागनेकी इच्छा करते हैं।

उचित प्रसारके नूतन ज्ञानको आपके मस्तिष्कमें बन्द करनेमें भय है। जैसी आप जीवन-यात्रा करते हैं उनमें आप परिवर्तन करते हैं। आपकी अनभिज्ञता कुछ भविष्य कालमें कष्टका कारण हो सकती है और आपकी प्रसन्नतामें हानि पहुँचा सकती है। उचित प्रसारके विषयमें सभीको जाननेके लिए ऐसा साधारण सुरक्षित मार्ग है जो आपके ज्ञानको आपके विवाहके आनन्दमें वृद्धि करनेमें उपयोगी है। जब आपको भली भाँति सूचित कर दिया गया है कि आप अपने लिए सबसे अच्छा कर रहे हैं। तब आप सत्यतः निश्चित होंगे।

बच्चोंके स्वास्थ्य के लिए प्रसारमें असफलता परिवार में संभाव्य कष्ट के प्रथम चिन्हों में से एक है। जो व्यक्ति स्थिति को बन्द करते हैं उन्हें शीघ्र ही उचित प्रसार के लिए बहस करके कार्यवाही करनी चाहिए और जानना चाहिए कि परिवार में समस्या है कि

You are blessed with the ability to space your children properly for health. You may never get those castles you dreamed about. But you can own that vine-covered cottage with as many children as you want playing in the sunshine. All of your reasonable desires are attainable.

The methods of proper spacing that are best for you are as a rule the ones you like best chosen from those that accord with your religious beliefs and economic position. Therefore many methods are described here to help you make your choice.

Some parents may feel that knowledge of many methods of spacing children is superfluous. They have learned a few methods that are satisfactory and they are happy. They are inclined to let well enough alone.

There is danger in closing your mind to new knowledge of proper spacing. As you travel through life you change. Your ignorance may cause you trouble at some future time and mar your happiness. The safe way is so simple ... to learn about proper spacing and apply your knowledge to increase the happiness of your marriage. You will be rightly sure you are doing your best when you are well informed.

Failure to space children properly for health is one of the first signs of potential trouble in a family. Persons close to the situation should act promptly to discuss proper spacing and learn whether there

नहीं। समय पर जान लेनेपर प्रायः सभी पारिवारिक समस्याओं को हल किया जा सकता है।

अनेक व्यक्ति विवाह के सात या आठ मास के पश्चात् शिशु के जन्म के विषय में व्यर्थ बातचीत करते हैं। इसलिप पुरातन प्रेमी नवीन विवाहित व्यक्ति गर्भाधान के लिए प्रयत्न करने के पूर्व विवाह के कमसे कम बहुत मास के पश्चात् प्रतीक्षा करेंगे। कभी कभी विवाहित जोड़े प्रथम पुत्र उत्पन्न होनेकी तैयारी में कुछ वर्षों के लिए पुनः उत्पत्ति बन्द करना उचित अनुभव करते हैं। पति और पत्नी दोनों लाभदायक काम में लगा सकते हैं, पति के उपार्जन पर रहना चाहिए और पत्नी का उपार्जन बचाना चाहिए।

सैंकड़ों हजारोंसे अधिक प्रथम उत्पन्न पुत्र प्रतिवर्ष अनावश्यक रूपसे मरते हैं। जो व्यक्ति तैयारीमें आवश्यक बलिदानके लिए इच्छुक नहीं हैं वे प्रथम उत्पन्न पुत्रको रखनेमें अयोग्य हैं और बच्चेको नष्ट कर देते हैं।

बच्चोंके स्वास्थ्यके लिये उचित प्रसार अधिकतर परिस्थितियों पर निर्भर करता है जो साधारणतया कठिन है। माता-पिताके साथ ठीक ठीक उत्तरदायित्व स्थिर रखता है और प्रत्येक परिवारकी अपनी विशेष स्थिति होती है। नियमानुसार उत्तम माता-पिताकी योग्यताको सिद्ध करनेके लिए प्रथम बच्चे और द्वितीय बच्चेके बीचमें केवल कुछ वर्षोंका अन्तर होना चाहिए और एक बच्चेकी पारिवारिक समस्याका खतरा टल जाय।

उचित प्रसारका ज्ञान बुद्धिको बढ़ाता है। विविध पद्धतियोंकी आवश्यकता मनुष्य जीवनके अन्तरको ठीक करनेके लिए विस्तारपूर्वक जाने जाते हैं। परन्तु विविध पद्धतियोंकी आवश्यकता प्रत्येक माता-पिताके जीवनमें विभिन्न कालमें कम समझी जाती है। परिस्थितियोंका एक पूर्ण

are problems in the family. Nearly all family problems can be solved when recognized in time.

Many persons gossip about the birth of a baby seven or eight months after a marriage. Therefore conservative newlyweds will wait at least several months after marriage before they try for conception. Sometimes married couples may find it advisable to postpone reproduction for a few years in order to prepare for a first-born son. Both husband and wife may be gainfully employed, live on the earnings of the husband, and save the earnings of the wife.

More than a hundred thousand first-born sons die needlessly every year. Persons that are unwilling to make the necessary sacrifice in preparation are unworthy to have a first-born son and are likely to lose the child.

Proper spacing of children for health depends so much on circumstances that generalization is difficult. The responsibility rests squarely with the parents and each family has its own special conditions. As a rule only a few years should be spaced between the first child and the second child to prove ability as good parents and avoid risks of one-child-family problems.

Knowledge of proper spacing adds to wisdom. The need of various methods to suit differences in human beings is widely recognized. But the need of various methods at different times in the life of every parent is

मूल्यावधारण जो विभिन्न पद्धतियोंको निर्मात्रित करती है वह आपके जीवनको सहायता प्रदान करेगी। उदाहरण के लिए जब वन्ध्यत्व और एक पुत्र होने पर विजय प्राप्त करने के प्रयत्न में पक्षित से भिन्न ठग शीघ्र बाद का शल्यक्रिया द्वारा प्रसव है यहाँ बातचीत विवाहित मैत्री में प्रेमयुक्त आशीर्वाद लाता है।

संभोग-संयम

दूसरों की सेवामें अपने जीवन को समर्पित करते हुए भक्तोंद्वारा संभोग संयम के अनेक बहुमूल्य उदाहरण धर्म उपस्थित करता है। दस लाख धार्मिक व्यक्तियों ने अपने जीवन भरके लिए कुर्वारपन को धारण किया है। उचित प्रसार के प्रयोजन की आवश्यकता बहुत कम गम्भीर है। शिशुजन्म के पश्चात् संभोग संयम की दो अथवा एक ऋतु सामान्यतः जब मध्यचक्र संयम द्वारा अनुसरण किया जाय तो बच्चों के स्वास्थ्यके प्रसार को विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त है। यदि यह अत्यधिक कहा जाता है तो आप प्रत्येक मासिक धर्मके बाद एक पक्षके लिए संयम परिमित कर सकते हैं। मासिक धर्मके दस से बारह दिन तक कमसे कम मध्यचक्र संयम है। सहस्रों धर्मनिष्ठ और समर्पित माता-पिता इस साधारण प्राकृतिक पद्धति द्वारा उचित रीतिसे अपने बच्चोंके प्रसार में सफल होते हैं।

संभोग संयमका सिद्धान्त स्पष्ट है : पुनः जननके लिए समागम रोक रखना चाहिए। अनुगमियोंको महत्त्वहीन नैतिक के त्याग विराग अथवा गर्भाधान के बिना उत्तेजना के निषेध के तात्पर्य के लिये अशुद्ध अर्थ का त्याग करना चाहिए। सिद्धान्त का तात्पर्य साफ साफ है कि जब उत्तम माता-पिता बनने की इच्छा पति और पत्नी दोनों में हो और पवित्र विवाह में शिशु के जन्म की योजना की जाती है तब लिंग का भग में प्रवेश (मैथुन) होना, चाहिए। यह कार्य पवित्र है और कोई अन्य व्यवहार पवित्र वस्तुओं का अनादर है।

less understood. A full appreciation of the circumstances that call for various methods will help you through life. For example the method immediately following a Caesarean is different from the method when trying to overcome sterility and have a son. Here understanding brings cherished blessings in married harmony.

Sexual abstinence

Religion offers many glorious examples of sexual abstinence by the devout in their dedicated lives of service to others. Millions of the religious have adopted celibacy or virginity for their entire lives. The requirement for purposes of proper spacing is much less severe. A season or two of sexual abstinence after childbirth is usually sufficient to assure healthy spacing of children when followed by midcycle abstinence. If this is asking too much you may limit your abstinence to the fortnight following each menstruation. The minimum is midcycle abstinence from the tenth to the twentieth day of the monthly course. Thousands of devout and dedicated parents succeed in spacing their children properly by this simple natural method.

The principle of coital abstinence is clear: Intercourse should be reserved for reproduction. Followers should avoid misinterpreting this to mean a denial of ethical petting or the prohibition of orgasm without conception. The principle means simply that penis should be put in vagina only when the birth of a baby is planned in holy wedlock by both husband and wife that want to be good parents. The act is sacred and any other use is sacrilege.

माता-पिता का विश्वास केवल काम का तात्पर्य पुनःजनन है और उनका विश्वास काम में लाना चाहिए। जबतक वे यथार्थ में दूसरे बच्चे की इच्छा न करें तबतक उनको लैंगिक संबंध पर संयम करना चाहिए; तब उनके मध्यवर्क में स्त्री के डिम्ब रज के समय तक अपने सम्बन्ध को रोकना चाहिए। और अधिक उनको रजोविरति के बाद पूर्ण रूपसे लैंगिक सम्बन्ध पर संयम करना चाहिए।

सम्भोग

सम्भोग का तात्पर्य है प्रवेश क्रिया के सिवाय संभोग का संपूर्ण अनुभव। यह लैंगिक संयम, प्रवेश क्रिया से संयम की एक रीति है। इस सम्बन्ध में रुकावट संभोग अथवा अर्गुण से भिन्न होता है। संभोग अन्य प्राकृतिक पद्धतियों की अनेक कठिनाइयों पर संभोग विजय पाता है। कुछ माता-पिताओं ने अपने विवाहित जीवन को इस मार्ग द्वारा प्रारम्भ किया है।

नैतिक निग्रह, लयानुगत व्यवस्थापन, कामस्वास्थ्य, मध्यवर्क संयम बच्चों के स्वास्थ्य-प्रसार की अन्य प्राकृतिक पद्धतियाँ हैं। प्राकृतिक पद्धतियों के समालोचकों को मन में सहन करना चाहिए कि दस लाख उत्तम सच्चे माता-पिताओं को बहुत कम पसन्द है। साधारण सत्य है कि प्राकृतिक पद्धतियों का अधिक प्रचलन सर्वत्र समस्त इतिहासों में है और अर्भातक विश्व के अनेक भागों में विस्तार से व्यवहार की जाती हैं।

कम माता-पिताओं का विश्वास काम के प्रासिद्ध कार्य में है जो आनन्द निकेतन में पिता व माता की रक्षा करता है और उनके बच्चों का आत्मिक और आरोग्य जीवन की रक्षा में सहायता करेगा। ऐसे माता पिताओं को अपने विश्वास का व्यवहार करना चाहिए। उनको विश्वासी, आज्ञाकारी, प्रत्येक दूसरे के लिए सच्चा, प्रत्येक दूसरे के लिए दयालु होना चाहिए, प्रेम प्रदर्शित

Parents that believe the only purpose of sex is reproduction should practice their belief. They should abstain from sexual relations until they sincerely want to have another child. Then they should confine their relations to the time of ovulation during the midcycle. Furthermore they should abstain from sexual relations completely after menopause.

Coitussex

Coitussex means going through all the experience of coitus except penetration. It is a form of sexual abstinence, abstinence from penetration. In this respect it differs from coitus interruptus or withdrawal. Coitussex overcomes many of the difficulties of other natural methods. Some parents have begun their married life in this way.

Moral restraint, rhythmic regulation, sex hygiene, and midcycle abstinence are other natural methods of spacing children for health. Critics of natural methods should bear in mind that millions of good honest parents have very little choice. The simple truth is that natural methods have been very prevalent throughout all history and still are widely used in many parts of the world.

A few parents believe the important function of sex is to keep father and mother together in a happy home that will help to save the lives of their children, spiritually and healthfully. Such parents should practice their belief. They should be faithful, loyal, and true to each other, please each other, show affection,

करना चाहिए। पारस्परिक आनन्द दो, जब इच्छा करें तब प्रत्येक दूसरों को संतोष दो, प्रसन्नता में भाग लो, और प्रत्येक दूसरे को आनन्दित करो। जो बंधन बाँधा जाता है वह आशीर्वाद पूर्वक होना चाहिए।

गर्भ-निरोध अथमाजन्म-निग्रह

जन्म-निग्रह का तात्पर्य गर्भ-निरोध है जो धर्म की अनेक शाखाओं द्वारा प्रमाणित है पर हानिकारक है। गर्भनिरोध में द्रव्य व्यय होता है, एक दरिद्र व्यक्तिकी अपेक्षा अधिक लोग कभी कभी व्यय कर सकते हैं। वे असुविधाजनक हैं और विवाहित प्रेम की प्राकृतिक स्वच्छन्दता को कलङ्कित करते हैं। समस्त मध्यचक्र में, केवल थोड़े दिन हैं जब कि गर्भ-निरोध हो सकता है, और तब उनी क्षण सर्वोत्तम गर्भ-निरोध असफलों में बीस के लिए एक अवसर है। गर्भ-निरोध सामान्यतः उचित अनावश्यक हानिकारक वस्तु है तिस पर भी वे सर्वदा खतरनाक अविश्वसनीय हैं। गर्भ निरोध में असफल इच्छारहित शिशुओं अथवा अपराध सम्बन्धी गर्भपात का मार्ग प्रदर्शित कर सकते हैं। गर्भ-निरोध में आवश्यकता से अधिक अविश्वास और अनुचित विश्वास द्वारा वर्णसङ्कर गर्भों की लज्जास्पद संख्या में वृद्धि हो सकती है। व्यभिचार, परस्त्रीगमन, पाप, अनैतिक, और पारिवारिक जीवन के लिए घातक वैसेही अवैधानिक हैं। गर्भ निरोध ही केवल इन पापों को मनुष्य जाति की निकृष्टतर कामुकता को सम्पादन करती हैं।

जन्म निग्रह पद्धतियों और दलीलें उनके पक्ष में इतनी प्रसिद्ध हैं कि उनपर वाद-विवाद यहाँ अनावश्यक है। शिक्षित व्यक्ति कठोर बीमारी को स्वस्थ करने में रोग निवारण सम्बन्धी तात्पर्य के लिए सूचना प्राप्त कर सकते हैं।

सुरक्षा विनियम

छिद्रान्वेषण के सामना में बच्चों के प्रसार की पद्धति धर्म की विजय की प्रतिनिधित्व करती है। पद्धतियों वैज्ञानिक अन्वेषण के लाभ के बिना धार्मिक विश्वास के

give mutual joy, satisfy each other when desired, share delights, and make each other happy. Blessed be the tie that binds.

Contraception or birth control

Birth control meaning contraception is approved by several branches of religion but has disadvantages. Contraceptives cost money, more than a poor person can sometimes afford. They are inconvenient and detract from the natural spontaneity of married love. There are only a few days, all in the midcycle, when conception can occur and then even the best contraceptives have one chance in twenty of failure. Contraceptives are usually just an unnecessary nuisance. Nevertheless they are always dangerously unreliable. Failure of contraceptives can lead to unwanted babies or criminal abortions. The disgraceful number of illegitimate pregnancies may even be increased by unwanted belief and overconfidence in contraceptives. Fornication and adultery are sinful, immoral, and destructive of family life as well as illegal. Contraceptives only make these sinful lusts of the flesh worse.

Birth control method and arguments in their favor are so familiar that discussion here is unnecessary. Qualified persons can obtain information for therapeutic purpose in the cure of serious disease

Rhythmic regulation

The rhythm method of spacing children represents a triumph of religion in the face of criticism. This method was tried for years on

आधार पर वर्षोत्तक प्रयत्न की गई थीं। तथ्य की बात है दिमागी छिन्नान्वेषी इसकी प्रमुखता और हास्यास्पद से सचेत थे। तथापि दस लाख विश्वासी लैंगिक संभोग के विनियम के विश्वास में लगे रहे और उनमें से एक महान् अनुपात इसे सन्तोष प्रद पाया। वैज्ञानिक अन्वेषण महिलाओं के मासिक धर्म अथवा रक्तस्राव के पाँच दिन पूर्वक्रमिक को अप्रजनन काल का जीवन प्रमाणित करते हैं। दूसरी निरन्तर सत्यता निश्चित कर दी गई थी।

सुरक्षा पद्धति दूरदर्शिता की उत्तेजना रखती है। दूसरे मास के लिए साधारण तिथिपत्र कैलेंडर लें और मासिकधर्म के एक समस्थान पंक्ति खींचें। खड़ी पंक्तिके साथ मासिक धर्मका अन्तिम चिन्ह ठीक दिन होगा। जब परिणाम प्रायः समस्त जोड़ चिन्होंके साथ एक मासमें कमसे कम तीन घटाव चिन्होंके साथ है, आप एक दक्ष भविष्यवक्ता हैं और बच्चांक स्वास्थ्यके प्रचारकी इस पद्धतीके प्रयोग करनेके लिए तैयार होना चाहिए।

नैतिक निग्रह

विवाहित प्रेममें नैतिक निग्रह सहयोगका एक सत्य उत्साह है जो पुनः सन्तानोत्पत्ति योजना और लैंगिक जीवनके आनन्दके बीचमें स्पष्ट भेदताको निर्माण करती है। पति और पत्नीकी यह निश्चित समझ होती है कि उनका प्रेम कब आनन्द-प्राप्तिके लिए और कब सन्तानोत्पत्तिके लिए होता है। जब माता-पिता दोनों परिवारमें श्रद्धाकी इच्छा सचाईके साथ करते हैं तब केवल नैतिक निग्रहके अनुसार बच्चे उत्पन्न होते हैं।

the basis of religious belief without the benefit of scientific research. As a matter of fact, intellectual critics were quick to ridicule the rhythm and emphasise its limitations. Nevertheless millions of the faithful continued to trust in rhythmic regulation of sexual intercourse and a large proportion of them found it very satisfactory. Scientific investigations finally verified the existence of an infertile time for women of around five days preceding menstruation or bleeding. Another eternal verity was confirmed.

The rhythm method has the excitement of forecasting. Take an ordinary calendar for next month and draw a horizontal line through every day of expected menstruation. Later mark each actual day of menstruation with a vertical line. When the result is nearly all plus signs with less than three minus signs a month, you are an expert forecaster and ready to apply this method of spacing children for health.

Moral restraint

Moral restraint in married love is a true spirit of cooperation, making a clear distinction between sex life for pleasure and planned reproduction. It is a definite understanding by husband and wife of when their love is for relaxation and when it is for conception. Children are born according to moral restraint only when both parents earnestly desire to raise a family.

नैतिक निग्रह की पद्धति में अनेक परिवर्तन हैं। जबतक व्यक्ति परिवार के व्यय को जुटा सकता है तब तक विवाह के विलम्ब में एक परिवर्तन केवल पवित्र कल्याण है। असादृश्य परिणाम भारतीय पद्धति है (गुड पेरेन्ट्स कीज टू सक्सेस जयदेव ब्रदर्स, बडोदा १९५४, पृष्ठ ४०) अतिरिक्त बच्चे की आकांक्षा करनेवाले विवाहित जोड़े के लिए उचित है। भारतीय पद्धति का इसलिए नाम था कि कुछ कठिनाइयों के कारण वह मार्ग उस पद्धति को हल करने में सहायता देता था। भारतीय पद्धति स्वतन्त्र, साधारण, और सबके लिए प्राप्य है, महीने के प्रत्येक दिन में संभवतः मनोरंजन करती है और पुत्र के जन्म में सहायता देती है। तथापि नैतिक निग्रह की अन्य पद्धतियाँ निरोधक-चिकित्सा और कामजनित स्वास्थ्य के साथ मध्यचक्र संयम को मिलाती है। आपकी अपनी पद्धति इनमेंसे किसी से बहुत भिन्न हो सकती है। नैतिक निरोध की आवश्यक प्रकृति विवेचन का एक दृढ़ व सहयोग का एक सत्य उत्साह है।

नैतिक निरोध की स्वतन्त्र पद्धति को व्यवहार करते हुए दम्पती अपने विवाह की रात्रि में संभोग से अपने आप को नियन्त्रित करेंगे। वे हार्दिक प्रेम में आलिंगन और चुम्बन करेंगे। वास्तव में पत्नी अपने पति के आलिंगन से प्रथम उत्तेजित हो सकती है अथवा संभवतः प्रेम-क्रीड़ा सदृश हाथ द्वारा चालाकीसे प्रबन्ध हो सकता है। जब दोनों पति-पत्नी माता-पिता होने के लिए निर्णय करते हैं तब संभोग प्रारम्भ होता है।

धर्म, कुमारत्व और पुनर्जनन दोनों की प्रशंसा द्वारा पुरुषों में नैतिक संयम को प्रेरित करता है। विवाह होने पर भी महीनों के लिए एक कुँआरी बनी रह सकता है। धार्मिक शिक्षा में दिखावटी विरोधात्मक कथन केवल नैतिक निरोध प्रमाणित करता है।

The method of moral restraint has many variations. One variation is chaste single blessedness with postponement of marriage until the individual can afford a family. A contrasting variation is the India Method (Good Parents KEYS To Success, Jaideva Brothers, Baroda, 1954, page 40) applicable only to married couples desiring an additional child. The India Method was perhaps named that way because of some difficulties there that the method helps to solve. The India Method is free, simple, and available to all, makes recreation possible every day of the month, and favors the birth of sons. Still another method of moral restraint combines midcycle abstinence with prophylaxis and sex hygiene. Your own method may be very different from any of these. The essential nature of moral restraint is an attitude of consideration, a true spirit of cooperation.

A husband and wife practising the independent method of moral restraint will refrain from intercourse on their wedding night. They will embrace and kiss in intimate love. Indeed a wife may well have her first orgasm induced by her husband's embraces or possibly manual manipulation known as love play. Intercourse will start only when both partners decide to become parents.

Religion inspires moral restraint in persons by glorifying both virginity and reproduction. A virgin may remain a virgin though married for months. Any seeming paradox in religious teaching only confirms moral restraint

नैतिक-निरोध के अभ्यास में प्रथम विचार स्वर्णिम नियम हो सकता है। पश्चात् लैंगिकजीवन रोष को टाल जाता है अथवा पति-पत्नी को हानि पहुँचा सकता है। यह विवाह के बाहर जन्म और पापपूर्ण गर्भपात को बचाता है। जब दम्पती परिवार में वृद्धि के लिए निर्णय करते हैं तब केवल नैतिक संयम के अनुसार बच्चे उत्पन्न होते हैं। प्रेम केवल लाभ, पारस्परिक आनन्द और पुनर्जनन को प्रदान करता है। आनन्द और पुनर्जनन आयोजन के लिए लैंगिक जीवन के मध्य एक स्पष्ट अन्तर पत्नी और बच्चों के कुशल का मार्ग प्रदर्शित करता है। नैतिक संयम और व्यक्तिगत पुक्ति परस्पर याग्य होती है।

नैतिक संयम जैसे उचित प्रसार की पद्धति संभोग में इसकी उर्वरा चोटी में और बच्चों में इसकी सबधे ऊँची सिद्धि पहुँचती है। आगे यह सामान्यतः अन्य पद्धतियों जैसे लैंगिक संयम और सुरक्षित विनियम सम्मिलित करती है। नैतिक संयम एक स्वतन्त्र और पूर्ण पद्धति विशेषतया स्पष्ट व्याख्या के रूप में वर्णन की गयी है।

नैतिक संयम का अभ्यास करते हुए दम्पती अपने बच्चों के स्वास्थ्य के निमित्त प्रसार की सर्वोत्तम पद्धति और सुरक्षित व्यवस्थापन को प्राप्त कर सकते हैं। दूरे विवाहित दम्पती सुरक्षित व्यवस्थापनको असन्तोषजनक प्राप्त कर सकते हैं और नैतिक संयम की स्वतन्त्र पद्धति पर विश्वास कर सकते हैं। कुछ माता-पिता अपने बच्चोंको लैंगिक संयम के द्वारा बराबर अन्तरपर लगाते हैं। वे अधिक, नैतिक निरोध का अभ्यास कर रहे हैं। नैतिक नियन्त्रण की आवश्यक प्रकृति विवेचन का एक दृढ़ व सहयोग का एक सत्य उत्साह है।

अनेक माता-पिता विश्वास करते हैं कि काम एक से अधिक प्रसिद्ध अधिकार रखता है। उनको अपने

The first thought in the practice of moral restraint may well be the golden rule. Sex life then avoids offence or injury to a partner. It avoids births out of wedlock and criminal abortions. Children are born according to moral restraint only when husband and wife decide to raise a family. Love gives only benefits: mutual joy and reproduction. A clear distinction between sex life for pleasure and planned reproduction leads to the well-being of husband, wife and children. Moral restraint and personal salvation fit together.

Moral restraint as a method of proper spacing reaches its fertile climax in intercourse and its highest fulfilment in children. Furthermore it usually involves other methods such as sexual abstinence and rhythmic regulation. Moral restraint has been described as an independent and complete method mainly for purposes of clear definition.

A couple while practicing moral restraint may find rhythmic regulation the best method of spacing their children for health. Another married couple may find rhythmic regulation unsatisfactory and may rely on the independent method of moral restraint. Some parents space their children by months of sexual abstinence. They, too, are practicing moral restraint. The essential nature of moral restraint is an attitude of consideration, a true spirit of cooperation.

Many parents believe that sex has more than one important function.

विश्वास को अभ्यास में लाना चाहिए। उनको उत्तेजना और उर्वरावन के बीचमें अन्तर सम्मिलित करना चाहिए। उनको नैतिक नियन्त्रण का अभ्यास करना चाहिए। पश्चात् वे विवाहित विलास और पारिवारिक आनन्द में भाग लेंगे।

नैतिक नियन्त्रण का आधार आचार-सम्बन्धी है बच्चों के लिए विवेचन की आज्ञा प्रदान करता है। आनन्द के लिए कामजनेत लिप्सा पुनर्जनन के उपायसे प्रसिद्ध है। जीवन में घबड़ाहट को फेंकने से काम-प्रवृत्ति का निषेध होता है। गन्दी वस्ती के पड़ोसमें शिशु दीर्घजीवी नहीं रहते हैं। प्राप्य नैतिक नियन्त्रण की पद्धति के साथ जो माता-पिता वंशपरम्परा और बच्चों के प्रसिद्ध पड़ोसका प्रबन्ध करते हैं वे अपने बच्चों के कल्याण के लिए स्पष्ट रूपसे उत्तरदायी हैं। नैतिक नियन्त्रण आचार-सम्बन्धी संस्कृति को निर्माण करता है।

अस्थायी वंध्यत्व

अस्थायी वंध्यत्व इंजेक्शनों व शल्य क्रिया द्वारा शीघ्र संभव हो सकता है। प्रसिद्ध डॉक्टर ने निर्दिष्ट किया है कि अनुसंधान कार्यकर्तागण एक वर्ष से अधिक के लिए अस्थायी वंध्यत्व औषधि को ढूँढ निकालेंगे। शल्य-क्रिया मनोवांछित काल तक के लिए अस्थायी वंध्यत्व दे सकता है। अस्थायी वंध्यत्व गर्भ निरोध की कुछ हानियों से बचाता है। बच्चों के प्रसार और उचित पद्धति के लिए सब से अधिक विश्वासी होने के लिए निर्दिष्ट किया जाता है।

अस्थायी वंध्यत्व औषधिविज्ञान द्वारा स्थायी वंध्यत्व में बढ़ने योग्य है। उदाहरण के लिए एक माता जिसे शल्यक्रिया द्वारा प्रसव से बार बार कष्ट उठाया है वह अपने डॉक्टर द्वारा सचेत की जा सकती है कि दूसरा गर्भ उसके तथा बच्चे के लिए प्राणघातक होगा। अस्थायी वंध्यत्व उचित है क्योंकि औषधीय विज्ञान शीघ्रता से द्वितीय कुछ वर्षों में जीवितसंतान माता के लिए निकाल देना संभव

They should practice their belief. They should comprehend the difference between orgasm and fertilization. They should exercise moral restraint. They will then share in married bliss and family happiness.

The ethical basis of moral restraint is that it permits consideration for children. Sex lust for pleasure is distinguished from planned reproduction. The sex impulse is prevented from throwing confusion into life. Babies are no longer born unplanned into a slum environment. With the method of moral restraint available, parents that provide the heredity and important early environment of children are clearly answerable for their children's well-being. Moral restraint builds ethical culture.

Temporary sterilization

Temporary sterilization may soon be possible by means of serums as well as operations. A leading doctor has predicted that research workers may discover a substance giving temporary sterilization for as long as a year. Operations can give temporary sterilization for any length of time desired. Temporary sterilization avoids some of the disadvantages of contraceptives. It is destined to become most reliable for spacing children and a popular method.

Temporary sterilization is preferable to permanent sterilization for therapeutic purposes. For example a mother that has suffered from repeated Caesareans may be warned by her doctor that another pregnancy will be fatal to herself and child. A temporary sterilization is advisable

हो सकता है। जब एक डॉक्टर द्वितीय बच्चे के सम्बन्ध के पूर्व अनेक वर्षों की प्रतीक्षा का केवल सम्मति देता है तब अस्थायी वंध्यत्व सुरक्षित पद्धति है।

जब आपका परिवार पूर्ण है तब आप अस्थायी वंध्यत्व सबसे अधिक उपयोग पा सकते हैं। आप स्थायी वंध्यत्व इसलिए नहीं चाहते हैं कि आप अपना मन परिवर्तन करके द्वितीय बच्चे की इच्छा कर सकते हैं। आप निश्चित रूप से गर्भ-निरोध नहीं चाहते हैं क्योंकि आप जीवनकाल के भयङ्कर परिवर्तन में पहुँचेंगे। अभी तक सर्वोत्तम गर्भ-निरोध दुःखान्त असफलता के लिए उत्तरदायी है। क्या आप इन पर विश्वास कर सकते हैं? कुछ विधान उन माता पिता के लिए जिनका गर्भ प्राणघातक होगा उनके लिए गर्भ-निरोध की व्यवस्था के लिए डॉक्टरों को अधिकार प्रदान करता है। क्या ऐसे विधान नरहत्याको मान्य कर सकते हैं? अस्थायी वंध्यत्व बीसवीं-शताब्दी की चिकित्सा विधि है।

जाति-स्वास्थ्य

जाति-स्वास्थ्य परिवारसञ्चालन में अधिक उपयोगी है। निर्मलता, धर्माचरण के बाद है, धार्मिक तत्व को मान्य है यह प्रकट करता है। विश्वभर में सोडा के मिश्रणका उपयोग जाति-स्वास्थ्य के लिए उपयोग किए जानेसे ही विश्व की अत्यन्त जनसंख्या को कम करनेमें पर्याप्त है जिसके द्वारा सन्तान मर्यादित की जाय और स्वास्थ्य में उन्नति हो। यदि आप एक बृहत् परिवार का आयोजन कर रहे हैं और केवल एक या दो वर्ष सन्तानोत्पत्ति के बीचमें रुकना चाहते हैं तो जाति स्वास्थ्य एक सन्तोषजनक पद्धति है।

मध्यचक्र पद्धति

सन्तान मर्यादित की मध्यचक्र पद्धति एक विशेषपञ्जिका (कैलेंडर) पर आधारित है (गुड पेरेंट्स कीज टू सक्सेस

because medical science may progress so rapidly in the next few years that a live birth becomes possible for the mother. When a doctor merely advises waiting several years before bearing another child, temporary sterilization is the safest method.

You may find temporary sterilization most useful when your family is complete. You don't want permanent sterilization, because you may change your mind and desire another child. And you certainly do not want contraception because you will be approaching the dangerous change of life period. Even the best contraceptives are liable to tragic failure. Can you believe this? some laws authorize doctors to prescribe contraceptives for patients to whom pregnancy will be fatal! Do such laws legalize a form of homicide? Temporary sterilization is the twentieth-century prescription.

Sex hygiene

Sex hygiene merits increased use in proper spacing. **Cleanliness is next to righteousness** expresses the approval of religion. Worldwide use of a cleansing solution in sex hygiene is sufficient to end extremely high population pressure by spacing children and improving health. If you are planning a large family and merely want to wait a year or two between children, sex hygiene is a satisfactory method.

Midcycle Method

The Midcycle Method of spacing children is based on a special calendar (Good Parents Keys to Success,

जयदेव ब्रह्म, बडौदा, १९५४, पृष्ठ ४४)। वर्ष के दिन नौ दिन के अन्तर के द्वारा तीन स्तम्भों में प्रबन्ध किये गए हैं। प्रथम स्तम्भ जनवरी १, द्वितीय जनवरी १० और तृतीय जनवरी १९ के साथ प्रारम्भ होता है। प्रत्येक स्तम्भ वर्ष के सभी दिनों को प्रदर्शित करता है। प्रथम स्तम्भ दिसम्बर ३१, द्वितीय जनवरी ९, और तृतीय जनवरी १८ के साथ अंत होता है। यहाँ मध्यचक्र पद्धति के प्रार्थना पत्र लिए कुछ सम्मितियाँ हैं।

१. जब आपके अन्तिम मासिक धर्म का आरम्भ हो जाय तब बायें हाथ स्तम्भ में तारीख चुनिए। जब संयम प्रारम्भ हो तब इसके दाहिने की तारीख का दिन है। मध्यचक्र के कम से कम दशदिनों के लिए लैंगिक सम्बन्ध पर संयम होना चाहिए। जब लैंगिक सम्बन्ध पुनः आरम्भ किया जाय तब उसके बाद का समय आगे के लिए अङ्कित तारीख संभोग के हेतु ठीक है।

२ (उन माता-पिताओं के लिए जो मध्यचक्र के समय लैंगिक सम्बन्ध में संयम के लिए अयोग्य हैं) यह माता-पिता अपने यौन सम्बन्धकी उत्तरोत्तर उन्नति के लिए मध्यचक्र तक भाव भंगी प्रेमद्वारा अपने सम्बन्धको सीमित कर सकते हैं।

“ यदि एक पिता और माता दूसरे बच्चे लिए इच्छुक नहीं है उनको साफ साफ संयुक्त होने पर अपने आप नियन्त्रित करना चाहिए। ” — प्राचीन दर्शन शास्त्र

३ (उन माता-पिताओं के लिए जो मध्यचक्र तक संभोग में संयुक्त होनेसे अपने आपको नियन्त्रित करने में असमर्थ हैं) ऐसे माता-पिता परिवारा-निदानगृहमें संकटकालीन स्थिति से चैन के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जब रोगकी स्थिति और संकट हो तब निदान-गृह की सेवाओं को व्यवहार में लाने के लिए उनको आदेश मिल जायगा।

धिवाह में निरोधक-चिकित्सा

धर्मकी प्रधान शाखाएँ वैसे ही न्यायालयों के विधौन, निरोधक चिकित्सा (रोग का निरोध) और गर्भ-निरोध

Jaideva Brothers, Baroda, 1954, page 44). The days of the year are arranged in three columns separated by nine-day intervals. The first column begins with Jan. 1, the second with Jan. 10, and the third with Jan. 19. Each column shows all the days of the year. The first column ends with Dec. 31, the second with Jan. 9, and the third with Jan. 18. Here are some suggestions for application of the Midcycle Method :

1. Pick out the date in the left-hand column when your last menstruation began. The date to the right of this is the day when abstinence should commence. You should abstain from sexual relations for atleast ten days of midcycle. The following date further to the right is the time after which sexual relations may be resumed.

2. (For parents unable to abstain from sexual relations during the mid-cycle) These parents may limit their relations during the midcycle to petting to climax by manual manipulation.

“If a father and mother are not eager to have another child, they should simply refrain from uniting.”

.....Ancient philosophy

3. (For parents unable to refrain from uniting in intercourse during the midcycle) Such parents may apply to a family clinic for relief as distress cases. They will be permitted to use services of the clinic when conditions of illness and distress warrant.

Marriage prophylaxis

Major branches of religion as well as courts of law recognize the differ-

के बीच में अन्तर स्वीकार करते हैं। तथ्य यह है कि प्रसिद्ध निवारक-औषधि कुप्रयोग की जा सकती है जैसे गर्भ-निरोध का उपाय दैवयोग की एक दुर्घटना है।

विवाहित जीवन में औषधोपचार का दृष्टान्त यह है कि किसी रक्षक वस्तु का उपयोग मनुष्य द्वारा किया जाना जिसका दैनिक कार्य उसे संक्रामक रोगों से संयोग करना वाध्य करता है। आपको मन में व्यवहारानुरूप भेद स्पष्ट रीतिसे समझने चाहिए (अ) निरोधक औषधि के उपयोग से बीमारीको रोकना, (ब) जातिस्वास्थ्य, अर्थात् समागम के पूर्व और पश्चात् प्रक्षालन, (स) गर्भ निरोध के कृत्रिम साधनों का अथवा औषधियों द्वारा गर्भ धारण के योगको कम करना। ये भेद गर्भ निरोध के विधान का वर्णमाला रूप है। गर्भ निरोध के विरुद्ध जो विधान है वे स्वच्छ रखनेवाले अथवा औषधोपचारकों में हस्तक्षेप नहीं करते।

मध्यचक्रम संयम और निरोधक-चिकित्सा

विवाहितजीवन में निरोधक-चिकित्सा और किसी अंश में संयमको आप मिश्रण कर सकते हैं। कुछ सबसे बड़ी कविताएं और तालबद्ध संगीत उन व्यक्तियों द्वारा रचे गए हैं जो उस समय संयम पाल रहे थे। इसी प्रकार मध्यचक्र संयम भी आपके जीवन की सर्वोत्तम साधनाको प्राप्त करने में सहायक हो सकता है। आप स्नेहशून्य एक घोर तपस्वी ही नहीं बने रहना चाहते और न कामुक मल्ल होने की परिस्थितियों के अन्तर्गत प्रयत्न करना चाहते। कुछ दिनोंका संयम और निरोधक-चिकित्सा एक आनन्द-निकेतन और दुःखद रोग के बीच में अन्तर कर सकता है। स्वास्थ्य के लिए बच्चों का उचित प्रसार मध्यचक्र संयम और निरोधक-चिकित्सा द्वारा प्राप्य है। सुखी माता-पिता स्वस्थ परिवार के साथ समजीवन व्यतीत कर रहा हो वह सामान्यतः सबसे अधिक भाग्यशाली और निर्माता है।

ence between prophylaxis (prevention of disease) and contraception. The fact that a leading prophylactic can be misused as a makeshift contraceptive is an accident of chance.

An example of marriage prophylaxis is use at home of a protective product in conjunction with rhythmic regulation by a father whose daily work exposes him to contagious disease. You should have clearly in mind the difference between (A) prophylaxis, the prevention of disease, (B) sex hygiene, washing before and after intimacies, and (C) contraception, the employment of a device or chemical to lessen the chance of fertilization. These differences are the ABC's of the law on contraception. Laws against contraceptives usually do not interfere with prophylactics or cleansers.

Midcycle abstinence and prophylaxis.

Marriage prophylaxis may well be combined with a certain amount of abstinence. Some of the greatest poems and symphonies have come from persons practicing abstinence at the time. Likewise midcycle abstinence can help you achieve the greatest accomplishments of your life. Surely when risk of disease is present caution is in order. You do not want to be a frigid ascetic but neither should you try under circumstances to be a sexual athlete. A few days of abstinence plus prophylaxis can mean the difference between a happy home and disastrous disease. Proper spacing of children for health is attainable by

midcycle abstinence and prophylaxis. The happy parent with a healthy family enjoying a well balanced home life is usually the most fortunate and constructive.

सम-स्वास्थ्य

कुछ माता-पिता आवश्यकता होते हुए भी अपने विश्वासों के द्वारा सम पद्धतिको असन्तोषपूर्ण पा सकते हैं। वे तालबद्ध नियम जाति आरोग्य के साथ मिश्रण करके प्रयत्न कर सकते हैं। उचित प्रसार की दो अथवा अधिक पद्धतियों का मिश्रण पद्धतियों में स एक की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। यदि आप अपने विवाहित जीवनको सुखी रखने और स्वास्थ्य वृद्धि में यूति नाशकों (प्रतिपौतिक) विकनाई रोग निवारक औषधियों अथवा स्वच्छता का उपयोग करते हैं तो धार्मिक नेताओंको इस पर छिद्र न्वेषण नहीं करना चाहिए।

कामेच्छा-निग्रह अथवा उन्नयन

कामेच्छाओंको संयमन करने के कई पथ हैं यथा शीतजल का स्नान, व्यायाम, विशेष भोजन, और रात्रि में भारी भोजन न करना। काम शक्ति का उपयोग बच्चोंकी रक्षा, धार्मिक दानपुण्य के कार्य, ऐसे मनोविनोद जैसे नाटक संगीत आदि में मन को लगानेसे, काम वासना में हटाकर उन्नत हो सकता है। धर्म विशेष रूपसे आत्मिक उन्नति में सहायक होकर स्वास्थ्य के लिए बच्चों की संख्या को संयमन को रख सकता है।

बच्चे उत्पन्न करने की शक्ति के लिए शल्य कर्म और उपचार

कई दम्पती जिन्हें बालकों की अत्यन्त इच्छा होती है निस्सन्तान ही रहते हैं। पुत्रीकरण एक उपाय है पर इसमें परिमितता है। कई व्यक्ति पुत्रीकरण की आवश्यकताओं

Rhythm-hygiene

Some parents may find the rhythm method unsatisfactory even though required by their religious beliefs. They might well try combining rhythmic regulation with sex hygiene. Combinations of two or more methods of proper spacing are often more effective than any one of the methods. Religious leaders should refrain from criticizing you or using antiseptics, lubricants, prophylactics, for cleansers to increase the health and happiness of your marriage.

Moderation or sublimation of sex desires

Moderation of sex desires is accomplished in a number of ways, such as cold baths, exercises, special diets, and avoidance of heavy meals at night. In the sense of redirecting sexual energy into child care, religious and charitable work, and hobbies like the drama and music, sex desires can be diverted to a degree resembling sublimation. Religion is of great spiritual help in such endeavors to achieve proper spacing of children for health.

Operations and treatments for fecundity

A few married couples that are eager to raise a family are unable to have children. Adoption of children is one solution but it has

को पूर्ण करने में समर्थ नहीं हो पाते। दूसरा उपाय पुनर्जनन योग्य बनाने के लिए शस्त्रोपचार है। जब पत्नी का गर्भाशय नीचेसे ऊपर या उल्टा हो अथवा पति की चिकित्साकी आवश्यकता हो उस दशमें एक डॉक्टर ही दम्पती की सन्तानोत्पत्ति में सहायक हो सकता है। सन्तानोत्पत्तिके लिए ऐसे उद्योग धर्म में सहनशील हैं। थोड़े से विवाहित दम्पती केवल कृत्रिमगर्भाधान द्वारा ही बच्चे प्राप्त कर सकते हैं जिसमें पतिका वीर्य पत्नी के गर्भाशय में प्रवेश कराया जाता है। उचित वंश-वृद्धिकी यह पद्धति नवीन अनुसन्धान द्वारा हो सकी है, उत्तम सन्तान व प्रथम पुत्र के लिए धार्मिक स्तुति आशीर्वाद एक विश्वसनीय और साधारण मार्ग है।

उत्तम सन्तानोत्पत्तिके विषय से सम्बन्धित जनन-विज्ञानका उपयोग

वंश-वृद्धि में उत्तम सन्तानोत्पत्तिके विषयसे सम्बन्धित विज्ञानका उपयोग कठिनतासे प्रारम्भ हुआ है। विशेष स्वास्थ्य ज्ञान और चरित्रवाले दम्पती का अपनी आरोग्यताके के लिए सन्तानवृद्धि को बन्द करना कर्तव्य है। परन्तु वे अनुभव कर सकते हैं अन्यथा उनमें पर्याप्त उत्पन्न शक्ति उर्वरापन, और पारिवारिक जीवन में अभिवृद्धि भी होना चाहिए। उत्तम सन्तानोत्पत्तिके विषय से सम्बन्धित विज्ञान को उत्साहित करने और मानव वर्ग के भविष्य के लिए सन्तोषप्रद मार्ग प्राणाधार है। जब मानववर्ग दुःखान्त अपमान से जीवन और मृत्यु के बीच में पड़ जाता है तब उत्तम सन्तानोत्पत्तिके विषय से सम्बन्धित जनन-विज्ञान की आवश्यकता होती है।

लाखों से भी अधिक बच्चे हमारे समय में मारे गए हैं,
हमारी समवेदनाएँ कंठोर हो गई हैं
हमें इस भयङ्कर अपराध को स्वीकार करना ही पड़ेगा।
प्रतिवर्ष विश्व में सात करोड़ के लगभग शिशु उत्पन्न होते हैं। इन में से नवें लाख बचपन में ही मर जाते

limitations. Some persons even fail to meet the requirements for adopting children. Another solution is an operation or treatment to make reproduction achievable. When a wife's womb is upside down or a husband's glands require treatment, a doctor often can enable a couple to have a baby. Religion is very tolerant of such endeavors to have children. Some parents can have children only when the husband's spermatozoa are artificially inseminated at the entrance of his wife's womb. This method of proper spacing may become through new research a reliable and simple way to have a first-born son, the blessing of a fine family glorified by religion.

Application of eugenics

Application of eugenics in proper spacing is scarcely begun. Parents with exceptional health, intelligence, and character have a duty to figure close in spacing their children for health. But they may feel otherwise unless they also have adequate earning power, fertility, and zest for family life. A satisfactory way to encourage eugenics is vital to the future of humanity. Meanwhile a tragic disgrace to humanity hovers around the need for eugenics.

So many million children
Have been killed
Within our time,
Our sympathy grew calloused
Let's admit
This awful crime ?
Around seventy million babies are
born into the world every year. Nine

हैं। सामान्यतः तेरह प्रतिशत बच्चों की मरण शीलता का औसत है जब कि यह चार अथवा कम प्रतिशत भी हो सकती है। प्रतिवर्ष ६० लाख से अधिक शिशु प्रति घण्टे छःसौ से अधिक अनावश्यक रूप से मरते हैं। कई करोड़ लुडकनेवाले बच्चे और शिशु वाधक रोगों से मरते हैं। मानवता कहाँ है? समाज के नेताओं का इस जीवन नाश के सम्बन्ध में क्या कथन है? इसके लिए क्या किया जा रहा है? इन मरनेवाले बच्चों, लुडकनेवाले बच्चे, और शिशुओंको सड़क के किनारे रखते जाओ जहाँ से मानववर्ग का आवागमन होता है और देखो क्या होता है।

यहाँ सरकार के नेता आ रहे हैं। वे क्या करते हैं? बहुत से आगे चले जाते हैं। दूसरे कष्ट पाते हुए बच्चों को देखते हैं, उनकी दशाओं का बहुमूल्य जाँच करते और बच्चों के प्राधान्य लाभ की आवश्यकताको स्वीकार करते हैं। वे कुछ शिशुओंको अपने हाथों में लेते हैं और कुछ बच्चोंको सुरक्षित मार्ग पर डालते हैं। परन्तु जब सरकार के सभी नेतागत चले जाते हैं तब भी मृतप्रायः बालकोंका ढेर पूर्व जितनाही बड़ा प्रतीत होता है।

यहाँ धार्मिक नेतागण आ रहे हैं। उनको भूख और रोग से मरते बच्चोंको देखकर दुःख होता है। वे इनके सम्बन्धमें प्रार्थनाओं और उपदेशों में कहने का संकल्प करते हैं और सब बच्चों की सहायता के लिए प्रचारक भेजते हैं। वे मानववर्ग के पापों से दुःखित होते हैं जिनके कारण मरते बच्चे बलिदान के परिणाम हैं। वे सत्य पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त, कायाक्लेश, उपासना उनके जीवन के लिए करते हैं, और बच्चों के जीवन की रक्षा के लिए त्याग करते हैं। अभी मरते शिशु, लुडकते बच्चे और बच्चों की संख्या भयप्रद है।

million of them die in infancy. The average infant mortality rate is thirteen per cent when it can be four per cent or less. More than six million babies die needlessly every year, more than six hundred every hour! Many more millions of toddlers and children die from preventable diseases. Where is humanity? What have the leaders of society to say about this tremendous waste of human life? How much is being done? Put these dying infants toddlers, and children by the side of the road where humanity passes by, and watch what happens.

Here come the leaders of governments. What do they do? Most of them move ahead. Others notice the suffering of children, make expensive investigations of conditions and agree the needs of children merit top priority. They take a few infants in their arms and lead some children along the road to safety. But when all the leaders of governments are gone, the masses of dying children seem nearly as large as before.

Here come the leaders of religion. They grieve at the sight of the starving and sick children. They resolve to mention them in their sermons and prayers, to take up offerings to save them, and to send missionaries to help all children in need. They deplore the sin of mankind for which dying children are the resulting sacrifice. They urge true repentance, atonement, penance, reverence for life, and sacrificial giving to save the lives of children yet the number of dying infants, toddlers, and children remains appalling.

यहाँ दानदाताओं के नेतागण आ रहे हैं। वे इन करोड़ों मृतप्रायः शिशुओं को देखकर इस बात पर सहमत होते हैं कि दान के कारण योग्य हैं। वे दारुण अत्यावश्यकता को देखते हैं और निर्देश करते हैं कि थोड़े दान से किनना अच्छा परिणाम हो सकता है। वे अश्रुपात करते हैं और दुःख प्रकट करते हैं कि उनका बहुत सा दान दिया जाने वाले धनका विनियोग इससे पूर्व हो चुका है और थोड़ा दे सकते हैं।

लाखों बच्चों, लुडकनेवाले बच्चों, और बालकों के बलिदान इन पाषाण-हृदयों की उदासीनता की वशिवेदी पर हो रहा है। यहाँ आप आते हैं। आप इसके लिए क्या करते हैं? स्वास्थ्य के लिए वंश-वृद्धि प्रश्न का हृदय है। आप इसके लिए क्या करेंगे? सरकारी, धार्मिक, दानदाता नेतागण इसके लिए क्या करेंगे? कार्यवाही के लिए समय हाथ में है।

आध्यात्मिक, मातृत्व-पितृत्व के बहुमूल्य उच्चस्तर, और उत्तम दम्पती के ईश्वरीय आशीर्वाद को प्रदर्शित करती हैं। रहस्यवाद का पूर्ण ज्ञान बच्चों के जीवन को बचाने के लिए असफल होने की बुराई को प्रकट करता है। उपेक्षक दम्पती के पाप बच्चों को भोगना पड़ता है जो मरते हैं अथवा कभी कभी तृतीय और चतुर्थ कुल में विशेष अडचन पड़ता है। परन्तु यह दुःखान्त बुराई समाज के नेताओं के पाप की अधिकता है जो स्वास्थ्य के लिए वंश-वृद्धि की आवश्यकता का सम्पादन करते हैं, इसपर जो कुछ अधिक करते हैं वे केवल अपने मन को शान्त रखते हैं।

यहाँ हमारे पास दो अवसर हैं। हमलोग बच्चों के जीवन की रक्षा कर सकते हैं और दूसरों के सहयोग पर विजय पाने के लिए प्रयत्न कर सकते हैं। हमलोगों को बुद्धि और उत्साह के लिए प्रार्थना करना चाहिए। हमारी और हमारी तरह दूसरों की कार्यवाही यह निर्णय करेगी कि बच्चोंकी अनिवार्यक मृत्यु के भयानक अपराध के विषय में क्या किया गया है।

Here come the leaders of charities. They look on the millions of dying infants and agree that here is a worthy cause for charity. They see the terrible urgency and point out how much good can result from even a small contribution. They shed tears and regret that so much of their money has already been appropriated that little can be done.

The sacrifice of millions of infants, toddlers, and children continues upon the altar of stony indifference. Here comes you. What do you do about it? Proper spacing of children for health is at the heart of the question. What will you do about it? What will the leaders of governments, of religion, of charities, do about it? The time for action is at hand.

Spiritual enlightenment shows the divine blessing of good parents, the supreme value of a high standard of parenthood. Mystical insight reveals the evils of failing to save the lives of children. The sins of negligent parents are visited on children that die or are handicapped sometimes to the third and fourth generation. But this tragic evil is much more the sin of leaders of society that realize the need for proper spacing of children for health, yet do only enough to ease their consciences.

Here we have a twofold opportunity. We can do our part to save the lives of children and we can try to win the cooperation of others. Let us pray for wisdom and courage. **OUR ACTION** and that of others like us will determine what is done about the terrible crime of needless child mortality.

उत्तम माता-पिता समाज

उत्तम माता-पिता समूह सर्वत्र विश्व में, शिशुओं, लुङकनेवाले बच्चों और बालकों को स्वस्थ और आनन्दित निर्माण करने के लिए समर्पण करते हैं। लाखों बच्चों के जीवन प्रति वर्ष बच्चों के रक्षा की स्तर पद्धति, आरोग्य शास्त्र और रोग निवारण द्वारा बचाये जा सकते हैं।

उत्तम माता-पिता समूह निम्नांकित सिद्धान्तों के उत्कर्ष के लिए व्यक्तियों को उत्साहित करते हैं।

- १ व्यक्तिगत शिशु की बहुमूल्यता।
- २ परिवार की सम्पत्ति में सामाजिक समता का वाद।
- ३ सर्वत्र विश्व में बच्चों का भ्रातृत्व।
- ४ गृहजीवन और परिवार के विषय में निःशुल्क वाद-विवाद
- ५ मातृत्व-पितृत्व के लिए शिक्षा।
- ६ नवविवाहिताओं को पुत्र कैसे उत्पन्न हो, की शिक्षा।
- ७ स्वास्थ्य के लिए बच्चों के उचित प्रसार का माता-पिता की शिक्षा।
- ८ माता-पिता की शक्ति के अनुसार सन्तति-निग्रह।
- ९ बृहत् परिवार को रखने के लिए प्रसिद्ध नागरिकों को उत्साहित करना
- १० किसी प्रकार के विचार बिना सभी बच्चों की सहायता करना।

उत्तम माता-पिता समूह उन व्यक्तियों से सम्बन्धित हैं जो उत्तम माता-पिता को आदर करने और बच्चों के जीवन रक्षार्थ सहायता देने में ध्यान देते हैं। स्वयंसेवक-गण, अधिकारियों, परिवार की मंत्रणा करने वाले, सहायक और अन्य जो सहयोग देते हैं, सम्मिलित हैं। व्यवस्था विकेन्द्रीकरण है। पारस्परिक सहयोग से समूह ज्ञान, शक्ति, और दातव्य के लिए अन्य प्राप्य उपाय वैज्ञानिक और शिक्षा-सम्बन्धी तात्पर्य का भण्डार है।

GOOD PARENTS GROUP

The Good Parents Group is dedicated to saving the lives of infants, toddlers, and children throughout the world by building up healthy happy families. THE LIVES OF MILLIONS OF CHILDREN CAN BE SAVED every year by standard methods of child care, sanitation, and disease prevention.

The Good Parents Group encourages persons to uphold the following principles :

1. The preciousness of the individual child.
2. The solidarity of the family.
3. The brotherhood of children throughout the world.
4. Free discussion on the subject of family and home life.
5. Education for parenthood.
6. Teaching newlyweds how to have a son.
7. Teaching parents the proper spacing of children for health.
8. Family planning according to the ability of parents.
9. Encouraging leading citizens to have large families.
10. Helping all children without discrimination of any kind.

The Good Parents Group is an affiliation of persons interested in honoring good parents and helping to save the lives of children. Volunteers include the officers, Family Consultants, contributors, and others that cooperate. Administration is decentralized. Through mutual cooperation the Group is a fund of knowledge, abilities, and other resources available for charitable, scientific and educational purposes.

अनुसन्धान

उत्तम माता-पिता समूह के अनुसन्धान कार्यकर्तागण इच्छानुसार पुत्र के लिए एक विश्वसनीय और सरल मार्ग की खोज में इस समय मन लगाते हैं। इस खोज में उनका विश्वास है कि मातृत्व-पितृत्व के स्तर को उन्नति करने और सन्तति-निग्रह में माता-पिता के लाभ के लिए भयङ्कर शक्ति होगी।

अनेक प्रथम उत्पन्न पुत्र जन्म से ही नेता होने को सिद्ध करते हैं। इच्छानुसार पुत्र का जन्म पारिवारिक बन्धन को दृढ़ करता है और परिवार की आर्थिक अवस्था को उन्नति करता है। आगे पुत्रों की वृद्धि राष्ट्रीय रक्षा और राष्ट्रीय विकास में सहायक होता है।

मतदाताओं को अपने प्रतिनिधियों को इच्छानुसार पुत्र को प्राप्ति के लिए विश्वसनीय और सरल मार्ग के अन्वेषणार्थ आग्रह करना चाहिए। भारतवर्ष में वृहत् अनुसन्धान केन्द्र की उन्नति के लिए इस प्राधान्य मार्ग को सजग करना चाहिए।

पारिवारिक विवेचन द्वारा अध्ययन बच्चों के जीवन-रक्षार्थ सर्वोत्तम अवसर जीवन के प्रथम कुछ सप्ताहों तक प्रकट करता है। बच्चों की मृत्यु, बच्चों के रक्षा की स्तर-पक्षति, आरोग्य शास्त्र और रोग निवारण द्वारा वृहत् रूप से कम किया जा सकता है।

उत्तम माता-पिता समूह, अनुसन्धान एवं खोजपूर्ण स्पर्द्धाओं निबन्धों को उत्तेजन करता है। निबन्ध का विषय कोई प्रसंग अथवा जनसंख्या सम्बन्धित प्रसंग ही हों। हाल में निबन्धस्पर्द्धा विषयक लेखों के विवरण देते हुए छोटी छोटी सूचनापत्रिकाएँ एवं सिली हुई छोटी पुस्तक धर्मार्थ श्री. सन्तराम भाटिया, २३३ मॉडल टाउन, जालन्धर सिटी, पूर्वी पञ्जाब (भारत) से प्राप्त की जा सकती हैं।

RESEARCH

Research workers of the Good Parents Group are presently interested in discovering a reliable and simple way to have a son by choice. They believe this discovery will have tremendous power to interest parents in family planning and improve the standard of parenthood.

Many first-born sons prove to be natural-born leaders. Moreover the birth of sons by choice strengthens family ties and improves the economic position of the family. Furthermore an increase of sons supports national defense and national development.

Voters should urge their representatives to press for research on a reliable and simple way to have a son by choice. The great research centres in India must be alerted to this top priority way to progress.

Studies by Family Consultants reveal that the best opportunity to save the lives of children occurs during the first few weeks of life. It is here that infant mortality can be greatly reduced by standard methods of child care, sanitation, and disease prevention.

The Good Parents Group sponsors Essay Contests to stimulate research. The subject of the essays is any topic or topics related to population. The latest handbill brochure giving details of an Essay Contest can be obtained gratis from Shri Sant Ram Bhatia, 233 Model Town, Jalandhar City, East Punjab, India.

उत्तम माता-पिता समूह के अनुसन्धान कार्यकर्तागण इस तथ्य द्वारा गहराईसे प्रभावित हुए हैं कि विश्व की सबसे खराब गंदी बस्तियाँ, औद्योगिक प्रसार और कृषिसम्बन्धी उन्नति के आर्थिक रूपमें विकसित क्षेत्रों में ही अस्तित्व रखती हैं। विरोधात्मक रूप से गवेषक, आर्थिक रूप में पिछड़ी और विशेष लाभ रहित अविकसित क्षेत्रों में परिवारों की आनन्दित व स्वस्थ पाए हैं। ये अन्तर भेद व उत्तम माता पिता के अत्यधिक गुणका असर है जो सभी प्रकार की संस्कृतियों में बच्चे के वंश परम्परा प्राप्त गुण और प्रसिद्ध पड़ोस में पहिलेसे प्रबन्ध करता है।

उत्तम माता-पिता स्पष्ट करते हैं कि कुछ राष्ट्र कुछ सीमित उपाय के साथ जीवन के उच्च स्तर का आनन्द कैसे उठाते हैं। किसी देश के जीवन-स्तरको मातृत्व-पितृत्व के स्तर की उन्नति द्वारा सुधारा जा सकता है।

प्रचार

उत्तम माता-पिता समूह द्वारा विक्रय प्रकाशनों का विज्ञान दिया गया है जो श्री एस. ए. ददांनी, जयदेव ब्रदर्स, आत्माराम रोड, बडौदा (भारत) को थोड़े रूप में आदेश दिया जा सकता है। वे हमारी जनसंख्या के पिछड़े बच्चे, (बैकवर्ड चिल्ड्रेन ऑफ अवर् पॉपुलेशन) पुत्र कैसे प्राप्त हो ? (हिन्दी संस्करण केवल ३ आना), और 'सफलता की कुंजी' (कीज दू सकसेस) रखते हैं। वे बच्चों के जीवन की रक्षा, 'पारिवारिक सेवा' और 'परिवार' का स्वास्थ्य से व्यापार करते हैं। वे (१) अन्य प्रकाशनों, (२) ऐसे कन्टेस्ट्स' निबन्धस्पर्द्धाओं और (३) फैमिली कनसल्टैन्ट्स पारिवारिक परामर्श दाताओं का विज्ञापन करते हैं इनकी सर्वत्र विश्व में पुस्तकालयों को प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की गयी हैं।

उत्तम माता-पिता समूह पुस्तक की अविलंब आवश्यकता है जिसकी प्रति वर्ष सैकड़ों प्रतियाँ बिक जायें और उसका नूतन संस्करण प्रत्येक दीपावली पर निकाला जा सके। पश्चात् यह पुस्तक पारिवारिक सेवा, सम्बन्धित प्रकाशनों का

Research workers of the Good Parents Group have been deeply impressed by the fact that some of the world's worst slums exist in economically developed areas of industrial expansion and agricultural surplus. Paradoxically researchers have found healthy happy families in underdeveloped areas of the economically backward and underprivileged. These contrasts emphasize the supreme overwhelming value of good parents that provide the heredity and important early environment of children in all sorts of cultures.

Good parents explain why some nations with limited resources enjoy a high standard of living. The standard of living of any nation can be improved by raising the standard of parenthood.

PUBLICITY

Publications advertised for sale by the Good Parents Group may be ordered at cost for a few rupees from Shri S. A. Dodani, Jaideva Bros., Atmaram Road, Baroda, India. They include Backward Children of Our Population, How to Have a Son (Hindi edition only As. 3), and Keys to Success. They deal with saving the lives of children, family service, and family health. They carry advertisements of (1) other publications, (2) Essay Contests, and (3) Family Consultants. Copies have been distributed free to libraries throughout the world

There is urgent need for a Good Parents Group book that will sell hundreds of copies every year so that a new edition can be brought out each Dewali. This book will then include

विज्ञापन, और लेख, निबन्ध प्रतियोगिताके परिवार शिक्षण की अत्यवधिक निर्देशिका और आरोग्य केन्द्र के विकासों में सम्मिलित की जाय ।

निबन्धस्पर्धाओं लेखों के हस्तविज्ञापन, एवम् अन्य छोटी पुस्तकों से पारिवारिक शिक्षण का विज्ञापन होता है और उत्तम माता-पिता समूह के प्रकाशनों का विज्ञापन होगा । पुस्तकाध्यक्ष वर्ग हस्त विज्ञापनक, छोटी पुस्तकों के प्रदर्शन स्पर्धाके लेखों के विषय में प्रश्नों के उत्तर, और सम्बन्धित प्रकाशनों को उधार देने में सहयोग देते हैं ।

पारिवारिक परामर्शदाता निबन्धस्पर्धा लेखों के हस्त विज्ञापनक, छोटी पुस्तकों को वितरण करते हैं और उनकी सेवाओंको परामर्शदाता के योग से सम्बन्धित प्रकाशनों का वर्णन करते हैं ।

प्रकाशनों के संयुक्त प्रचार स्पर्धात्मक लेख, और परिवार परामर्श दाता स्वयं उत्पादक और स्वतन्त्र हैं । प्रत्येक विज्ञापन उत्साह बढ़ाता है, और दूसरों का निर्माण करता है । लगातार संवृद्धि परिणाम निकलता है ।

कुछ देय विज्ञापन समाचार पत्रों और अन्य सामयिक पत्रों में दिए जाते हैं, और कई प्रकाशकों के भद्र सहयोग द्वारा प्रचार के विशेष मूल्य को निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है ।

सेवा

उत्तम माता-पिता समूह के प्रकाशन माता-पिताओं के लिए कम से कम मूल्य पर बहुमूल्य पथ-प्रदर्शन के प्रबन्ध का उद्देश्य रखते हैं । उत्तम माता-पिता समूह सन्तति-निरोध का तात्पर्य वन्ध्यत्व को जीतना इच्छानुसार प्रथम पुत्र का जन्म, बच्चों के जीवन की रक्षा, प्रसिद्ध नागरिकों को बृहत् परिवार के उत्साहित करने पर जोर देते हैं ।

the latest developments in family service, advertisements of related publications and Essay Contests, and an up-to-date Directory of Family Consultants and Health Centres.

The handbill brochures of the Essay Contests advertise the Family Consultants and will advertise publications of the Good Parents Group. Librarians cooperate by displaying handbill brochures, answering questions about the Essay Contests and lending related publications.

Family consultants distribute handbill brochures of the Essay Contests and mention related publications in addition to their services as Consultants.

The interlocking publicity Of the publications, the Essay Contests, and the Family Consultants is self-generating and free. EACH ADVERTISES, PROMOTES, AND BUILDS UP THE OTHERS. CONTINUOUS GROWTH RESULTS.

Some paid advertisements are placed in newspapers and other periodicals. A considerable amount of publicity is obtained free through the courtesy of cooperating editors and publishers

SERVICE

Publications of the Good Parents Group will aim at providing valuable guidance at minimum cost for parents. The Good Parents Group emphasizes that family planning means the overcoming of sterility, the birth of a first-born son by choice, saving the lives of children, and encouraging leading citizens to have large families.

भ्रातृभावना के स्वभाव को कुछ स्पर्धा के लेख प्रहण करते हैं और गवेषकों द्वारा विजय पाते हैं तब द्रव्य इनाममें पाते हैं। प्रतिनिधियों की सूची आगामी सूचना के हेतु लिखने के लिए और दूसरी सहायता निबन्धास्पर्धा लेखों के हस्त विज्ञापनों में सम्मिलित है।

परिवार-परामर्शदाता जो माता-पिता प्रार्थना करते हैं उनकी सप्ताह में कई घण्टे सेवा के लिए स्वीकृति देते हैं सभी परिवार परामर्शदाता निर्देश पुस्तकों का समूह सजाते हैं। सभी उत्तम माता-पिता के समूह के स्तरको संभालने के लिए आशान्वित हैं। अनेकों में विशेष गुण हैं यथा शिशुओं को बैठानेवाले अनुभवी प्रशिक्षित, धात्री प्राथमिक चिकित्सा में दक्ष, मनावैज्ञानिक, जनहितैषी, और नागरिक नेता।

ये गाढी शीतलतथ्य सौन्दर्य, उत्कण्ठा, मित्रता को छिपाती हैं जो उत्तम माता पिता समूह में पर्याप्त रूपसे पनपते हैं। इस उपकार में किसी के लिए पर्याप्त मानव लाभ है जिनको उत्साह है।

परिवार परामर्शदाताओं के सिद्धान्तों का पथ प्रदर्शन

१ ग्रहणीय। परिवार-परामर्श दाता सामान्यतः कमसे कम ३२ वर्ष की आयु का विवाहित होना चाहिए। डॉक्टर वकील, पुरोहित वर्ग, प्राध्यापक, वैज्ञानिक और दूसरे लेश नागरिक अपवाद स्वरूप है।

२ आचरण। परिवार-परामर्शदाता को आचरण और आर्थिक पूर्णता में ख्याति होनी चाहिए।

३ पुस्तकालय। परिवार-परामर्शदाताओं को अपने गृह अथवा कार्यालयों में निम्नांकित पुस्तकें रखनी चाहिए।

डी. कारनेगी-हाउडूविन फ्रेण्ड्स एण्ड इनफ्लुएन्स पीपल।

The money awards of the Essay Contest take on something of the nature of fellowships when they are won by research scholars. A list of representatives to write to for further information and other help is included in the handbill brochure of the Essay Contests.

Family Consultants offer up to several hours a week for free service to parents that make request. All Family Consultants are equipped with a set of reference books. All are expected to maintain the standards of the Good Parents Group. Many have special skills in addition, such as experienced baby sitters, trained nurses, first aid experts, psychologists, philanthropists, and civic leaders.

These cold condensed facts hide the beauty, warmth, and friendliness that thrive abundantly in the Good Parents Group. There is plenty of human interest in this charity for anyone that has the spirit.

FAMILY CONSULTANTS GUIDING PRINCIPLES

1 ELIGIBILITY. Family Consultants should usually be at least thirty years of age, preferably married. Exceptions may be made for doctors, lawyers, clergy, professors, scientists, and other outstanding citizens.

2 CHARACTER. Family Consultants should have a reputation for character and financial integrity.

3 LIBRARY. Family Consultants should keep the following books in their homes or offices :

D. Carnegie-How to Win Friends and Influence People.

एम. फिशबेन-होम मेडिकल पडवाइजर ।

गुड पेरेन्टस एसोसिएशन-कीज टू सक्सेस ।

बी. स्पोक-बेबी एण्ड चाइल्ड केयर ।

४ प्रशिक्षण ।- परिवार परामर्शदाताओं को मित्रों पर कैसे विजय प्राप्त किया जाय' और 'सफलता की कुञ्जी अवश्य पढनी चाहिए । उनको कम से कम दूसरी पुस्तकों को भी देखना चाहिए । उनको आवश्यकता-नुसार सूचनार्थ इन पुस्तकों का प्रमाण देना चाहिए ।

५ परामर्श और पथ-प्रदर्शन । परिवार-परामर्शदाता माता-पिताओंकी प्रार्थना पर किसी निश्चित उद्देश्यसे भेंट करेंगे । वे वार्तालाप करेंगे, सम्मति देंगे, और उनकी शक्ति के सीमान्तर्गत पथ-प्रदर्शन करेंगे ।

(अ) जो व्यक्ति डॉक्टर, विधिवक्ता, पुरोहित वर्ग की व्यवसायिक सेवाओं की आवश्यकता अथवा दूसरे विशेषज्ञों को चाहते हैं उसी तरह परामर्श दी जायगी ।

(ब) पुस्तकालयों में प्राप्य प्रासङ्गिक पुस्तकों की संस्तुति के लिए लिखित रूप में परामर्श दी जायगी ।

(स) जो बच्चे पथ-प्रदर्शन चाहते हैं उनको अपने माता-पिता के साथ आना चाहिए ।

(द) वर्तमान कालीन समस्याओं के उपाय में सहयोग परिवार में आनन्द के लिए उत्साहित करना, और परिवार के विशेष स्वास्थ्य में उन्नति ही सिद्धान्तरूप से उद्देश्य होना चाहिए ।

६ आरोग्य केन्द्र । आरोग्य केन्द्र परिवार-परामर्शदाता हैं जो व्यवसायिक औषधीय डाक्टर हैं । वे सप्ताह में में एक घण्टा अपने समय को निःशुल्क औषधीय सेवा के लिए इस समझौते के साथ अर्पण करते हैं कि उत्तम माता-पिता समाज औषधीय सामान को क्रय करने में सहायता देंगे ।

७ दान । उत्तम माता-पिता समाज एकदम दातव्य, वैज्ञानिक और शिक्षा-सम्बन्धी संघटन है । परिवार परामर्शदाता बिना कुछ लिए निःशुल्क रूपसे परिवार-

M. Fishbein-Home Medical Adviser.

Good Parents Association-Key to Success.

B. Spook-Baby and Child Care,

4 TRAINING. Family Consultants must have read How to Win Friends and Keys to Success. They should refer to these books for information when needed.

5 ADVICE AND GUIDANCE Family Consultants will interview parents that make request. They will confer advise and guide within the limits of their ability.

a Persons needing the professional services of a doctor, lawyer, clergyman, or other specialist will be so advised.

b. Advice given in writing shall be limited to recommendations of pertinent books available at libraries.

c. Children needing guidance must be accompanied by their parents.

d. Advice and services shall aim principally at cooperating in the solution of problems presented, encouraging harmony in families, and improving the general health of families.

6 HEALTH CENTRES. Health Centres are Family Consultants that are professional medical doctors. They agree to offer around an hour a week of their time for free medical service with the understanding that the Good Parents Group will aid in the purchase of medical supplies.

7. CHARITY. The Good Parents Group is strictly a charitable, scientific, and educational organization. Family Consultants shall give their

परामर्शदाता के जैसा अथवा असहाय को मैत्री रूप के जोश में कर्तव्यभार समझ कर अपनी सेवा प्रदान करेगा ।

- ८ उत्साह । परिवार-परामर्शदाता को उपकार के कार्य में उत्साह होना-चाहिए । अनेक व्यक्ति उत्तम माता-पिता समाज अथवा धार्मिक चंदा देनेवालों में नाम के हिस्सेदार हो सकते हैं । दूसरे बहुमूल्य प्रचार के प्रबन्ध द्वारा सहयोग दे सकते हैं । परन्तु परिवार-परामर्शदाता शासन-प्रबन्ध के अंश हैं । उनको शासन-प्रबन्ध के बोझको वहन करने की सहायता में उत्सुक होना पर्याप्त होना चाहिए ।

महात्मा गांधी स्मृति परितोषिक प्राप्त करो । स्वयंसेवक की तरह परिवार परामर्शदाता बने ।

जनसंख्या के प्रजावृद्धि निबन्धस्पर्द्धा

प्रजावृद्धि निबन्ध स्पर्द्धा मानववर्ग के लिए स्वतन्त्रता में विश्वास प्रकट करता है । स्पर्द्धात्मक लेख को सर्वोत्तम परिणाम के लिए विचार की स्वतन्त्रता के एक विस्तृत क्षितिज की आवश्यकता है । अधिकृत स्वतन्त्रता, अधिकृत सत्यता से लाभ की उदारता व जा कुछ आवश्यकता है उसका पतन हांता है । अभीतक प्रत्येक संस्कृति में वक्तव्य की स्वतन्त्रता का आस्तित्व परिमित है । विरोधात्मक लेख जैसे हम हैं और जो कुछ अच्छा कर सकते हैं, मानव के व्यवहारिक प्रयत्न को प्रकट करता है । जनसंख्या के प्रतियोगितात्मक लेख का अभिलेख भारत वर्ष में मानसिक संस्कृति के उच्च नियम लिए हमारे चिन्ह जैसा खड़ा है ।

निबन्ध स्पर्द्धा का इतिहास

जनसंख्या के निबन्ध स्पर्द्धा १९४४ के शरदऋतु से प्रारम्भ हुए और सन्ताराम भाटिया, सम्पादक 'इंडियन लायब्रेरियन' मंत्री के साथ प्रारम्भ है । निबन्धस्पर्द्धा के उत्तम जीवन की प्रतिष्ठा बृहत् रूप से उनके जोश से की जा रही है ।

services as Family Consultant freely without charge or obligation in a spirit of friendly helpfulness.

- 8 ENTHUSIASM. Family Consultants should have enthusiasm for this charity work. Many persons may be nominal participants in the good Parents Group or just contributor. Others may cooperate by providing valuable publicity. But Family Consultants are part of the administration, They should be enthusiastic enough to help carry the burden of administration.

EARN THE MAHATMA GANDHI MEMORIAL AWARD-VOLUNTEER AS A FAMILY CONSULTANT

POPULATION ESSAY CONTEST

The Population Essay Contest expresses faith in freedom for humanity. The Essay Contest needs a wide horizon of freedom of thought for best results. Authoritarian freedom, the liberty to benefit from authoritarian truth, falls short of what is needed. Yet limits to freedom of speech exist in every culture. The Essay Contest expresses a practical effort of human beings to do the best we can as we are. The record of the Population Essay Contest stands as a monument to the high level of intellectual culture in India.

History of the Essay Contest.

The Population Essay Contest began in the autumn of 1944 and has continued with Sant Ram Bhatia, Editor of the Indian Librarian, as Secretary. Credit for survival of the Essay Contest goes largely to his spirit,

जनसंख्या के निबन्धस्पर्धा के दसवें वार्षिकोत्सव में भारत वर्ष के पुस्तकालयों और पुस्तकाध्यक्षों का आदर किया गया था। उन्होंने निबन्धस्पर्धा लेखकों को सफलतापूर्वक सम्पादन किया।

क्या इस तरह के निबन्ध स्पर्धा इटली, रूस, अथवा, कनाडा में बहुत वर्षों तक सफलतापूर्वक स्थापित और जारी रह सकता है? आपके उत्तर आवश्यक रूपसे विचारपूर्ण हैं क्योंकि यह नहीं किया गया है। क्या यह भारत वर्ष में किया जा सकता है? उत्तर हाँ में है क्योंकि यह पुस्तकालयों और पुस्तकाध्यक्षों व दूसरों के साथ उनके सहयोग से सबसे अधिक प्रयत्नशील परिस्थितियों में किया गया है।

१९४४ में ऐसे निबन्ध स्पर्धा की संभावना में सन्देह था। बम्बई, लाहौर, कलकत्ता और मद्रास में चार प्रयत्न किए गए थे। केवल एक वर्तमान रहा एक लाहौर में सन्तराम भाटिया, मंत्री के साथ रहा। सौभाग्यवश वह पुस्तकालय आन्दोलन में बहुत परिश्रमी थे। उन्होंने जनसंख्या के स्पर्धात्मक लेख में अनुभव और उमंग सभी उपायों को रखा और दूसरों की सहायता प्राप्त की।

निबन्धस्पर्धा बृहत् रूप से स्वयंसेवकों की सेवा पर निर्भर था। दानशतागण इच्छापूर्वक रूप का दान देते थे क्योंकि उनका विश्वास था कि निबन्धस्पर्धा अच्छी है। वे इस इच्छाशील, सहकारी, निःशुल्क उद्योग को सम्पत्तिदान से उत्साहित करते हैं।

प्रतिस्पर्धी अपने लेख में कई घण्टे विचार और अनुसन्धान भारत की विजय और सहायता की उन्नति की आशा में अर्पण करते हैं। भारतवर्ष के सर्वत्र पुस्तकाध्यक्ष हस्तविज्ञापनक, छोटी पुस्तकें, प्रनोत्तर, को वितरण करते हैं और स्पर्धा में भाग लेनेवालोंके अतिरिक्त क्षतिपूर्ति के बिना सहायता देते हैं। विचारोंके प्रतिष्ठित नेताओंने अपनी सेवाओं को स्वतः अर्पित, जनसंख्या के

The Tenth Anniversary Celebration of the Population Essay Contest honored the libraries and librarians of India. They made the Essay Contest a success.

Can an essay contest of this nature be established and run successfully for many years in Italy, Russia, or Canada? Your answers are necessarily speculative because it has not been done. Can it be done in India? The answer is Yes! because it has been done under most trying circumstances by the cooperation of libraries and librarians with others.

In 1944 the possibility of such an essay contest was in doubt. Four attempts were made in Bombay, Lahore, Calcutta, and Madras. Only one survived, the one in Lahore with Santram Bhatia as Secretary. Fortunately he was very active in the library movement. He put all the resources of his experience and enthusiasm into the Population Essay Contest and won the support of others.

The Essay Contest has had to depend largely on volunteer services. Contributors make voluntary contributions of money because they believe the Essay Contest is good. They encourage this voluntary, cooperative, free enterprise with **Sampattidan**. Contestants devote many hours of research and thought to their essays in the hope of winning and contributing to the progress of India. Librarians throughout India distribute handbill brochures, answer questions, and assist Contestants without extra com-

स्पष्टात्मक लेखों के निर्णयार्थ किया है। प्रकाशक अपने समाचार पत्र और पत्रिकाओं में बहुमूल्य निःशुल्क प्रचार के साथ आगे आए हैं। मंत्राका विशेष रूप से भारी सेवा का उपहार आया है।

प्रजाशुद्धि निबन्ध स्पर्धा का भाग्य कभी कभी सन्देहमें रहा। सन्तराम भाटिया ने समाज के सहयोग के प्रभाव के लिए पूर्व वर्षों में स्पष्टात्मक लेखों के सहायतार्थ जान का जोखिम उठाया। तब विभाजन हुआ भाटिया सर्वनाश के लिए निश्चित किये गये। वे सभी अधिकृतवस्तुओं-गृह और कुर्सी, मेज आदि सामानोंको ज्वाला में खो चुके और सदा के लिए उनके परिवारकेचित्र भी नष्ट हो गए परन्तु वे बल नहीं तोड़े अथवा असफल न हुए। उन्होंने अपने बाल-बच्चों के जीवन का रक्षा की, अपने अच्छे कार्योंको चालु रक्खा, और आदर्शानुसार अपने जीवनको जारी रक्खा।

प्रथम तीन वर्षों के अन्तर्गत दर्जन से कम स्पर्द्धा निबन्धस्पर्द्धा के लिए प्रवेश किए। अभी तक वस्तुतः विजय-लेख लम्बाई में १०० पृष्ठों से अधिक में थे। हालही में कई दर्जन स्पर्द्धा प्रतिवर्ष प्रवेश किए हैं। आश्चर्यरूपसे विजय-लेख वस्तुतः १०० पृष्ठ से कम सम्पादित हुए हैं।

लेख में अधिक तर जनसंख्या और युक्तियों की व्यवसायिक साधारणीकरण, शिक्षा की मृत्यु, शक्तिवर्द्धक भोज्य की कमी, उर्वरापन, तुल्यरूप अनुगमन किए गए हैं। पालन-पोषण की विभिन्न समभाव अध्ययन, आरोग्य गृह और भारत वर्ष में अन्य रहने की दशाओं की उपेक्षा की गई है। वास्तविक पारिवारिक स्थिति का अध्ययन कम है। दरिद्रता से धन के जीवन के ढंग का दृष्टान्त

pensation Distinguished leaders of thought have volunteered their services as Judges of the Population Essay Contest Publishers have come forward with valuable free publicity in their newspapers and magazines. By far the greatest gift of service has come from the Secretary.

The fate of the Population Essay Contest sometimes hung in the balance. Sant Ram Bhatia risked his life to support the Essay Contest in the early years as an influence for community cooperation. Then came partition..... Bhatia was listed for ruin. He lost all of his possessions home and furniture in flames, even the family pictures gone forever. But he did not break or fail. He saved the lives of his family, kept up his good works, and continued to live according to ideals.

Less than a dozen Contestants entered the Essay Contest during the first three years. Yet the winning essays were all substantially more than a hundred pages in length. Recently several dozen Contestants have entered every year. Surprisingly the winning essays have run substantially less than a hundred pages.

The essays have followed too much the traditional generalizations of population and resources, child mortality, malnutrition, productivity, and the like. Normative studies of different levels of nutrition, health, housing and other living conditions in India have been neglected. Actual

अथवा बाधा से साधन-प्राप्ति, विचित्र निरक्षिण, और समस्याओं के लिए अच्छे उपाय वास्तव में दुर्लभ हैं। भारत विरोध का देश है, और मानव-हितार्थ अवसर नाटकीय परिज्ञान, और अत्यावश्यक ज्ञान बहुतायत से होते हैं।

जनसंख्याके निबन्ध-स्पर्धा के पूर्व वर्षों तक सन्तति-निरोध के हवाले अत्यन्त परिमित थे इसलिये प्रासंगिकतात्पर्य यथा वन्ध्यत्व पर विजय पाने, इच्छानुसार प्रथम पुत्र का जन्म बच्चों के जीवन की रक्षा और प्रसिद्ध नागरिकों को बृहत् सन्तति रखने में उत्साहित करने में सन्तति-निरोध की आवश्यकता को सम्पादित किया गया था।

स्पर्धा गर्भ-निरोध और सन्तति-परिसीमा, जन्म-निरोध के अपने लेखों के बृहत् हिस्सों पर लवलीन होने पर ध्यान देते हुए आगे बढ़े। सन्तति-निरोध की आवश्यकता का प्रसङ्ग छोड़ दिया गया था। स्वास्थ्य के लिए शिशु-वृद्धि सन्तति-निरोध का एक अंश हो सकता है परन्तु यहाँ जन्म-निरोध प्राकृतिक पद्धतियों की तुलना में एक लघु विवरण है। जन्म-निरोध अथवा गर्भ-निरोध सापेक्ष तुच्छ है, मातृत्व-पितृत्व का स्तर वास्तविक विषय है।

हाल में ही अनेक स्पर्द्धियोंने बृहत् दृढज्ञान को प्रकट किया है कि इच्छते हुए एकतिहाई जनसंख्या को उन्नत करने के लिए सरकार क्या करेगी। वे ठीक हैं यह हमलोग आशा करें। अधिक आगे हमलोग आशा करें कि स्पर्द्धी जीवन के समभाव की उन्नति दूसरे मार्गों से व आत्मिक, नैतिक, स्वस्थ व आर्थिक को अतिश्रद्धासे विकसित करेंगे। महात्मा गाँधी भी अभी आ सकते हैं।

family case studies have been few. Citations of careers from poverty to wealth or from handicaps to achievements, unusual observations, and novel solutions to problems have been rare indeed. Yet India is a land of contrasts, and opportunities abound for human interest, dramatic insight, and vital wisdom.

Reference to family planning were unduly limited during the early years of the Population Essay Contest. Therefore family planning was made a required topic meaning such desirable things as the over coming of sterility, the birth of a first-born son by choice, saving the lives of children, and encouraging leading citizens to have large families.

Contestants proceeded to concentrate on contraceptives and family limitation, devoting large parts of their essays to birth control. The requirement of family planning as a topic had to be abandoned. Proper spacing of children for health may be a part of family planning but here birth control is a minor detail compared with natural methods. Birth control or contraception is relatively unimportant; the standard of parenthood is what really matters.

Recently many Contestants have expressed great confidence in what the government will do to improve the living of the submerged one-third of the population. Let us hope they are right. Furthermore let us hope Contestants will develop enthusiasm for other ways to improve the level of living, spiritual, ethical, and healthful as well as economic. Mahatma Gandhi may yet come into his own.

निबन्धस्पर्धा का प्रयोजन

निबन्धस्पर्धा जन संख्या के संयोग की मित्रता को बढ़ाता है, पुस्तकालयों में लोग ध्यान देते हैं, और शिक्षा और स्वास्थ्य में उचितिको उत्साहित करता है। निबन्धस्पर्धा तरुण पुरुषों को जनसंख्या के सम्बन्धमें व्याख्यान की स्वतन्त्रता के लिए एक आह्वान अवसर प्रदान करता है और तरुण नेताओं के विचारोंका आदर करता है जो सम्बन्धित मानव समस्याओं के व्यवहार में योग्यता प्रदर्शित करता है। निबन्धस्पर्धा शिशुओं और बच्चोंके जीवन रक्षार्थ पथ प्रदर्शन करता है।

निबन्धस्पर्धा महात्मा गाँधी को उनकी आत्माभूति और मानवता के उत्थान में नेतृत्व को आदर करता है।

निबन्धस्पर्धा का गुण

निबन्धस्पर्धा शिक्षा, विज्ञापन और विशय नीतिके साथ, पुस्तकालयों के विस्तृत प्रसार की सहायता को निर्माण करता है। फ्रैंक सी लॉबैकने प्रदर्शित किया है कि करोड़ों व्यक्ति पुस्तकालयों में उपलब्ध चित्र सहित पहिली पुस्तक को पढ़ना कैसे सीखते हैं। परिणाम स्वरूप पुस्तकालय ज्ञान के भण्डार हो गए हैं जहाँ लगभग कोई भी अपनी इच्छाओं के अनुसार विकास, प्रयत्न, और शक्ति से सीख सकते हैं। इसकी उद्घोषणा के साथ जनसंख्या के स्पर्धात्मक लेख द्वारा वह प्रसारित संवाद है कि कोई भी व्यक्ति भारतीय सीमा के अन्तर्गत उत्पन्न हुआ है वह प्रवेशार्थ पात्र होगा।

निबन्धस्पर्धा के पारितोषिक परिनिर्णय साथ की कुछ शक्ति को लेते हैं जब वे गवेषकों द्वारा विजय प्राप्त करते हैं।

स्पर्धा लेखों की छोटी पुस्तिका, परिवार परामर्शदाता और उत्तम माता-पिता समाज के स्वास्थ्य केन्द्र के सैद्धान्तिक तात्पर्य का प्रचार है।

Purpose of the Essay Contest

The Essay Contest deepens the friendship uniting the population, interests people in libraries, and encourages improvement in education and health. The Essay Contest gives young people a challenging opportunity for freedom of speech on the subjects of population and honors young leaders of thought who show ability to deal with the related human problems. The Essay Contest leads to saving the lives of infants and children.

The Essay Contest honors Mahatma Gandhi for his inspiration and leadership in the uplift of humanity.

Value of the Essay Contest

The Essay Contest builds widespread support for libraries and education, both with advertisements and by general policy. Frank C. Laubach has shown how crores of persons can now learn to read with the picture primers available at libraries. As a result libraries have become treasuries of knowledge where nearly anyone can learn and develop according to his or her desires, efforts, and abilities. That is the message broadcast by the Population Essay Contest with its proclamation that any person born within the borders of India shall be eligible to enter.

The prize awards of the Essay Contest take on something of the nature of fellowships when they are won by research scholars.

The Brochure of the Essay Contest is also the principal means of publicizing Family Consultants and Health Centres of the Good Parents Group.

व्यक्ति उनमें उत्सुक हैं। निबन्ध-स्पर्धा सरिता इस प्राकृतिक अर्थ में हितकर लक्ष्य है। विजय-लेख इसके गुण पर निर्णय किया गया है जैसे साहित्य। यह स्तर विचार की स्वतंत्रता का एक विस्तृत क्षितिज को योग्य बनाता है। निम्नलिखित तीन जाँचों के अन्तर्गत लेखों की श्रेणीका निर्णय होता है।

१. दर्शन, दृष्टि, विचार
२. स्पष्टता, सत्यता, क्षमता।
३. सौन्दर्य, चित्ताकर्षकत्व, प्रोत्साहन।

ये साहित्य की परीक्षा हैं। निबन्ध स्पर्धा उत्तम विवृति में विकास और प्रशिक्षण के लिये यथार्थ अवसर को अर्पण करता है। स्पर्धा जब तक विजय नहीं प्राप्त करते तब तक वर्ष के बाद वर्ष में पुनः प्रयत्न करते हैं। पश्चात् वे निबन्ध स्पर्धा में अपनी शक्ति और जाँच की उन्नति करने के लिये प्रारम्भ करते हैं।

उत्तम प्रदर्शनसे लिखने की योग्यता एक व्यक्ति की सबसे अधिक बहुमूल्य दक्षताओं में है। लेख, पत्र और व्यापार में प्रतिवेदन, व्यवसाय, और सरकार सभी में उत्तम विवृति से लाभ होता है। विचारों के अनेक नेता अपने व्याख्यानों को व्याख्यान देने के पूर्व लिखते और बाद में उनको प्रकाशित करते हैं। वक्ता और लेखक की योग्यता विवृति प्रशिक्षण से उन्नत होती है।

सौभाग्यवश अच्छी विवृति में लिखने की योग्यता हम लोगों में से अनेकों की पहुँच के अन्तर्गत है। आजकल हम लोगों के पथ प्रदर्शनार्थ बहुमूल्य पुस्तकें हैं। यहाँ वर्णित पुस्तकें यद्यपि अंग्रेजी में हैं परन्तु उनके सिद्धान्त किसी भाषा में भी उपयोगी होते हैं।

People are keenly interested in themselves. The Essay Contest channels this natural interest in beneficial directions

The winning essay is judged on its merits as literature. This standard enables a wide horizon of freedom of thought. Judges grade the essays under the following three tests.

1. Philosophy, vision, thought.
2. Clearness, accuracy, force.
3. Beauty, charm, persuasion.

These are tests of literature. The Essay Contest offers real opportunities for training and development in good exposition. Contestants can try and try again year after year until they win. Then they can continue to improve their ability and test it in the Essay Contest.

The ability to write good exposition is one of the most valuable skills a person can have. Articles, letters, and reports in business, the professions, and government, all benefit from good exposition. Many leaders of thought write their speeches before delivery and publish them after. Abilities as a speaker as well as an author improve through training in exposition.

Fortunately the ability to write good exposition is within reach of many of us. Today there are valuable source books to guide us. The books mentioned here are in English but their principles apply in any language.

आर्ज हेनरी लीडज प्रिन्सिपल्स आफ सक्सेस इन लिट्रेचर (एलायन एन्ड बेकन, न्यूयार्क; १९१७) लिखने की कला पर प्रथमश्रेणी की रचना है जो दृष्टि, यथार्थता और सौन्दर्य को प्रमुख बनाती है ।

रोलो वाल्टर ब्राउन की राईटर्स आर्ट बाई दोज हू हैव प्राक्टिस्ड इट (हमफ्रेमिलफोर्ड लंदन, १९२१) प्रशिद्ध लेखकोंद्वारा लेखों की पुस्तक जो लिखने की कला को बतलाती है ।

रॉबर्ट ग्रेव्स एण्ड एलनहॉग, की रीडर ओवर योर शोल्डर (दि मैकमिलन कम्पनी न्यूयार्क १९४३) विश्लेषण करनेवाले मस्तिष्क के लिए सुगंधकारी आह्वान जो लिखावट की तथ्यता को बतलाती है और विशेष वर्णन सहित उदाहरण देती है ।

रुडॉल्फ फ्लेश, दि आर्ट ऑफ प्लेन टॉक (हारपर एण्ड ब्रदर्स पब्लिशर्स लंदन, १९४६) रुडॉल्फ फ्लेश, दि आर्ट ऑफ रीडेबल राइटिंग (हारपर एण्ड ब्रदर्स पब्लिशर्स न्यूयार्क, १९४९) प्रदर्शन में प्रारम्भकर्ताओं के लिए सहायक और आनन्ददायी पुस्तक जो आशा और दृढ़ज्ञान-निर्माण को प्रेरित करती है ।

डेल कारनेगी उत्तम प्रदर्शनका एक उत्कृष्ट उदाहरण है । हाउ टू विन फ्रेंड्स एण्ड इन्फ्लुएन्स पीपल (पाकेट बुक्स इनका, न्यूयार्क, १९५४)

जनसंख्या के निबन्ध स्पर्धा के पारितोषिक जीतनेवाले समालोचना संबंधी विश्लेषणात्मक लेख माइसोर इकानोमिक रिव्यू (अक्टू. १९५३) पृष्ठ १२-१४, (मार्च १९५४), पृष्ठ १०-१३; (जून, १९५४), पृष्ठ १३-१६; (नवम्बर, १९५४), पृष्ठ १३-१४; (मई, १९५५), पृष्ठ ९-१२; अगस्त १९५५), पृष्ठ २६, २८, ३३ (नवम्बर १९५५), पृष्ठ ४-७; (मार्च-एप्रिल १९५६), पृष्ठ १०-१४ नवम्बर १९५६), पृष्ठ २-६) में प्रकाशित हो चुके हैं ।

George Henry Lewes Principles of Success in Literature (Allyn and Bacon, New York, 1917) A classic on the art of writing that emphasizes vision, sincerity, and beauty,

Rollo Walter Brown, The Writer's Art by Those Who Have Practiced It (Humphrey Milford, London, 1921) A book of articles by famous authors that deal with the art of writing.

Robert Graves and Alan Hodge, The Reader over Your Shoulder (The Macmillan Company, New York, 1943) A fascinating challenge to the keen analytical mind that gets right down to facts on writing and gives specific examples.

Rudolf Flesch, The Art of Plain Talk (Harper & Brothers Publishers London, 1946) Rudolf Flesch, The Art of Readable Writing (Harper & Brothers Publishers, New York, 1949) Books of comfort and joy to the beginner in exposition that inspire hope and build confidence.

An excellent example of good exposition is Dale Carnegie, How to Win Friends and Influence People (Pocket Books, Inc., New York, 1954)

Critical analyses of prize-winning essays of the Population Essay Contest have been published in the Mysore Economic Review (Oct., 1953), pp. 12-14; (Mar., 1954), pp. 10-13; (Jun., 1954), pp. 13-16; (Nov., 1954), pp. 13-14; (May, 1955), pp. 9-12; (Aug., 1955), pp. 26-28, 33; (Nov., 1955), pp. 4-7; (Mar.-Apr., 1956), pp. 10-14; (Nov., 1956), pp. 2-6.

विधिसिंह द्वारा बैकवर्ड चिल्ड्रेन ऑफ अवर पॉपुलेशन (इण्डियन लाइब्रेरियन बालन्धर सिटी, १९५५) द्वारा जनसंख्या के समस्त स्पर्धात्मक लेख जो प्रथम पारितोषिक विजेता के पूर्ण लेख हैं ।

यहाँ जिन अवर्ण पृष्ठोंका वर्णन किया गया है वे केवल पुस्तकालयों में उपलब्ध सम्पत्ति के स्रोत के नमूने हैं । प्रारम्भकर्ता आजकल वास्तव में सहायक पुस्तकों से पुनः आनन्द उठा सकते हैं जो कि प्रारम्भिक व्याकरण और रचनासे बहुत आगे चली गई हैं । अच्छी व्याख्या पुस्तक या अन्य साधन, स्वाध्याय, अभ्यास से लाभ और प्रयत्न की आकांक्षा तक अब पहुँच गई है और वास्तविक जाँच निबन्ध स्पर्धा लेखों और जीवन के दंग में हैं ।

कुछ सरल नियम प्रारम्भकर्ता को आरम्भ करने में सहायता कर सकते हैं । प्रथम अपने विचार को स्पष्ट बनाने के लिए कठिन प्रयत्न करो । द्वितीय, अपने परिच्छेदको स्पष्ट और संक्षिप्त बनानेका प्रयत्न करो । तृतीय, अपने वाक्यों को स्पष्ट, संक्षिप्त और सीधा बनाने के लिये प्रयत्न करो । चतुर्थ अधिक व्यक्तिगत सर्वनामों के साथ वार्तालाप के शब्दों को व्यवहार करने का प्रयत्न करो । मानव-हितके लिए नाटक रूपमें बनाओ ।

लेख महान् लेखकों की दक्षता के साथ सभी नियमों के प्राप्त होने के मार्ग की एक कला है । इस प्रकार सम्पादन करो की पुस्तक-साधन, नियम, और स्पर्धात्मक लेख केवल आपके प्रारम्भ करने में सहायक है । जब आप पूर्ण लहर में होंगे तब आप निश्चित अपने लेखों पर विजयी होंगे ।

स्पर्धा लेखका भविष्य

प्रजाशक्ति निबन्धस्पर्धाका भविष्य चालु आर्थिक सहायता पर निर्भर करता है । सम्पत्ति शास्त्रका यह कठोर वास्तविक आंतरिक नियम पन्द्रह सौ रुपया वर्ष में बढ़ जाता है । निः-

The first prize-winning essay of the Population Essay Contest published in full is by Bidhi Singh, **Backward Children of Our Population** (Indian Librarian, Jullundur City, 1955)

The titles mentioned here are only samples of the wealth of sources available in libraries. The beginner today can rejoice at the way really helpful books have gone far beyond elementary grammar and composition. Good exposition is now within reach of many willing to try and benefit from sources study, practice, and real test in essay contests and careers.

A few simple rules may help the beginner get started. First, try hard to make your thought clear. Second, try to make your paragraphs clear and short. Third, try to make your sentences clear, short, and direct. Fourth, try to use the words of conversation with plenty of person : pronouns. Dramatize and pack in human interest.

Writing as an art has a way of getting around all rules with the skill of great authors. So realize that sources, rules, and essay contests are only to help you get started. When you are in full swing you will be strictly on your own.

Future of the Essay Contest

The future of the Population Essay Contest depends on continued financial support. This hard core of economic reality exceeds

सन्देह इसे सामना करना चाहिए इस बात के होते हुए भी यह निबन्धस्पर्धा के वास्तविक जोशसे बहुत दूर है। वास्तविक जोश ऐच्छिक सहयोग का यत्न है जो विभिन्न अपसर होने का कार्य, निःशुल्क उद्योग स्वतन्त्रता के इस कथन में मानव घण्टों के ९० प्रतिशतसे अधिक निर्माण करता है।

पुस्तकाध्यक्ष निबन्धस्पर्धा की सिली हुई छोटी पुस्तकों का प्रचार और वितरण करते हैं। पश्चात् वे अपनी शक्ति की उदारता से स्पर्द्धियों को सहायता प्रदान करते हैं। सम्पादक और प्रकाशक निःशुल्क प्रचार क द्वारा सहयोग करते हैं। निबन्धस्पर्धा के ऑफिसर और न्यायाधीश जन-सेवा के जोश में अपनी बहुमूल्य दक्षता को उदारता-पूर्वक प्रदान करते हैं।

भारतवर्ष दर्शन दृग्बिषय, और विचार के दान के लिए विख्यात है। जनसंख्यामें मर्म-स्थल निकास पर सजीव प्रसंग सम्मिलित है। निश्चयही निबन्धस्पर्धा ज्ञाधन प्राप्ति के उच्च नियम को प्रकाश में लायेगा।

स्पष्टवादिता, सत्यता का स्तर और प्रभाव यथोचित सिद्ध किया है। सम्पादक प्रकाशन के पूर्व अन्तिम स्पर्श कर सकते हैं। सूचीपत्र, चित्र, रेखाचित्र, चित्र और दूसरे दृष्टान्त ग्रन्थ-विद्या, सूची और दूसरी सजावटें प्रकाशन के पूर्व जोड़े जा सकते हैं।

सौंदर्य, चित्ताकर्षक, प्रोत्साहन, उन्नति के साथ आयेंगे। साक्षरता, पुस्तकालय, और शिक्षा उन्नति पर है। विजय लेख का गुण प्रतियोगिता उत्थान में उत्कर्ष को प्राप्त होगा। जनसंख्या मानव-हित से भरा हुआ, मोहक प्रसंग सजीव बिषय का अभ्ययन है। पारितोषिक विजय लेखों की सर्वोत्तम विक्रय पुस्तक का प्रकाशन केवल समय की बात है।

fifteen hundred rupees a year. It must be faced even though it is far away from the real spirit of the Essay Contest. The real spirit is voluntary cooperative endeavor that constitutes more than ninety per cent of the man-hours in this expression of liberty, individual initiative, and free enterprise.

Librarians advertise and distribute the Brochure of the Essay Contest. Then they give generously of their ability to help Contestants. Editors and publishers cooperate with free publicity. Officers and Judges of the Essay Contest give liberally of their valuable skills in a spirit of public service.

India is famous for contributions to philosophy, vision, and thought. Population includes lively topics on vital issues. Surely the Essay Contest will bring to light high levels of achievement.

Standards of clearness, accuracy, and force have proven adequate. Editors can put the finishing touches on before publication. Tables and charts, graphs, diagrams, pictures, and other illustrations, bibliography, index, and other embellishments can be added before publication.

Beauty, charm, and persuasion will come with progress. Literacy, libraries, and education are on the way up. The quality of the winning essay will rise as the competition rises. Population is full of human interest, fascinating topics,

प्रसिद्ध प्रकाशक पुस्तक प्रकाशित करने का अवसर उस समय हूँदते हैं जब उसकी प्रसिद्धी में विश्वास हो जाता है। जनसंख्या-स्पष्टात्मक लेख की आर्थिक व्यवस्था के लिए एक पुस्तक के मूल्य में प्रन्थकार का प्राप्ता अंश अत्यधिक होना चाहिए। पश्चात् आर्थिक समस्या का हल होगा और स्पष्टात्मक लेख का भविष्य दीप्तिसे दीप्तिमान में परिवर्तन होगा।

सफलता की तरह कुछ भी अतिरिक्त सफल नहीं होता है। सर्वोत्तम स्थान जैसे वास्तविक आह्वान तर्कों को यह कहते हुए कि बढ़ जाना है कि "मैं साहस करता हूँ, मैं साहस करता हूँ मैं साहस करता हूँ।" महान् पुस्तकें तरुण लेखकों को द्वितीय अभिप्रेम पग उठाने के लिये प्रेरित करती हैं। पारितोषिक विजय सम्बन्धों लेख स्पष्टियों को नवीन विषय के लिए प्रेरित करता है।

जब प्रजावृद्धि निबन्धस्पष्टा लेख प्रारंभ हुए तब भारत की स्वतन्त्रता एक स्वप्न था। आजकल रहनेका एक उच्च आर्थिक स्तर अनेक व्यक्तियों के लिए एक दूरस्थ संभावना की तरह प्रतीत होता है। कुछ अन्य मानव बर्गों की अभिलाषा अत्यधिक दूरस्थ प्रतीत हो सकती है। परन्तु हमलोग स्वप्न देख सकते हैं क्या हमलोग योग्य नहीं हो सकते? हमलोगों के पुस्तकालय और शिक्षक उच्च आदर्श के लिए हम सबको प्रेरित करते हैं। पुस्तकालय, विद्यालय और अध्यापक भी हमलोगों की व्यवहारिक वास्तविकता के लिए पथ प्रदर्शन करते हैं। हमारे स्वप्नों का विकास हाना संभावित है .. पश्चात् चमक की तरह हमलोगों के मस्तिष्क में कार्यवाही का संयोग आता है। अकस्मात् कल का स्वप्न आज का वास्तविक होता है। यथार्थ आवश्यकतासे कम के अनुमान, शीघ्र मानव उन्नति के लिये कभी नहीं संभावित है

lively case studies. Publication of a best-selling book of prize-winning essays is only a matter of time.

Leading publishers will seek the opportunity to publish a book when its popularity is assured. The royalties on one book can be more than enough to finance the Population Essay Contest. Then the financial problem will be solved and the future of the Essay Contest will change from bright to brilliant.

Nothing else succeeds like success. The Best stands as the real challenge to excel, saying to youth "I dare you, I dare you, I DARE YOU!" Great books inspire young authors to take another step forward. Prize-winning essays inspire Contestants to new high levels of victory.

The independence of India was a dream when the Population Essay Contest began. Today a high economic standard of living seems like a remote possibility to many persons. Some other aspirations of humanity may seem even more remote. But we can dream, can't we? Our libraries and teachers inspire us to high ideals. Libraries, schools and teachers also guide us to practical realities. Our dreams develop possibilities...then the chance for ACTION comes to our mind like a flash. Suddenly the dream of yesterday becomes the reality of today. Never underestimate the possibilities for rapid human progress.

प्रजावृद्धि निबन्धस्पष्टा आपको सम्मिलित करते हुए अनेक व्यक्तियों के सहयोग पर

The Population Essay Contest depends on the participation of

निर्भर है। लिखने का प्रयत्न करो अथवा समाचार पत्र में लिखने का प्रयत्न करो प्रश्नों को पूछते हुए प्रयत्न करो सत्य जोश का समझ हो। केवल कल्पनाशक्ति से कभी सन्तुष्ट न हो। कार्य के प्रवाह में लगे। प्रारम्भ करने का मार्ग प्रारम्भ करने के लिए है।

अन्य सूचनाएं प्राप्त करनेके लिये सन्तराम, संपादक 'इण्डियन लायब्रेरियन' २३३, मॉडल टाउन, जालन्धर सिटी पंजाब, भारत को बिना मूल्य प्रजावृद्धि निबन्धस्पर्धा की सिली हुई छोटी पुस्तकों के लिये लिखो।

many persons, including you. Try writing...or try contributing... try asking questions...sense the true spirit. Never be satisfied with mere fantasy. Get in the swim! The way to begin is to begin.

For further information please write for the free Brochure of the Population Essay Contest from Sant Ram Bhatia, Editor of the Indian Librarian, 233 Model Town Jullundur City, Punjab, India.

पारिवारिक परामर्शदाताओं

और
आरोग्य केन्द्रों
की निर्देशिका

सन्तति परामर्शदाता वर्ग

DIRECTORY

of
Family Consultants
and
HEALTH CENTRES

Family Consultants

इलाहाबाद...श्री. पी. सी. गुप्त, ५ चाह चौद इलाहाबाद।
श्री. मगनानंद, सेंट्रल स्टेट लायब्रेरी,
५३ महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद, उ. प्र.

Allahabad...Shri P. C. Gupta,
5 Chah Chand Allahabad.
Shri Magna Nand,
Central State Library,
53 Mahatma Gandhi Marg.
Allahabad, U. P.

अमृतसर...श्री. आर. एस. अरोड़ा, निमक मण्डी
३, कन्धारिया स्ट्रीट, अमृतसर.

Amritsar...Shri R. S. Arora,
Nimak Mandi, 3, Kandharian
Street, Amritsar, Punjab.

बापटला...श्री. एम. एस. आर. मूर्थी, द्वारा, डी वी.
एन. साहू, वकील बापटला आन्ध्र प्रदेश

Bapatla...Shri M. S. B. Murthy,
C/o D. V. N. Sastry, Vakil,
Bapatla, Andhra Pradesh.

बड़ौदा...श्री. एम. ए. दोदानो, जयदेव ब्रदर्स,
आत्मारामरोड, बड़ौदा, (गुजरात राज्य)

Baroda...Shri S. A. Dodani,
Jaideva Bros., Atmaram
Road, Baroda, Bombay State

बिलासपुर...श्री. के. एल. धर, गवर्नमेण्ट इंटर कॉलेज,
बिलासपुर, शिमला हिल्स।

Bilaspur...Shri K. L. Dhar.
Govt. Inter College, Bilaspur,
Simla Hills.

कलकत्ता...श्री. के. सी. लालवानी, १२, डफ स्ट्रीट,
कलकत्ता ६, पश्चिम बंगाल।

Calcutta...Shri K. C. Lalwani,
12, Duff St., Calcutta 6.

देहरादून...श्री. जे. एन. सहाय, ५, प्रतिमरोड,
देहरादून, उ. प्र.

Dehradun...Shri J. N. Sahai, 5, Pri-
tam Road, Dehradun, U.P.

- दिल्ली** ...श्री. एच. सी. बनजाही, सोहनगंज स्ट्रीट, दिल्ली
- हैदराबाद** ...श्री. आर. वी. राव, कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज डाईरेक्टरेट, गवर्नमेण्ट ऑफ हैदराबाद, हैदराबाद दक्खिन.
- कानपुर** ...श्री. आर. एस. निगम, १०४ ए/५१ रामबाग कानपुर उ० प्र.
...श्री एल. एन. सक्सेना, ५ डी, लारमरबाग, कानपुर कैण्ट, उ० प्र.
- मद्रास** ...श्री के. वी. वेंकटाचलम् आई. एस. पी. सन्नाधी स्ट्रीट, रॉयपेटाह, मद्रास १४,
- नैनीताल** ...श्री बी. पी. मिश्र, डी. एस. बी. गवर्नमेण्ट कॉलेज, नैनीताल, उ० प्र.
- नईदिल्ली** ...श्री पी. सी. थेंसिल, सी। २६ ईस्ट विनय-नगर, नईदिल्ली.
श्रीमती कमला भाटिया, म्युनिसिपल गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल, गोल मारकेट, नईदिल्ली
श्री एस. एन. चक्रवर्ती, २६ फिरोजशाह रोड, नईदिल्ली ।
श्री के. एल. कोहली, ६८-सी. इरविन रोड, नईदिल्ली ।
श्री गिरधारीलाल, ११-१५ पश्चिम पटेलनगर, नईदिल्ली ।
- पटना** ...श्री अजीत गोपालराय, कदमकुआँ, पटना ३ बिहार ।
- पूना** ...श्री डी. वी. गोखले ६०४ सदाशिव पूना २, बम्बई राज्य ।
- सोलन** ...श्री बिधिसिंह, सीनियर बेसिक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, सोलन, शिमला हिल्स ।
- त्रिपुनीचुरा** श्री एस. विस्वनाथन्, कुट्टिकाट्टिल मधम, कन्नम कोलमकारा, त्रिपुनीचुरा, केरलराज्य ।
- Delhi** ...Shri H. C. Banjahi, Sohanganj Street, Delhi.
- Hyderabad**...Shri R. V. Rao, Commerce and Industries Directorate, Government of Hyderabad, Hyderabad Deccan.
- Kanpur**...Shri R. S. Nigam, 104A/51, Ram Bagh, Kanpur U. P.
Shri L. N. Saxena, 5-D, Larmour Bagh; Kanpur Cantt., U. P.
- Madras** ...Shri K. V. Venkatachalam, I. S. P. Sannadhi-Street, Royapettah, Madras. 14,
- Nainital**...Shri B. P. Misra, D. S. B. Government College, Nainital U. P.
- New Delhi**...Shri P. C. Bansil, C/26 East Vinay Nagar, New Delhi.
Mrs. Kamala Bhatia, Municipal Girls Higher Secondary School, Gole Market New Delhi.
Shri K. L. Kohli, 68-C. Irwin Road, New Delhi.
Shri Girdhari Lal, 11-15, West Patel Nagar, New Delhi,
- Patna** ...Shri Ajit Gopal Roy, Kadam Kuan, Patna 3, Bihar
- Poona** ...Shri D. V. Gokhale, 604 Sadashiv, Poona 2, Bombay State.
- Solan** ...Shri Bidhi Singh, Senior Basic Teachers Training College, Solan, Simla Hills.
- Tripunittura**—Shri S. Viswa Nathan, Kuttikkattil Madham, Kannam Kolam Kara, Tripunittura, Kerala State.

आरोग्य केन्द्र

देहरादून ...डॉ. पी. एल. लेहण, फैमिली वेलफेयर,
२३, हरद्वार रोड, देहरादून, उ. प्र.

जबलपुर ...डॉ. पी. एल. चोपड़ा, फैमिली सर्विस सेन्टर,
गंजीपुरा, जबलपुर, मध्यप्रदेश ।

कसौली ...डॉ. एच. धिल्लन, विन हेवन, कसौली ।

Health Centres

Dehradun—Dr. P. L. Trehan, Family
Welfare, 23 Hardwar Road,
Dehradun, U. P.

Jabalpur—Dr. P. L. Chopra, Family
Service Centre Ganjipura,
Jabalpur, (Madhya Pradesh)

Kasauli—Dr. H. Dhillon,
Win Haven, Kasauli.

उपयोगी पठनीय साहित्यिक ज्ञान: -
बैकवर्ड चिल्ड्रेन ऑफ अवर पॉपुलेशन:—

र. १.५० न. पै. प्रथम पारितोषिक चित्ताकर्षक लेख,
सम्पूर्ण प्रकाशित ।

हाउ टु हैव ए सन (हिन्दीमें) — २० न. पै.
नक़द अथवा टिकट । नए खोजद्वारा चार पुत्र कैसे हों,
यह प्रदर्शित करती है ।

कीजटुसकसेस-र. १.५० न. पै. स्वास्थ्य, सम्पत्ति,
और आनन्द के लिए प्रामाणिक अत्यावश्यक पथ प्रदर्शन ।

प्रसिद्ध पुस्तकालयों और पुस्तक मण्डारों अथवा सीधे
जयदेव ब्रदर्स, आत्मराम पथ, बड़ौदा से अपनी पुस्तकालय
के लिए क्रय करके एक प्रति रखो ।

अपने समीपस्थ पुस्तकालय से सहयोग करें...

और जहाँ स्थानीय पुस्तकालय नहीं हैं, वहाँ पुस्तकालय
प्रारम्भ करने के लिए जो कुछ आप कर सकते हैं करें ।

मैत्रीमें सहस्रों रुपय

प्रजाश्रद्धि निबन्धस्पर्धा के विजेताओं द्वारा उपार्जन
किया हुआ, पारितोषिक विजय किये हुए लेखों के विवरण और
सूची के लिये, अब सन्तराम भाटिया सम्पादक इण्डियन
लाइब्रेरियन ' २३३, मॉडल टाउन, जालंधर सिटी, पंजाब
भारतवर्ष को लिखो ।

Recommended Reading

Backward Children of Our Popu-
lation Re. 1-50 First Prize Winning
Essay, published in full.

How to Have a Son (In Hindi)
20 Np. cash or stamps. Shows you
how to have four (4) sons by new
discoveries.

Keys to Success. Re- 1-50 The
authentic indispensable guide to
Health, Wealth, and Happiness,

At leading libraries and bookstores
or direct from

Jaideva Bros Atmaram Road
Baroda, Give a copy to your library.

Cooperate with your neighbourhood
library,

And where there is no local library,
Please do what you can to start one.

Thousands of Rupees In Fellowships

Earned by winners of the
Population Essay Contest
For details and list of Prize winning
essays, write now to
Sant Ram Bhatia, Editor of the
Indian Librarian, 233 Model
Town, Jullundur City,
Punjab, India.

उत्तम माता पिता समाज प्रजावृद्धि निबन्धस्पर्द्धा

१३३, मॉडल टाउन, जालन्धर सिटी (भारत)

आप विजय प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि अब पुस्तकालयोंमें तथ्यों की प्राप्ति है। अब विजय कर सकते हैं क्योंकि आपकी शक्ति अब सदा के लिए सर्वोत्तम है।

आप सहजमें ही प्रजावृद्धि निबन्धस्पर्द्धा के विजयी हो सकते हैं-तीन दर्जनसे कम स्पर्द्धा १९४४ तक प्रति वर्ष प्रवेश कि। वे अपनी दौड़ में सैंकड़ों रुपए पारितोषिक व उन्नति पाए।

आजकल स्पर्द्धा में प्रवेश के लिए-अब लिखो।

स्पर्द्धा के लिए ग्राह्य-भारतीय सीमा के अन्तर्गत उत्पन्न कोई भी व्यक्ति निबन्ध प्रतियोगिता में प्रवेश पायेगा। प्रत्येक स्पर्द्धा जो प्रदूषणयुक्त लेख लिखता है वह ' कीज दू सकमेंस ' पारितोषिक पाएगा।

निबन्धके विषय-प्रजावृद्धि से सम्बन्धित किसी प्रसङ्ग पर निबन्ध लिखा जा सकता है। सभी सम्बन्धित प्रसङ्ग अनुक्रम ग्राह्य होंगे जिससे तरुण विशेषज्ञ प्रजावृद्धि पर अपने विशेष क्षेत्र में लिख सकें।

विजेता निबन्धके लिए योग्यता-पारितोषिक विजय सम्बन्धी निबन्ध कागज के केवल एकही ओर टाईप किया हुआ तीन सहस्र शब्दों से अधिक होना चाहिए। यह हिन्दी अथवा अंग्रेजी में लिखा जा सकता है। दो टाईप की हुई प्रतियाँ प्रतिवर्ष ३० मई तक समर्पित करनी चाहिए। विजय सम्बन्धी लेख विजेता के हस्ताक्षरयुक्त प्रजा वृद्धि निबन्ध की पुस्तकों के प्रकाशनार्थ द्वातरूप में भेजना चाहिए। यह आदेश विजेताकी कृतिस्वाम्य (कॉपी राईट) में कोई हानि नहीं करेगा।

GOOD PARENTS GROUP POPULATION ESSAY CONTEST

233 Model Town Jullundur City India.

You can win because the facts are now available at libraries. You can win because your ability is now the best ever.

You can easily win the **Population Essay Contest**-Less than three dozen Contestants entered each year since 1944. They received hundreds of rupees in prizes plus promotions in their careers.

**ENTER THE CONTEST TO-DAY
WRITE NOW**

Eligibility of Contestants-Any person born within the borders of India shall be eligible to enter the Essay Contest. Every Contestant that writes an eligible Essay shall be awarded **KEYS TO SUCCESS**.

Subject of Essay-The Essays may be written on any topics related to population. All related topics are eligible in order that young specialists may write in their particular fields bearing on population.

Qualifications for the Winning Essays-The Prize Winning Essay must be more than three thousand words typewritten on one side of the paper only. It may be written in Hindi or English. Two typed copies should be submitted by May 30 each year. A copy of the winning Essay shall be sent to the donor with signed permission from the winner to publish

it in a Book of Essays on Population. This permit shall not impair any copyright of the winner.

पारितोषिक का आधार— निबंधकी निम्नांकित तीन जॉचों में निर्णय की श्रेणी होगी:--

- (१) दर्शन, दृग्विषय विचार।
- (२) स्पष्टता, सत्यता, क्षमता।
- (३) सौन्दर्य, चित्ताकर्षत्व प्रोत्साहन।

निबन्धों में तीन जॉचों के शून्य से सौ तक श्रेणियों दी जायेंगी। सबसे उच्च विषयसे युक्त निबन्ध स्पर्द्धा में विजय पायेगा। तीन सौ पूर्णांक हैं। चालू वर्षों में श्री. के. के. भाटिया, श्री. जे. पी. गर्ग और डॉ. इ. के. के. पिल्लई निर्णायक थे।

पारितोषिक की तारीख— पारितोषिककी तारीख १५ अगस्त होगी, और प्रति वर्ष १५ अगस्त और उसके बाद जब तक प्रतियोगिता प्रारम्भ रहती है।

पारितोषिक की राशि— १५ अगस्त के विजेता को सात सौ रुपए पारितोषिक मिलेंगे। पश्चात् कालिक वर्ष का पारितोषिक स्पर्द्धा और सहायता में प्रदर्शित लाभ पर निर्भर रहेगा।

प्रतियोगिता के विजयी

- १९४६ सत्यस्वरूप ... पंजाबकी जनसंख्या और स्वास्थ्य समस्या
- १९४७ ए. सी. भाटिया ... भारतकी जनसंख्या और खाद्यान्न पर्याप्तता
- १९४८ एस. ए. जोशी ... राष्ट्रकी जनसंख्या नीति उच्च जनसंख्या-प्रयोजनके साथ
- १९४९ मनमोहन मेहता ... विस्थापित जनसंख्याका पुनर्वास
- १९५० { बी. पी. मिश्र ... सन्तति निरोधक निमित्त और विरुद्ध अभियोग
आर. वी. राव ... भारतमें जनसंख्या और निरोध

Basis of Award—Judges shall grade the Essay under three tests:-

- (1) Philosophy, vision, thought.
- (2) Clearness, accuracy, force
- (3) Beauty, charm, persuasion.

Essays shall be given grades from zero to a hundred for each of the three tests. The Essay with highest total score will win the Contest. Three hundred is the perfect score. Judges in recent years were Shri K. K. Bhatia, Shri J. P. Garga and Dr. E. K. K. Pillay.

Date of Award—The date of Award shall be August 15, and August 15th of each year thereafter as long as the Contest continues.

Amount of Prize—The winner of August 15 shall be awarded SEVEN HUNDRED RUPEES. The prizes in subsequent years will depend on the interest being shown in the Contest and the support given.

WINNERS OF THE CONTESTS

- 1946 Satya Swaroop .. Punjab's Population and Health Problems.
- 1947 A. C. Bhatia ... India's Population and Food Supply.
- 1948 S. A. Joshi ... Population Policies of Nations with High Population Pressure.
- 1949 Man Mohan Mehta ... Rehabilitation of Uprooted Population.
- 1950 { B. P. Misra ... The Case for and against Family Planning
R. V. Rao ... Population & Planing in India.

१९५१ { पी. सी. गुप्त ... भारतकी जनसंख्या समस्या और उपाय
बिधि सिंह ... हमारी जनसंख्याके पिछड़े बच्चे

१९५२ श्रीमती सरस्वती ... प्रजातंत्रीय सुवर्णित संकट और रेंना सन्तति-निरोध

१९५३ { पी. एल. चोपड़ा ... भारतीय जनसंख्या और कौटुम्बिक नियोजन
पन. के. दास ... सन्तति-निरोध और भारतीय जनसंख्या समस्या

१९५४ आशीश बोस ... भारतमें जनसंख्याकी परेशानी

१९५५ { जे. पार्थ सारथी ... पारिवारिक योजना-क्यों और कैसे ? (हिन्दीमें)
जे. एन. सहाय ... फूल अथवा घासपात-प्रारम्भिक और पी. एल. त्रेहन रोक, हानिकर भय, और सन्तति निरोधके विरुद्ध मानसिक रोक।

१९५६ विजय केकरे सन्तति-निरोध और राष्ट्रीय कल्याण

१९ आप सुगमतासे प्रजावृद्धि निबन्धस्पर्द्धा में विजयी हो सकते हैं।

इनमें क समालोचना सम्बन्धी विश्लेषण—विजित निबन्ध देखा 'मैसूर इकोनॉमिक रिव्यू' (अक्टूबर, १९५३), लि. ३९, सं. १०, पृष्ठ १२-१४; (मार्च, १९५४), जि. ४०, सं. ३, पृष्ठ १०-१३; (जून, १९५४), जि. ४०, सं. ६, पृष्ठ १३-१६; (नवम्बर १९५४), जि. ४०, सं. ९ पृष्ठ १३-१४, (मई १९५५), जि. ४१, सं. ५, पृष्ठ ९-१२; (अगस्त १९५५), पृष्ठ २६-२८-३३, (नवम्बर १९५५), पृष्ठ ४-५; (मार्च-अप्रैल १९५६), पृ. १०-१४, (नव. १९५६) पृ. ३-६.

प्रसंग :—

निम्नांकित विषय अनेक स्वीकारयोग्यके कुछ उदाहरणों में केवल हैं :—

१. जनसंख्या प्रयोजनकी प्रकृति और विस्तार.

२. शिशु-मरणशीलता जैसे जनसंख्या-प्रयोजनकी एक सूची

1951 { P. C. Gupta ... India's Population Problem and a Way Out.
Bidhi Singh ... Backward Children of Our Population.

1952 Mrs. Saraswati Raina ... Demographic Crisis and Family Planning.

1953 { P. L. Chopra ... Bhartiya Jan-sankhya aur Kautumbik Niyojana.-
N.K.Das... Family Planning and Indian Population Problems.

1954 Ashish Bose ... The Population Puzzle in India.

1955 { J. Parthasarathi ... Parivarik Yojna Kiyannaur Kaise. (in Hindi)
J. N. Sahai ... Flowers or Weeds-Primitive Inhibitions.
P. L. Trehan ... Phobias and Mental Blocks against Family Planning.

1956 Vijya Kekre ... Family Planning and National Welfare.

19 YOU CAN EASILY WIN THE POPULATION ESSAY CONTEST

For critical analysis of Prize-Winning Essays see. The Mysore Economic Review (Oct., 1953) Vol. 39, No. 10 pp. 12-14; (Mar., 1954). Vol. 40, No. 3, pp. 10-13; (June, 1954). Vol. 40, No. 6, pp. 13-16; (Nov, 1954) Vol. 40, No. 11, pp. 13, 14; (May, 1955), Vol. 41, No. 5, pp. 9-12; (Aug 1955), pp. 26-28, 33; (Nov. 1955), pp. 4-7; (Mar.-Apr., 1956), pp. 10-14; (Nov., 1956), pp. 2-6.

TOPICS:—

The following topics are only a few examples of the many acceptable:—

1. The nature and measurement of population pressure.
2. Child mortality as an index of population pressure.

- ३ शिक्षा और उर्वर पनके बीचमें सम्बन्ध
४. चित्रपटकी उपयोगिता, शृंखला-शिक्षा, प्रारम्भिक चित्र, दृष्टिसंधी सहायक पुस्तकें, और शिक्षित तरुण व्यक्तियोंमें सहकारी पुस्तकालय ।
५. मातृत्व-पितृत्व की शिक्षा पर आर्थिक प्रभाव, बच्चों के उत्थान के मूल्य पर मुद्राबचत, माता-पिताकी शक्ति के अङ्गार सन्तति-निरोध ।
६. जीवनके प्रबल उद्योग का उत्सव
७. उन माता-पिताओं के मामलों का अध्ययन जो दरिद्रता से उन्नति कर के अच्छे बने हैं ।
८. उन परिवारों के मामलों का अध्ययन, जिनके सभी बच्चे जीवित हैं ।
९. बृहत् परिवार का जीवन स्तर
१०. पुनर्जनन पर बृहत् परिवार का प्रभाव
- ११ एक देशके ग्राम में मातृत्व पितृत्व के स्तरको कैसे उठाया जाय ।
- १२ कर्तव्यभ्रष्ट माता पिता, शराबी माता पिता, चंचल चित्त माता पिता और अन्य उपस्तरिय माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार हो ?
- (१३) मानव जाति की बृहत् उन्नति के विरोधमें उपस्तरिय मातृत्व पितृत्व कैसे टिकती है ?
- (१४) शिशुकल्याण और आयोजित मातृत्व पितृत्व
- (१५) शिशु-मरणशीलता के विषयमें महात्मा गांधी की शिक्षा
- (१६) शिशु मरणशीलता का राष्ट्रीय मूल्य
- (१७) अपने बच्चेके जीवनको कैसे बचाया जाय ?
- (१८) बचपन के प्राणघातक रोगों के आरोग्य और इकावट
- (१९) पचास वर्ष के पूर्व मृत्यु का न्हास और इकावट
- (२०) भारतीय सरकार के जन स्वास्थ्य का लेख पत्र
3. The relation between education and fertility.
4. Use of cinema, chain, teaching picture primers, visual-aid books, and cooperative libraries in educating young people.
5. Economic effects of education for parenthood, saving money toward the costs of raising children, and family planning according to the ability of parents.
6. Functions of the struggle for existence.
7. Case studies of parents that have risen from poverty and made good.
8. Case studies of families, all of whose children are living.
9. Standards of living of large families.
10. Effect of large families on the net reproduction rate.
11. How to raise the standard of parenthood in a country village.
12. How to deal with delinquent parents, alcoholic parents, feeble minded parents, and other sub-standard parents.
13. Why substandard parenthood continues in spite of the great progress of mankind.
14. Child welfare and planned parenthood.
15. Mahatma Gandhi's teaching about child mortality.
16. National cost of child mortality.
17. How to save the life of your baby.
18. The cure and prevention of fatal diseases of childhood.
19. Reduction and prevention of death before age of fifty.
20. Public health record- of the Government of India.

- (२१) भारतमें सन्तति निरोध पर हस्त विज्ञापनक का क्रय-विक्रय कैसे करना ?
- (२२) सन्तति-निरोध सेवा की व्यवस्था और शल्य-कर्म ।
- (२३) ब्राह्मण और स्वामी के मध्य पारिवारिक का माप ।
- (२४) सन्तति निरोध के विरुद्ध प्रारम्भिक रोक हानिकार भय और मानसिक रोक ।
- (२५) दरिद्रद्वारा सन्तति निरोधके लिए राजनैतिक, धार्मिक और अदभुत कर्म का रोक ।
- (२६) दरिद्रों के लिए सन्तति निरोध कैसे विक्रय किया जाय ?
- (२७) स्वास्थ्य के लिए शिशु प्रसारकी प्राकृतिक पद्धति ।
- (२८) नैतिक आधार अथवा तालबद्ध विनियम, नैतिक नियंत्रण, गर्भ-निरोध अथवा जन्म निरोध, जाति आरोग्य और मध्यचक्र संयम ।
- (२९) गर्भाधानके पूर्व पुरुष अथवा स्त्री के धातुरोग के विच्छेद द्वारा पुत्र कैसे प्राप्त हो ?
- (३०) शल्यकर्म प्रसवके बाद मैथुन से कैसे पुत्र प्राप्त हो ।
- (३१) अन्तिक रोक मनोवैज्ञानिक पक्षपात, तरंगित विरोध, और विवेकहित सम्बन्धी-जनसंख्या ।
- (३२) क्रमिक भोग-विलास कर पारिवारिक भत्ता के लिए देना ।
- (३३) कम किराये के गृह-निर्माणार्थ क्रमिक सम्पत्ति कर ।
- (३४) सन्तति निरोध द्वारा दरिद्र वस्ती की स्वच्छता ।
- (३५) दुर्भिक्ष के विरुद्ध निर्जलीकरण और खाद्यान्न का भण्डार का संरक्षण ।
21. How to market a pamphlet on family planning in India.
22. Organization and operation of a family planning service.
23. Family size among the Brahmins and Swamies.
24. Primitive inhibitions, phobias, and mental blocks against family planning.
25. Political, religious, and exploitive barriers to family planning by the poor.
26. How to sell family planning to the poor.
27. Natural methods of spacing for health.
28. Ethical basis of rhythmic regulation, moral restraint; contraception or birth control, sex hygiene, and midcycle abstinence.
29. How to have a son by separating male or female spermatozoa before insemination (AIHBOY).
30. How to have a son by coitus the day after ovulation.
31. Psychiatric barriers, psychological prejudices, emotional conflicts and irrationalities concerning population.
32. A graduated luxury tax to pay family allowances.
33. A graduated wealth tax to build low-rent homes.
34. Slum clearance by family planning.
35. Dehydration and storage of foods for reserves against famine.

- (३६) जलतत्व ज्ञानयुक्त लकड़ी के बुरादेसे पशुओं के खाद्यका उत्पादन, माग, और नौसादरीय नमक । 36. Production of cattle feed from hydrolyzed sawdust, yeast, and ammonium salts.
- (३७) खाद्य के आलोक संयोग में परमाणु शक्ति का व्यवहार । 37. Use of atomic energy in Photo-synthesis of food.
- (३८) सामुद्रिक घासपात में प्रोटीन कैसे उत्पन्न हो । 38. How to grow protein in seaweed.
- (३९) उत्पादन द्वारा गूदा-कारखाने के रूपान्तर जैसे रसोई में चर्बी में अधिक तैल और अन्य भोजन । 39. Conversion of pulp mill by products such as tall oil into cooking fats and other foods.
- (४०) सस्ते संयोगात्मक खाद्यान्न का उत्पादन । 40. The manufacture of cheap synthetic food.
- (४१) विस्थापित जनसंख्या के पुनर्वास । 41. Rehabilitation of uprooted population.

स्पर्द्धाका तात्पर्य स्पर्द्धासे भारतकी जनसंख्या के मैत्री-मिलाप सुदृढ़ होगा । स्पर्द्धा पुस्तकालयों में जनसंख्या के हित में सहायता करेगा । स्पर्द्धा जनसंख्या के स्वास्थ्य और शिक्षा में उन्नति में उत्साह बढ़ायेगा । स्पर्द्धा तरुण नेताओं के विचार को आदर करेगा जो जनसंख्या की समस्या के साथ व्यवहार करने में अपनी योग्यता को प्रदर्शित करते हैं । स्पर्द्धा तरुण लोगों की जनसंख्या के विषयमें स्वतन्त्र वक्तव्य के लिये एक आह्वानसंयोग को प्रदान करेगा । स्पर्द्धा शिष्ट, लुढ़कनेवाले बच्चे, बच्चोंके जीवन रक्षार्थ पथ प्रदर्शन करेगा ।

कृपया स्पर्द्धा में प्रवेशार्थ अपनी इच्छा मंत्री को सूचित करें जिससे वे कोई नवीन विकास आपको सूचित कर सकें ।

Purpose of the Contest—The Contest will deepen the friendship uniting the population of India. The Contest will help interest the population in libraries. The Contest will encourage improvement in the education and health of the population. The Contest will honour young leaders of thought who show ability to deal with the problems of population. The Contest will give young people a challenging opportunity for freedom of speech on the subjects of population. The Contest will lead to saving the lives of infants, toddlers, and children.

Please notify the Secretary of your intention to enter the Contest so that he may inform you of any new developments.

सन्तराम भाटिया
मंत्री व सम्पादक
इंण्डियन लायब्रेरियन
२३३ मॉडल टाउन
जुल्लुन्दर सिटी.

Santram Bhatia
Secretary & Editor
THE INDIAN LIBRARIAN
233 Model Town,
JULLUNDUR CITY.

महात्मा गांधी स्मृति पारितोषिक उपार्जन करो

EARN THE MAHATMA

GANDHI MEMORIAL AWARD

एक परिवार परामर्श दाता जैसा स्वयंसेवक बनो

Volunteer As a Family Consultant

उत्तम माता पिता समाज की सहायता करो बढ़ाओ

HELP GROW

Good Parents Group
Family Consultants.

परिवार-परामर्शदाता * पारिवारिक सेवा * पारिवारिक
स्वास्थ्य * पारिवारिक-सम्पत्ति आदि में समता का वाद *

Family Service, Family Health,
Family Solidarity

उत्तम माता-पिता को सर्वत्र विश्वमें स्वयंसेवक सहयोग
के साथ आदर करना ।

Honouring Good Parents through-
out the World with Volunteer
Co-operation.

जो व्यक्ति निःशुल्क परामर्श की इच्छा करते हों उनसे
प्रार्थना की जाती है कि वे कृपया लिखें अथवा प्रतिनिधिको
बुलावें । जो व्यक्ति प्रतिनिधि होने में इच्छुक है वेभी
यत्र व्यवहार करें । प्रतिनिधि के नाम और पते के लिए
अपने निकटस्थ एक पारिवारिक-परामर्शदाता को कृपया
लिखें ।

Persons desiring a free consulta-
tion are requested to please write or
call on a representative. Persons
interested in becoming a representative
are also invited to communicate. For
the name and address of the repre-
sentative nearest to you, please write
to one of the Consultants.

अपने उत्तम माता पिता समाज को प्रदान करो ।

GIVE TO YOUR
GOOD PARENTS GROUP

THE VEDIC DIGEST is a high class monthly magazine devoted to literary scientific, Philosophical & religious matters trying to give the people facts concerning VEDIC RELIGION and General knowledge. The VEDIC DIGEST is not an ordinary undertaking for business profit, it is some thing having a deep significance in relation to our National life, our Vedic Religion & so intrinsically useful and profitable to one and all who care to read it. Annual Subscription Rs. 5/-only Foreign Rs. 10/- All literary communications, books for review & exchange Addressed to Pandit Shanti Priyaji Vedic Digest Office P. O. Box 46 BARODA (India)

For Chinese Magazines published in English & Hindi Write to
PANDIT & Co. P. O. Box 46 Baroda.

Technical Books

By S. D. Vidyarthi B Sc. (Tech.)

A. H. B. T. I.

PRODUCTIONS OF VEGETABLE OILS

Fully illustrated over 300 Pages

Price Rs. 20 Postage 1-20 n. p.

CONTENTS

- 1 Introduction
 - 2 Composition and Properties of Vegetable Oils
 - 3 Important Oil Seeds
 - 4 Conveying Equipments
 - 5 Seed Clearing Machines
 - 6 Preparatory Treatment of Oil Seeds
 - 7 Cooking Oil Seeds
 - 8 Production of Oils
 - 9 Screw Presses and Ghanees
 - 10 Expellers
 - 11 Filter pressure
 - 12 Industrial Uses of Oils
 - 13 Factory Planning
 - 14 Lay Out of Oil Mills
 - 15 Routine Systems
 - 16 Oil Yield & Output
 - 17 Cost of Production
 - 18 Storage of Raw Materials
 - 19 Characteristics of Imported Oils and Fats Appendices Statistics etc.
- LINSEED OIL & ITS PRODUCTS
Rs. 3 Postage 61 nps.
No V. P. P.

JAIDEVA BROS. P. B. 46
Baroda-1 India

पुस्तक विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों का एक मात्र मासिक पत्र वा० मू० १)

“ साहित्य प्रचारक ”

हिन्दी अंग्रेजी में ९ वर्षों से नियमित प्रकाशित होनेवाला मासिक अपने ढंग का अनूठा है।

विशेषताएं

- * पुस्तकालयों को मुफ्त दिया जाता है।
- * पुस्तक प्रवृत्ति का सर्व प्रथम अपने ढंग का अकेला मासिक प्रति मास सूचना प्राप्त होने पर नवीन पुस्तकों का व्योरा छापता है।
- विज्ञापन का सर्वोत्तम सस्ता साधन विज्ञापन छपाई नकद न देकर किसी भी रूपमें स्वीकार की जाती है। पुस्तकें, परिवर्तन इत्यादि में।
- यूरोप जर्मनी आस्ट्रिया, इंग्लैण्ड, अमेरिका, जापान, चीन आस्ट्रेलिया, एशिया सब जगह जाता है।

साहित्य प्रचारक पो. बो. ४६, बड़ोदा.

SOVIET WEEKLY

The only illustrated weekly Newspaper about the U. S. S. R.

Reports discussions & features on SPORT, TRAVEL & other topics of general interest. Children's corner Chess column.

SPECIAL REPORTS ON YOUTH FESTIVAL.

Fully illustrated every Thursday
3d. Rs. 10 Per annum. Specimen Free for postage,
Bookseller Office. P. O. Box. 46.

BARODA.

